मूल्य 30/- रुपये मात्र



मासिक

अरण्य वाणी

RNI Title Code : JHAHIN00984

वर्ष : 01 अंक : 01 मार्च : 2021

संपादक : विनोद सागर



अरण्य वाणी

(साहित्य, कला एवं संस्कृति की मासिक पत्रिका)

मार्गदर्शक	
कुंदन कुमार	शिव शंकर प्रसाद
सलाहकार संपादक	
डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'	श्रीधर प्रसाद द्विवेदी
संपादक	
विनोद सागर	
उप संपादक	
विपिन बिहारी	मीना गोण्डे
प्रबंध संपादक	
डॉ. राम किंकर सिन्हा	डॉ. गोपाल 'निर्दोष'
संपादन सहयोग	
केदारनाथ 'शब्द मसीहा'	वफ़ा फ़राज
पूजा दीपांकर	गुलाम सरवर हाशमी
ब्यूरो चीफ व विज्ञापन प्रबंधक	
ललन प्रजापति (पलामू)	नारद कुमार प्रजापति (गढ़वा)
संवाददाता	
उत्तम कुमार (हुसैनाबाद)	पवन कु. सिंह (हुसैनाबाद)
विजय प्रजापति (हरिहरगंज)	आरती कुमारी (मेदिनीनगर)
संजीत कुमार (पांकी)	सत्येंद्र कुमार (चैनपुर)

विधि सलाहकार
चंद्रेश्वर प्रसाद सिन्हा

आवरण व आंतरिक साज-सज्जा
कुश कुमार

संरक्षक
अविनाश देव, शेर अली, सुहैल ख़ाँ (रीडर), हरिवंश प्रभात, मो. नासिर, नीरज राजयोगी, अजीत कुमार अग्रवाल एवं रवि प्रकाश।

मुद्रक व प्रकाशक
विनोद सागर द्वारा सागर प्रकाशन, जपला (हुसैनाबाद) से मुद्रित तथा छत्तरपुर रोड, जपला (हुसैनाबाद), पलामू (झारखंड) से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
सागर निवास, कुम्हार टोली, जपला,
पलामू, झारखंड-822116
वार्तासूत्र :- 09470556500, 09905566775
ई-मेल :- aranyavani2020@gmail.com

विषय-सूची

01.	संपादकीय	04
02.	कहानी	05-08
03.	साक्षात्कार	09-10
04.	आलेख	11-12
05.	कविता	12
06.	ग़ज़ल	12
07.	कहानी	13-15
08.	ख़बर	16
09.	कविताएँ	16-17
10.	लघुकथाएँ	18
11.	आलेख	19-21
12.	आस्था	21
13.	कविताएँ	22
14.	आलेख	23-24
15.	कविता	24
16.	लघुकथा	24
17.	कहानी	25-27
18.	संस्मरण	28
19.	ग़ज़ल	28
20.	आलेख	29
21.	कहानी	30-31
22.	कविता	31
23.	आलेख	32
24.	कविता	32
25.	ख़बरें	33
26.	पहल	34



विनोद सागर
(संपादक)

``आशा करते हैं कि हम वैश्विक महामारी कोरोना एवं उत्तराखण्ड त्रासदी से सबक लेते हुए प्रकृति की सुरक्षा के लिए संकल्प लेंगे एवं प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करेंगे।''



संपादकीय...

प्रिय स्नेहीजन,

सादर नमन।

मासिक पत्रिका 'अरण्य वाणी', मार्च-2021 का 'परीक्ष्यमाण अंक' आपके हाथों में है। हमें पूर्ण विश्वास है समाज के विविध आयामों को आत्मसात् किये यह अंक आपको बेहद पसंद आयेगा। आज हम सब वैश्विक महामारी कोरोना से निजात पाने के क़गार पर हैं और यह सब हमारी सरकार, स्वास्थ्य विभाग, प्रशासन, सफ़ाईकर्मी तथा हमारे अपने अनुशासन के कारण संभव हो सका है। निःसन्देह हम भारतीयों ने विश्व के अन्य देशों के मुक़ाबले कोरोना का डटकर मुक़ाबला किया। 2020 में सम्पूर्ण भारत में लॉकडाउन की घोषणा हुई, जिसके कारण हम सबके समक्ष अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं और हममें से न जाने कितनों ने इस कोरोना काल में अपनों को खो दिया, वहीं कितने ही लोग बेघर हो गये और न जाने कितनों ने रोज़गार से हाथ धो दिया, पर हम सभी ने इन विकट परिस्थितियों का डटकर सामना किया और आज उसी का परिणाम है कि हम अनलॉक में सुकून की साँस ले पा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भारत सरकार द्वारा कृषि बिल के पारित होने से आहत हुए किसान विगत कई माह से कृषि बिल के विरोध में अनशन पर जमे हुए हैं, जो कि हमारे इस कृषि प्रधान देश के लिए बहुत ही दुःखद बात है। ऐसा नहीं है कि सरकार ने किसानों से बात करने की पहल नहीं की, पर विपक्ष इसे मौक़े पर अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंक रहा है। दूसरी ओर सरकार अपनी कृषि बिल वाली बातों पर अटल है, जिसके कारण किसान बीच में पिस रहे हैं। अपने हक़ के लिए सड़कों पर अनशन कर अपनी लड़ाई लड़ रहे किसानों के लिए ये पंक्तियाँ बिल्कुल सटीक बैठती हैं :-

"कहाँ छुपा के रख दूँ मैं अपने हिस्से की शराफ़त,
जिधर भी देखता हूँ उधर बेईमान खड़े हैं।
क्या ख़ूब तरक़्क़ी कर रहा है अब देश देखिए,
खेतों में बिल्डर और सड़कों पर किसान खड़े हैं।।"

ऐसे में सरकार और विपक्ष दोनों को चाहिए कि किसानों के साथ बैठकर उनके मसले को सुनें और उनके लिए कोई ठोस हल निकालें, तभी जाकर हमारे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सकता है।

इस साल फरवरी माह के शुरूआत में उत्तराखण्ड के चमोली में सात साल बाद एक बार फिर क़ुदरत का क़हर टूटा है। ग्लेशियर फटने से भारी तबाही हुई है। चमोली के रेणी गाँव के पास ग्लेशियर टूटने से 150 से ज़्यादा लोग बह गए। ये सभी लोग ऋषि गंगा पावर प्रोजेक्ट में काम कर थे। धौली गंगा नदी में अचानक जलस्तर बढ़ने से तेज बहाव के कारण इन लोगों के लापता होने की आशंका है। इतना ही नहीं, कई पुल भी टूट गये हैं और कई गाँवों का सम्पर्क भी टूट गया है। अतः हमें इस प्राकृतिक आपदाओं से यह सबक लेने की ज़रूरत है कि हमें अपने निज़ी स्वार्थ के लिए प्राकृतिक सम्पदा का अधिकाधिक दोहन नहीं करना चाहिए, वरना इन नदी, जंगल व पहाड़ के जैसे ही हम भी आने वाले दिनों में अपना अस्तित्व खो देंगे। आशा करते हैं कि हम वैश्विक महामारी कोरोना एवं उत्तराखण्ड त्रासदी से सबक लेते हुए प्रकृति की सुरक्षा के लिए संकल्प लेंगे एवं प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करेंगे।

'अरण्य वाणी' का यह 'परीक्ष्यमाण अंक' कैसा लगा और हम इस अंक की प्रस्तुति एवं उद्देश्यों में कहाँ तक सफल हो सके हैं, इसका मूल्यांकन आप ही कर सकते हैं। हम यह उम्मीद करते हैं कि आप अपनी पाठकीय प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायेंगे, ताकि हम 'अरण्य वाणी' के अगले अंक को और बेहतर बना सकें।

विनोद सागर
संपादक

कचोट

बुझावन का ब्याह ओल्ती के नीचे हुआ था। दो अभिभावकों में सहमति हुई। बुझावन गए थे पिपरी के गाँव एक दर्ज़न लोगों के साथ, जिनमें उनके पिता भी थे मेवा। जब ब्याह का समय आया तो पिपरी को पहना–ओढ़ाकर ओल्ती के नीचे बिठा दिया गया। घर की जनानियाँ उसे घेरे खड़ी थीं। बुझावन के हाथ में सिंदूर की डिबिया थी, जिसे वे अपने घर से लाए थे। पिपरी की माँ ने उसका माँग उघाड़ा था और बुझावन ने चुटकी से पिपरी के माँग में सिंदूर भर दिया था और दोनों का ब्याह हो गया था। न कोई ब्राह्मण, न कोई पुरोहित। न पोथी, न पतरा, न कोई शुभ मुहूर्त। दोनों घरवालों ने दिन तय किया था सुविधानुसार।

दलितों में ब्याह ऐसे ही होता था। ये समय देश में संविधन लागू होने के आस–पास का था। दलितों के लिए कोई शुभ मुहूर्त नहीं होता था। न कोई मंदिर था, न कोई शिवाला उनके लिए। कोई देवता भी नहीं था। वे देवताविहीन थे। उनका कोई पुरोहित भी नहीं होता था।

ब्राह्मण उनके नाम से ही नाक–भौं सिकोड़ता था।

बुझावन की ज़िंदगी कट रही थी किसी तरह। ज़िंदगी के गुज़र जाने में ही उनकी खुशी थी। उन्हें मान–अपमान की कोई चिंता नहीं थी। जैसे सब प्रकृति से तय था। वे इतना नहीं समझते थे, उनके साथ जो हो रहा था, वह मानव निर्मित है, वे अछूत ही हैं।

बुझावन पढ़े–लिखे नहीं थे। जब देश में संविधान लागू हुआ तो आरक्षण की सुविधा मिली दलितों को। उसी के चलते उन्हें एक सरकारी दफ़्तर में जमादार की नौकरी मिल गई। नौकरी मिली तो उनके घर का दलिदर ही दूर हो गया। घर में नियमित एक मुश्त पैसे आने लगे। दुनियादारी उनकी आँखों से गुज़रने लगी। वे अपना रहन–सहन सुधारने लगे, पिपरी की देह पर करीने से कपड़े दिखाई देने लगे, लेकिन वे ये नहीं जान रहे थे कि उनके साथ ऐसा हुआ तो क्यों हुआ? दफ़्तर में जमादार हुए तो ये किसकी देन है?

पैसे आने लगे तो बुझावन को सपने भी आने लगे, जैसे दबी–कुचली क़ौम देखती है थोड़ी–सी सुविधा पा लेने के बाद। पैसे उतने तो नहीं होते थे, जिससे कोई बड़ा काम कर सकते थे वे, लेकिन छोटी–सी आय में भी उनकी सोच बड़ी होती हुई दिख रही थी।

उनके दो बेटे और दो बेटियाँ हुईं। बेटियों को पढ़ाने में उन्होंने उतना ध्यान नहीं दिया। उन्हें न पढ़ाने के पीछे यही



धारणा काम कर रही थी, कि बेटियाँ तो पराया धन होती हैं, लेकिन बेटों को पढ़ाने में कोई कोताही नहीं की। दोनों में उन्होंने पूरी ताक़त झोंक दी थी। रामावतार और चन्द्रिका उनकी उम्मीद की कसौटी पर खरे उतर रहे थे। दोनों ने बुझावन को रत्ती भर भी तंग नहीं किया। बुझावन एक काम अभी से ही करते जा रहे थे, "मेरे दोनों बेटे बड़े आदमी बनेंगे।" दोनों की वे ऊँच–से–ऊँच शिक्षा के आकांक्षी थे।

इसी दरम्यान बुझावन के घर में एक चीज़ और हुई थी। घर में विभिन्न तरह के देवताओं का आगमन क्रमशः होने लगा था। पिपरी ये मानने लगी कि उसके घर में जो हो रहा है...यदि उसके बेटे आज पढ़ रहे हैं तो ऐसा देवताओं के आशीर्वाद से संभव हो रहा है। बुझावन के समय तो घर में न कोई देवता था, न किसी देवता का नाम था। देवताओं के नाम पर पिपरी ने व्रत–उपवास करना शुरू कर दिया था। उस समय वह पवित्रता–अपवित्रता का ख़्याल कुछ ज़्यादा ही रखती थी।

रामावतार और चन्द्रिका भी पिपरी के साथ हो गए थे। जैसे–जैसे उनकी उम्र बढ़ती जा रही थी और शिक्षा के क्षेत्र में उनके क़दम निकलते जा रहे थे, उनकी आस्था की गहराई पाताल छूती जा रही थी। उनके क़दम आगे निकलने में असल योगदान किसका था, वे अभी तक अनिभिज्ञ थे।

दोनों जब कॉलेज में दाख़िल हुए, तब कहीं उन्हें बाबा साहेब के बारे में पता हुआ, लेकिन गहरे तौर पर नहीं वे इतना ही जान पा रहे थे कि बाबा साहेब भारतीय संविधान के रचयिता थे और उन्होंने लड़–झगड़कर दलितों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की थी। प्रभु वर्ग नहीं चाहता था कि दलितों को आरक्षण की सुविधा दी जाए। वे अकेले शख़्स थे कि दलितों के कल्याण के लिए ऐसा किया, लेकिन इतना जानने के बाद भी दोनों मान रहे थे कि जो भी उनके साथ हो रहा है, वे सब देवताओं की वज़ह से हो रहा है। वे तो इतना तक सोच रहे थे कि पूर्वजन्म में किए गए अच्छे कर्म का नतीज़ा है उनका वर्तमान।

घर में भक्ति की धारा प्रवाहित होने लगी थी अत्यंत शुद्धता के साथ। बुझावन की दिलचस्पी पूजा–पाठों में बिल्कुल नहीं थी। वे इतना भी नहीं सोचते थे कि पूर्व जन्म के अच्छे कर्म–से ही उनका वर्तमान सुखमय हुआ है। जब पिपरी उन्हें साथ करती थी अपने अनुष्ठानों में तो वे मना भी नहीं करते थे। उस वक़्त उनकी आँखें मूँद जाती थीं। हाथ जुड़ जाते थे। आँखें मूँदने पर वे क्या सोचते थे, उन्हें भी पता नहीं होता था और

किस देवता के लिए हाथ जोड़ते थे वे, ये भी नहीं जानते थे।

रामावतार और चन्द्रिका जितना पढ़ सकते थे, पढ़ गए। बेरोज़गारी का दंश उन्होंने अधिक दिनों तक नहीं झेला। बहुत कम समय में ही दोनों अच्छे ओहदे पर नियुक्त हो गए। बुझावन अब भी जमादार पद पर ही काम कर रहे थे। उनकी कोई पदोन्नति नहीं हुई थी। पढ़े–लिखे तो थे नहीं कि उन्हें जमादार से जुड़े किसी ऊँचे पद पर पदोन्नति दी जाती, लेकिन इतनी कोशिश की थी कि अब वे अँगूठा नहीं लगाते थे, बल्कि अपना दस्तख़त करने लगे थे।

रामावतार का ब्याह बुझावन और पिपरी की पसंद की लड़की से हुआ, लेकिन चन्द्रिका को एक ब्राह्मण लड़की ने फाँस लिया और वह ब्राह्मण हो गया था। जब इस बात की जानकारी बुझावन को हुई तो उन्हें बहुत बुरा लगा था। क्या बिरादरी में उसके लायक लड़की ही नहीं थी? रामावतार सोचने लगा था...जो सुविधा अपने समाज की लड़की को मिलनी चाहिए, वह किसी दूसरी बिरादरी की लड़की को मिलेगी। यदि एक ब्राह्मण लड़की ने एक दलित से ब्याह किया है तो वह मामूली घर–घराने की नहीं होगी। चन्द्रिका चाहता था अपने लोगों से जुड़ा रहना, लेकिन लड़की ऐसा नहीं चाहती थी। और अंत में वह सभी से अलग–थलग हो गया था।

रामावतार के ब्याह में पुरोहित आया था। पुरोहित ने शुभ–मुहूर्त निकाला था। मुहूर्त निकालते समय पुरोहित ने ब्रह्मांड में अवस्थित ग्रहों का अपनी पोथी के सूत्रों से ख़ूब अध्ययन किया था। ग्रहों की दशा–दिशा पहचानी थी। जब जाकर शुभ मुहूर्त का दिन तय हुआ था। बुझावन और पिपरी गर्दन झुकाकर पुरोहित की बात सुनते रहे थे। उनके पीछे रामावतार भी हो लिया था। सिर्फ़ मुहूर्त निकालने में ही पुरोहित ने अच्छा–ख़ासा वसूल लिया था दोनों से और दोनों ख़ुशी–ख़ुशी वसूला गए थे। ब्याह के वक़्त तो पुरोहित के नखरे देखते ही बनते थे। उसने क्या नहीं फ़रमाइश की और उन्होंने क्या नहीं दिया।

घर में देवताओं की तादाद में वृद्धि भी होने लगी थी। व्रत और उपवास भी उसी हिसाब से बढ़ने लगे। पिपरी के साथ अब बहू भी भक्त हो गई थी। उनका विश्वास दिन प्रति दिन मज़बूत ही होता जा रहा था।

उनके घर की समृद्धि में देवताओं का ही योगदान है। सुपर्णा रामावतार की पत्नी थी तो वह भी धार्मिक रीतियों का सख़्ती से पालन करने लगा था। वह बिना धूप–अगरबत्ती किए हुए घर से बाहर निकलता ही नहीं था। उसके ललाट पर गहरा और लम्बा टीका अक्सर लगा हुआ होता। घर में बाबा साहेब की कोई चर्चा ही नहीं होती थी। सब तो देवताओं के आशीर्वाद से हुआ है, बाबा साहेब थोड़े ही देवता हैं।

बुझावन की जब मृत्यु हुई तो रामावतार ने ख़ूब पैसे उड़ाए उनके श्राद्ध के नाम पर। पुरोहित ने जो कहा, वह करता गया। उसने किसी भी कर्मकांड पर सवाल नहीं किया, ''ऐसा करने से क्या होता है?'' उसका मानना था, है तब न ख़र्च कर रहा है, सक्षम नहीं होता तो थोड़े ही ख़र्च कर पाता? उसके दरवाज़े पर एक भीड़ जमा थी। भीड़ देखकर वह मन–ही–मन लहालोट हो रहा था।

बुझावन की मृत्यु की ख़बर चन्द्रिका को भी दी गई थी, लेकिन वह नहीं आ पाया। कहा जाता है कि उसकी ब्राह्मण पत्नी ने आने से मना कर दिया था उसे और वह मान गया था।

रामावतार के दो बेटे और एक बेटी हुए। उधर चन्द्रिका के दो बेटी और एक बेटा हुए। दोनों के बच्चे सुविधाओं में पल रहे थे। चन्द्रिका के बच्चे अर्द्ध ब्राह्मण हो गए थे। उनके विचार बदले–बदले दिखते थे। उनका संबंध दलितों से बिल्कुल नहीं था। वे अपनी जात तक नहीं जानते थे।

रामावतार के बच्चे सुविधाओं के बीच पलते हुए भी दलितों के बीच थे। ये अलग बात थी कि उनमें एक कुलीनता आ गई थी। बड़े बेटे का नाम था हेमंत, छोटे का नाम प्रताप और बेटी आराध्या हो गई थी। तीनों को ख़ूब–ख़ूब पढ़ाया। उसका मानना था, यदि वह बच्चों को ऊँची शिक्षा नहीं दिलवाई तो आज के दौर में वे पिछड़ जाएँगे। पढ़ाई पूरी होते ही आराध्या का ब्याह कर दिया गया, जबकि वह छोटी थी। हेमंत का कहना था जब तक वह किसी रोज़गार से नहीं लग जाता, वह विवाह नहीं करेगा। प्रताप का सोचना भी कुछ ऐसा ही था, लेकिन हुआ ये कि आरक्षण के बावजूद भी दोनों को कहीं नौकरी नहीं मिल पा रही थी। वज़ह स्पष्ट थी। जगह कम होती थी, कम्पटीशन अधिक हो जाता था। दलितों में भी एक पर एक प्रतिभावान निकलते हुए दिख रहे थे। हेमंत और प्रताप उस कम्पटीशन में कमज़ोर पड़ जाते थे।

हेमंत समय की नब्ज़ को समझ रहा था। वह ज़माना गया कि कम पढ़े–लिखे होने पर भी दलितों को किसी तरह की नौकरी मिल जाती थी। इस समय तो ऊँची–ऊँची डिग्रियाँ वाले भी बेरोज़गारी का दंश झेल रहे थे। उसकी रूचि मीडिया में थी और वह मास कम्युनिकेशन का कोर्स करना चाहता था। रामावतार ने भी उसे मना नहीं किया था...जो कर लो, किसी रूप में तुम कमज़ोर नज़र न आओ। कोर्स पूरा करने के बाद एक निज़ी न्यूज़ चैनल से जुड़ गया भाग–दौड़कर। प्रताप सरकारी नौकरी के नाम पर अब भी निठल्ला घूम रहा था।

हेमंत ख़ूब–ख़ूब मेहनत करता। उसकी सोच थी, कोई उसके काम और निष्ठा पर अँगुली न उठाए। वह दलित है तो कोई ये न कहे कि रिजर्वेशन वाले को तो काम करना ही नहीं आता। वह अपना बेहतर–से–बेहतर देने की कोशिश में लगा रहता। शुरू के महीनों में उसे काम और मेहनत की ख़ूब–ख़ूब सराहना की गई, लेकिन जैसे–जैसे उसके जात और वर्ग का प्रसार होता गया, उसकी योग्यता संदिग्ध होती गई। वह कितना भी अच्छा करता, लेकिन उसे उलाहना सुनना ही पड़ जाता... आख़िर हो तो वही। जब उस पर तंज कसे जाते, उसे हृदय पर ज़ोर का आघात लगता, लेकिन वह विद्रोह भी नहीं कर सकता था, प्रतिरोध भी नहीं कर सकता था। वह यही समझता था...जहाँ उसने प्रतिरोध किया तो

उसे चैनल से लात मारकर निकाल दिया जाएगा। सरकारी नौकरी भी नहीं कि वह न्याय के लिए कोर्ट–कचहरी करेगा।

एक बात ज़रूर हो रही थी कि रिपोर्टिंग के दौरान हेमंत को क़िस्म–क़िस्म के लोगों से रूबरू होना पड़ जाता था। समाज से रूबरू होता, अपने क़ौम के लोगों के बीच जाता, तरह–तरह के उसे अनुभव हो रहे थे। दलितों में जो समृद्ध समझते थे, उनका चरित्र पूरी तरह से हनन हो चुका है और अपने ही लोगों के बीच अपनी कुलीनता की डींग हाँकते हुए नज़र आते हैं, जैसे वे दलितों के बीच सामंत हो गए थे। देखकर उसे कचोट होती थी। दलितों के बीच सामंती प्रवृति पनपने लगी है। इस प्रवृति का सूत्रधार कौन है? क्या समृद्धि सामंती प्रवृति को जन्म देती है? इस हिसाब से जो निर्धन हैं उनका क्या होगा? समृद्ध और निर्धन, दलितों के बीच एक खाई निश्चित तौर पर देखी जा सकती है। कई सवाल उसके ज़ेहन में फुदक रहे हैं एक शून्य की तरह। क्या दलितों के बीच इस प्रवृति के होते एकता क़ायम हो सकती है? दलितों के प्रति सवर्णों की विचारधारा परंपरावादी है। उनकी विचारधारा में ज़रा भी बदलाव नहीं आया है। वे आज भी श्रेष्ठ बने हुए हैं और ये पिछड़ा तो...इनकी विचारधारा का तो कोई ओर–छोर ही नहीं है। क्या ये सोचते हैं, दलितों के प्रति सवर्णों से भी ऊँचे स्थान पर खुद को समझते हैं, लेकिन सवर्ण भी उसे घास देने को तैयार नहीं हैं। दलितों, पिछड़ों एवं आदिवासियों के बीच समन्वय स्थापित करने में इनकी भूमिका सर्वोपरि हो सकती है, लेकिन ये चाहते ही नहीं। ऐसा नहीं कि अकेले ये कुछ कर पाएँगे अपने लिए। लगता है मुग़ालत में जीने वाली क़ौम है पिछड़ा।

बाबा साहेब हेमंत के सामने आ गए थे। वह उन्हें समझने की कोशिश में था। जब वह दलितों के बीच जाता तो उसे बाबा साहेब का ये कथन...शिक्षित...हो...संगठित हो. ..संघर्ष करो...शिद्दत से याद आता। उसे यह भी महसूस हुआ, क्या–क्या अधिकार मिले हैं संविधान से, इसकी जानकारी के अभाव में भी दलित अधिक उत्पीड़ित हो रहे हैं।

चैनल वाले हेमंत को तनख़्वाह देने में भी आना–कानी करने लगे थे। वह गिड़गिड़ाने की स्थिति में आ जाता। वह इतना भी नहीं कह पाता, जो तय हुआ है, उतने का अधिकार तो रखता ही है। उसे अब ये भी धमकियाँ मिलनी शुरू हो गई थीं दबी–ज़ुबान में...यदि वह चैनल से असंतुष्ठ है तो छोड़कर जा सकता है। वह मुड़ककर रह जाता... इतनी भी लाचारी हो सकती है, मेहनत के बाद भी? उसकी हालत साँप–छछूंदर वाली होती जा रही थी। ख़ूब–ख़ूब मेहनत भी करो और मज़दूरी के लिए गिड़गिड़ाओ भी, वह कोई फ़ैसला नहीं ले पा रहा था। क्या वह ख़ुद चैनल छोड़ सकता है? शायद दलितों को उत्पीड़ित करने का एक तरीक़ा ये भी है।

हेमंत को जब असहय होने लगा...मेहनत के बाद भी जब उसे प्रतिष्ठा नहीं मिल रही है, सिर्फ़ अपमान ही अपमान सहना पड़ रहा है...तो आख़िर में उसने फ़ैसला ले ही लिया चैनल छोड़ने का। छोड़ेगा लेकिन चुपचाप नहीं छोड़ेगा। कुछ हंगामा भी होना चाहिए और वह अपने अंतिम दिन को सी.ओ. से भिड़ गया, ''तुम्हें योग्यता चाहिए तो और कितनी योग्यता चाहिए? तुम्हारे लोगों में आख़िर है क्या, मुझमें क्या कमी है? यहाँ तो मैं बिना रिजर्वेशन आया हूँ, क्या कमी मुझमें दिखी तुम्हें? तुम्हें वही लोग अच्छा लगते हैं जो मुँह–कान से पैदा हुए हैं। मुँह से पैदा होनेवाले कैसे पैदा हुए हैं ये तुमसे बेहतर कोई नहीं जानता, मैं तो पाँव से पैदा हुआ हूँ।'' उसने और भी बड़ी–बड़ी बातें कह डाली थी सी.ओ. को।

हेमंत ने बारह साल लगातार चैनल में काम किया था। चैनल छोड़ने के बाद एक गुस्सा भरा था उसमें। एक विद्रोह की उर्वर भूमि बनी हुई थी उसके भीतर...कब उसमें विद्रोह के बीज अंकुरने लगे और फिर बड़ा पेड़ बन जाए? उसी गुस्से और विद्रोह का परिणाम हुआ कि वह एक एन.जी.ओ. से जुड़ गया जिसका काम था, दलितों के बीच संविधान की जानकारी बाँटना...उसके बारे में समझाना। संविधान में बहुत सारे आर्टिकल्स हैं जो दलित हित में हैं और जानकारी के अभाव में वे उसका लाभ नहीं ले पाते। एन.सी.ओ. उसके चैनल अनुभव का पूरा–पूरा फ़ायदा उठाने की सोच रहा था। इसी का नतीज़ा हुआ कि बहुत कम समय में उसे एक बड़ी ज़िम्मेवारी का ओहदा दे दिया गया। वह दलितों–वंचितों के पास जाता। संविधान के आर्टिकलों की व्याख्या करता। जहाँ उसे ख़बर लगती कि कहीं उत्पीड़न हुआ है तो वह फौरन वहाँ पहुँच जाता। एफ.आई.आर. करवाता। उसकी बारीक़ी से छानबीन करता। यदि मुआवज़ा लेने लायक मामला होता तो इस दिशा में सक्रिय हो जाता।

''संविधान के बारे में जानिए। बहुत कुछ आपके हित में है। नहीं जानेंगे तो लड़ेंगे कैसे?''

हेमंत को कुछ ऐसे भी शख़्स मिले, जो संविधान में ही दोष निकालते हुए दिखे। यहाँ तक कि बाबा साहेब से ख़ुद को ऊपर की चीज़ मान रहे थे। ऐसे में ही एक थे निहाल। किसी कॉलेज के प्रिंसिपल थे। उन्होंने एक किताब लिखी थी। वे अपनी किताब को श्रेष्ठ मानते थे। उन्होंने अपनी किताब में बाबा साहेब की ग़लतियाँ निकाली थीं। उनकी बक–बक सुनकर हेमंत को गुस्सा आ गया था। उसने कहा, ''चलिए, मैं आपको बाबा साहेब से ऊपर की चीज़ मान लेता हूँ, लेकिन उनसे ऊपर होने में आपका अपना क्या है, बता सकते हैं? आप तो उनका ही रिफरेंस दे रहे हैं। आप क्या, आप जैसे बहुत हैं दलितों में जो ख़ुद को ऊपर साबित करने में लगे हुए हैं। तभी तो बाबा साहेब कह गए कि उन्हें पढ़े–लिखों ने धोखा दिया। आपसे ही पूछता हूँ, जब आप नौकरी में आए तो अपना जाति प्रमाण पत्र दिया था कि नहीं दिया था? आपने दिया तो उसकी आधार–भूमि किसने तैयार की थी, बता सकते हैं? नहीं बता पाएँगे और इस पर अपना मुँह चिंचोड़ रहे हैं?'' और सच में निहाल ने अपना मुँह चिंचोड़ दिया था।

''आप लोगों के कारण ही आज दलित समाज पीछे की ओर जा रहा है और ये भी कहे देता हूँ कि यदि आप जैसे लोग अपना चाल–चरित्र नहीं बदले तो एक दिन वहीं पहुँच जाएगा समाज, जहाँ से चला था आगे।''

चैनल छोड़कर हेमंत जब घर आया तो सुपर्णा और रामावतार कह रहे थे, ''आज हम जिस जगह हैं, वह भगवान का दिया हुआ है। तुम भी कभी उनके लिए समय निकाल लिया करो।''

''मेरा कोई भगवान नहीं है। मेरे भगवान तो बाबा साहेब हैं। आप लोगों के भगवान में इतनी शक्ति नहीं कि मुझे कोई रोज़गार दे। आप किसी भगवान की कृपा से यहाँ तक नहीं पहुँचे हैं, उसी बाबा साहेब की बदौलत आए हैं, जिसे मैं मानता हूँ। इतिहास पुराना नहीं है, जब हमारे दादा होंगे, उस समय आपके भगवान कहाँ थे? जब उन्हें मंदिर की सीढ़ियों तक उन्हें जाने नहीं दिया जाता था। जब पैसे हुए, सुविधाएँ मिलीं तो आपके भगवान पैदा हो गए? आपके भगवान हैं तो प्रताप क्यों अब तक भटक रहा है? उसे चाहिए न कि उसे कोई रोज़गार दे दे, कोई नौकरी दे दे। कहाँ है आपका भगवान?''

''तुम बिल्कुल नास्तिक हो।'' रामावतार ने कहा था।

''भगवान जब हो तब न आस्तिक बना जाए।''

''तुमसे बातें करना भी मुश्किल है।'' रामावतार पीछे हट गए थे।

हेमंत कहीं सफल भी हो रहा था, कहीं असफल भी। कहीं लोग उसकी नहीं सुनते थे, कहीं लोगों की कसौटी पर वह नहीं उतरता था, लेकिन वह एक उम्मीद ज़रूर बन गया था। जहाँ वह सफल होता, उसके उत्साह का ग्राफ बढ़ जाता। जहाँ असफल होता, उसकी निराशा बढ़ जाती, लेकिन फिर वह सोचता, ऐसे कामों में सफलता–असफलता लगी ही रहती है। वहाँ वह अपनी बातें समझाने में असफल सिद्ध होता, जहाँ दलित कुछ समृद्ध होते, जहाँ पाखंड होता, जहाँ व्रत–उपवास की सात्विकता कुछ अधिक होती। वह व्रत–उपवास के कारणों पर बातें करता, पाखंड पर बात करता, लेकिन धारणा ऐसी होती कि कोई व्रत–उपवास, देवी–देवताओं के विरूद्ध सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता। तब वह खिन्न होकर कह उठता...मरो धर्म के नाम पर। देखना, यही धारणा कभी तुम्हारे जी का जंजाल बन जाएगी। फिर सोचता...आख़िर वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? उन्हें ईश्वरवादी बनाया गया है। वह अपने मिशन में क़ामयाब भी होगा, लेकिन ज़रूरत है लम्बे समय तक काम करने की। जिस तरह से उनमें धर्म का भ्रम पैदा किया गया है, उसी तरह उनके भीतर के भ्रम को तोड़ना पड़ेगा। धर्म मनुष्य जनित है, न कि प्रकृति जनित। धर्म को मनुष्य ने पैदा किया है तो मनुष्य ही उसे समाप्त करेगा और हजारों वर्ष के कोढ़ को कुछ दिनों में ठीक करना एक तरह से असंभव ही है।

एक मामले में तो हेमंत को महामहिम तक को लिखना पड़ गया था। जब बात वहाँ पहुँची तो उस पर दबाव पड़ने लगे...मामले को वापस ले लो। जिस पर भी वह देर तक अड़ा रहा था, लेकिन अंत में उसे वापस हटना पड़ा। एक फाँस भी है उसके भीतर, लेकिन शायद खुद को ज़िंदा रखने के लिए कभी–कभी ऐसे समझौते करने ही होते हैं। वह ख़ुद के लिए महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन जिनके लिए वह कुछ कर रहा है, उनके लिए वह महत्वपूर्ण है। वह अकेला नुक़सान उठा सकता है, लेकिन लोगों का नुक़सान नहीं उठा सकता।

उसे पता हुआ कि एक घोटाले में दस लोगों की सज़ा हो गई है। उसे मामला दिलचस्प लगा था। सजायाफ़्ताओं में आठ दलित थे और दो सवर्ण। सजायाफ़्ताओं के लिए वह क्या कर सकता है? वह दलित सजायाफ़्ताओं से मिलने चल दिया था। दो दिन की कोशिश के बाद ही उनसे मिलने का समय मिल पाया। आठों से उसने बात की। किस वज़ह से सज़ा मिली और उनसे जो मालूमात हुए वह चौंकानेवाला था।

दसों पर एक ही आरोप थे। जाँच–पड़ताल के बाद आरोप सही पाए गए थे, लेकिन जो फ़ैसला सुनाया गया, वह ग़ैर–बराबरी का था। दलितों को तीन–तीन वर्ष की सज़ा हुई, साथ ही, जुर्माना भी दिया गया, लेकिन सवर्णों को दो–दो साल की सज़ा हुई बिना किसी जुर्माने की, जबकि जो सम्पति ज़ब्त की गई थी, सवर्णों के पास अधिक पाई गई थी। उस हिसाब से तो सज़ा में अंतर होना चाहिए, लेकिन हुआ था उल्टा।

''आपलोगों ने अपील नहीं की है?'' हेमंत ने पूछा था।

''अपील की हुई है, लेकिन लगता नहीं कि हम बरी हो पाएँगे।''

''लेकिन ये तय मानें कि वे बरी हो जाएँगे। पूजा–पाठ तो करते ही होंगे, व्रत–उपवास तो मानते ही होंगे?''

''मानते तो हैं।''

''तब कहिए अपनी पत्नियों से कि वे तीर्थयात्रा पर जाएँ। जंगल–पहाड़ जाएँ जहाँ देवी–देवता हैं, वहाँ जाकर धूमें। मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि आप लोगों ने देवी–देवता के बल पर ही भ्रष्टाचार किया होगा, क्योंकि आप लोगों को भरोसा रहा होगा कि आपके साथ तो देवी–देवता हैं... क्या होगा। ये ही यदि आप संविधान और बाबा साहेब को मान रहे होते तो न आप भ्रष्ट होते, न भ्रष्टाचार करते और न आपके साथ ऐसा हुआ होता।''

ऐसा भी होता है, सवर्ण दलितों को आगे कर भ्रष्टाचार करते हैं या फिर उन्हें मज़बूर कर देते हैं कि वे भी लिप्त हों उनके काले कारनामों में, लेकिन ऐसी स्थिति से होशियारी भी तो बरतनी चाहिए।

हेमंत चिंतित है। जहाँ भी उसे मौक़ा मिलता है, अपनी चिंता ज़ाहिर कर देता है, ''वर्तमान हुकूमत दलितों को नुक़सान पहुँचानेवाली है और जहाँ भी मौक़ा मिल रहा है पहुँचा भी रही है। वह हर जगह अपने प्यादे को बैठा चुकी है। दलितों को यथास्थिति में पहुँचाने के लिए पुरज़ोर कोशिश हो रही है। यदि अब भी नहीं सँभला गया तो आनेवाली पीढ़ियों को दुर्दिन देखने को मिल जाएँगे जो थोड़ा समृद्ध हो चुके हैं, वे इस मुग़ालते में न रहें कि उन्हें कुछ होगा ही नहीं। वे अपना भ्रम तोड़ ही लें। उसके निशाने पर जितना वे हैं, उतना लाचार दलित नहीं हैं।''



✍ ***विपिन बिहारी***
61–बी, रेलवे कॉलोनी,
जपला, पलामू, झारखंड–822116
वार्तासूत्र :- 09334154345

बेहतर समाजसेवा के लिए सत्ता जरूरी है : टुटू सिंह

राजनीति में सक्रिय हुसैनाबाद मध्य क्षेत्र से भावी जिला परिषद सदस्य प्रत्याशी सह युवा समाजसेवी आलोक कुमार सिंह उर्फ़ टुटू सिंह का पत्रिका के संपादक (अरण्य वाणी) द्वारा लिये गये साक्षात्कार के प्रमुख अंश, जिन्हें आज के युवाओं को पढ़ना व समझना अतिआवश्यक है, ताकि वे भी राजनीति में अपनी सहभागिता दर्ज़ कराते हुए भारतीय लोकतंत्र को और सशक्त बनाने में अपनी महत्ती भूमिका सुनिश्चित कर सकें।



संपादक :– सबसे पहले आप अपना संक्षिप्त परिचय दें।

टुटू सिंह :– मेरा पूरा नाम आलोक कुमार सिंह उर्फ़ टुटू सिंह है। मेरा जन्म 05 जनवरी 1988 को झारखंड के पलामू जिला के हुसैनाबाद थानांतर्गत ग्राम डिहरी, पोस्ट महुअरी में हुआ। मेरे पिताजी का नाम श्री श्यामदेव सिंह एवं माताजी का नाम श्रीमती जनक राजदेवी है। मेरी प्राथमिक शिक्षा सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में हुई एवं मैंने मेदिनीनगर के जीएलए कॉलेज से इतिहास से ग्रेजुएशन किया है।

संपादक :– आपको अचानक अपने समाजसेवा को राजनीति में बदलने का विचार कैसे आया?

टुटू सिंह :– मैंने देखा कि राजनीति में काम करने के वृहद क्षेत्र के साथ–साथ रोज़गार के भी कई सुनहरे अवसर हैं। मैंने सैकड़ों परिवारों को रोज़गार से जोड़ने का काम किया है, वहीं अगर मैं सत्ता में आ गया तो हज़ारों परिवारों को रोज़गार से जोड़ सकूँगा और यह काम सिर्फ़ समाजसेवा से नहीं हो पाएगा। उसका क्षेत्र सीमित है। यूँ समझ सकते हैं कि सीमित क्षेत्र से आगे निकलना है तो सत्ता ज़रूरी है। मेरा राजनीति में आना लंबे विमर्श के बाद हुआ है।

संपादक :– आपने जिला परिषद सदस्य के चुनाव से ही अपना राजनीति सफ़र क्यों शुरू किया?

टुटू सिंह :– चूँकि मेरे देश भारत की पहचान गाँव की समृद्ध माटी, खेत–खलिहान, कला–संस्कृति, पर्व–त्यौहारों आदि से ही है और जब तक हम सब इन धरोहरों की रक्षा नहीं करेंगे, तब तक हम सब एक समृद्ध एवं सशक्त भारत की कल्पना नहीं कर सकते, इसलिए मैंने राजनीति का सफ़र अपने गाँव से ही शुरू किया है।

संपादक :– आपके चुनावी क्षेत्र हुसैनाबाद मध्य में कुल कितने पंचायत हैं, बताने का कष्ट करें।

टुटू सिंह :– मेरे चुनावी क्षेत्र में कुल 07 पंचायत हैं, जिनमें उर्द्ववार मंजुराहा, पोलडीह, दरुआ, बेनी कलाँ, महुअरी, पथरा एवं ऊपरी कलाँ पंचायत का नाम शामिल है।

संपादक:– आपके चुनावी क्षेत्र में किन–किन समस्याओं का अंबार लगा हुआ है और उनका निदान कैसे होगा?

टुटू सिंह :– सिर्फ़ मेरे ही नहीं, बल्कि तमाम हुसैनाबाद जिला परिषद क्षेत्र में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है। इसका जीता–जागता उदाहरण मनरेगा में लाखों ही नहीं, बल्कि करोड़ों के ग़बन का मामला तूल पकड़ा हुआ है, जिनमें जनप्रतिनिधियों एवं संबंधित पदाधिकारियों की भूमिका विवादास्पद है। जिन क्षेत्रों की जनता जागरूक है, उनकी आवाज़ पर उन क्षेत्रों में हुई भारी अनियमितता की विभागीय जाँच भी हो रही है। साथ ही ग़बन में संलिप्त लोगों पर विधि–सम्मत कार्रवाई भी की जा रही है। अब रही बात आपके सवाल की, तो मैं आपको बता दूँ कि हमारे क्षेत्र में ग़रीबी, भुखमरी, अशिक्षा, चिकित्सीय कुव्यवस्था, आवास एवं शौचालय निर्माण में अनियमितता, किसानों की खेती संबंधित समस्याएँ, वृद्धा–पेंशन, विधवा–पेंशन एवं दिव्यांग–पेंशन को ससमय देने में घोर लापरवाही, विद्यालयों की जर्जर





स्थिति, महिला सशक्तिकरण की घोर कमी आदि समेत दर्जनों ऐसी समस्याएँ हैं, जिनका समय रहते उपचार करना अतिआवश्यक है, वरना हम सब विकास के मामले में काफ़ी पीछे छूट जायेंगे। मैं चुनाव जीत गया तो इन समस्याओं का निदान समस्या विशेष अलग–अलग कमिटियों का गठन कर करूँगा, ताकि हुसैनाबाद की ग्रामीण जनता को अपनी समस्याओं के निदान के लिए यहाँ–वहाँ भटकना न पड़े। सबकी खुशहाली ही हमारे सफल कार्यकाल की मोहर होगी, यह मैं सभी लोगों से वादा करता हूँ।

संपादक :– आपके चुनावी क्षेत्र में किस पंचायत में सबसे ज़्यादा समस्याएँ हैं?

टुटू सिंह :– (हँसते हुए) हुसैनाबाद मध्य क्षेत्र अंतर्गत हर पंचायत में ही कमोबेश समस्याएँ विद्यमान हैं, उन्हें एक–दूसरे पंचायत की कुव्यवस्था या समस्या से तुलना करना बेमानी होगी।

संपादक :– क्षेत्र भ्रमण के दौरान आपके समक्ष कौन–कौन सी चुनौतियाँ आ रही हैं और आप उनका सामना कैसे कर रहे हैं?

टुटू सिंह :– क्षेत्र भ्रमण के दौरान मेरे समक्ष किसी भी तरह की कोई चुनौतियाँ नहीं आ रही हैं, बल्कि लोग अभी से ही खुलकर अपनी बातें मेरे समक्ष रख रहे हैं। साथ हीं, वे मुझे अपने क्षेत्र के कर्मशील बेटे के रूप में देखने भी लगे हैं और यही कारण है कि मुझे लोगों का भरपूर सहयोग एवं आशीर्वाद मिल रहा है।

संपादक :– अगर आपने चुनाव जीता तो आपके द्वारा किया गया सबसे पहला कार्य क्या होगा?

टुटू सिंह :– अगर मैं चुनाव जीतता हूँ तो हमारे द्वारा सबसे पहला काम महिला सशक्तिकरण एवं किसानों के सर्वांगीण विकास करने का होगा। इसके बाद मैं सिलसिलेवार तरीक़े से अन्य समस्याओं पर भी कार्य करूँगा।

संपादक :– आप अपने क्षेत्र में शिक्षा की बेहतरी के लिए क्या करेंगे?

टुटू सिंह :– मैं अपने क्षेत्र में शिक्षा की बेहतरी के लिए 'मॉडल रोल' इख़्तियार करूँगा। जहाँ जिस योग्य विद्यालय की आवश्यकता महसूस होगी, मैं वहाँ उस योग्य विद्यालय देने की योजना बनाकर उन्हें धरातल पर लाने की पुरज़ोर प्रयास करूँगा। जहाँ विद्यालय की स्थिति जर्जर होगी, वहाँ पर मैं विद्यालय की मरम्मत या पुनः भवन निर्माण करवाऊँगा। साथ–ही–साथ हरेक विद्यालय में बागबानी का कार्य करवाऊँगा। इसके अलावे विद्यालय परिसर में जलमीनार भी लगवाऊँगा।

संपादक :– आप अपने क्षेत्र में किसानों की समस्याओं के निदान के लिए क्या–क्या करेंगे?

टुटू सिंह :– मैं किसानों के हित में सबसे पहले उन्हें ससमय बीज एवं सरकारी ऋण दिलवाने का कार्य करूँगा, ताकि वे उन्नत तरीक़े से फसल की उपज कर सकें। साथ–ही–साथ, पटवन के लिए नलकूप, कुआँ, डोभा, कैनाल, तालाब आदि की भी व्यवस्था करूँगा, ताकि किसान प्रकृति की मार से उबर सकें एवं सरकारी सुविधाओं का समुचित लाभ ले सकें।

संपादक :– वृद्धा–पेंशन, विधवा–पेंशन एवं दिव्यांग–पेंशन के ससमय भुगतान हेतु आपने क्या सोचा है?

टुटू सिंह :– जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया कि समस्या विशेष के लिए युवा साथियों की अलग–अलग टीम बनाऊँगा। तत्पश्चात् मैं उन पहलुओं पर प्राथमिकता के आधार पर कार्य करूँगा। रही बात वृद्धा–पेंशन, विधवा–पेंशन एवं दिव्यांग–पेंशन की, तो मैं आपको इसके लिए अभी से आश्वस्त कर देता हूँ कि इन्हें पेंशन के लिए बार–बार सरकारी दफ़्तरों के चक्कर काटने नहीं पड़ेंगे।

संपादक :– आप अपने क्षेत्र के युवाओं एवं बेरोज़गारों के लिए कौन–कौन से प्रमुख सुकार्य करेंगे?

टुटू सिंह :– जैसा कि लोग जानते हैं कि अभी भी सैकड़ों युवा मुझसे जुड़कर अपने परिवार को इज़्जत की रोटी खिला रहे हैं। मैं आगे सत्ता में आने के बाद उनके लिए अनेक योजनाओं को धरातल पर लाऊँगा, जिनसे कि वे अपने घर पर रहकर भी अच्छी–ख़ासी कमाई कर सकेंगे, जिनमें खादी ग्रामोद्योग, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन आदि शामिल हैं। इसके अलावे युवा एवं बेरोज़गार लोग मनरेगा के तहत भी रोज़गार पा सकते हैं।

संपादक :– आप अपने क्षेत्र वासियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

टुटू सिंह :– मैं अपने क्षेत्र वासियों को संदेश नहीं, बल्कि ये आग्रह करना चाहूँगा कि इस बार आप सब हुसैनाबाद मध्य क्षेत्र के जिला परिषद सदस्य के आगामी चुनाव में अपने इस बेटे को भारी मतों से जिताकर आप अपने और अपने घर–समाज की माटी की सेवा करने का अवसर प्रदान करें, यही आप सबों से करबद्ध विनती है। जय माता रानी।

★★★★★

बिडेन, मोदी और भारत–अमेरिका संबंधों के बदलते आयाम

(अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में केवल राष्ट्रीय हित अपरिवर्तित रहते हैं। व्यक्तिगत संबंध राष्ट्रीय हितों के लिए बाधा नहीं बनते हैं, इसलिए बिडेन श्री नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रम्प के साथ संबंधों से प्रभावित नहीं होंगे। भारत वर्तमान में विश्व मंच पर एक बढ़ती हुई शक्ति है, इसलिए भारत अमेरिका की नीतियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और अमेरिका के साथ बेहतर संबंध भारत की वैश्विक स्थिति में सुधार करेंगे।)

जो बिडेन संयुक्त राज्य अमेरिका के अगले राष्ट्रपति बन गए हैं। उन्होंने रिपब्लिकन उम्मीदवार और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को हराया है। वर्तमान दुनिया में अमेरिका सबसे प्रभावशाली देश है, इसलिए अमेरिका में सत्ता परिवर्तन का दुनिया के अधिकांश देशों पर प्रभाव पड़ेगा। भारत कुछ समय के लिए अमेरिका के महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में सामने आ रहा था। अमेरिका में हाउडी मोदी और भारत में नमस्ते ट्रम्प दोनों देशों के नेताओं के बीच घनिष्ठ अंतरंगता का परिणाम थे। इस स्थिति में, अमेरिका में सत्ता परिवर्तन से भारत और अमेरिका के संबंधों के आयाम भी बदल जाएँगे।

अपने विजय भाषण में, उन्होंने एकता के एक संदेश पर ज़ोर दिया और कहा कि अब समय आ गया है कि ''अमेरिका की आत्मा को ठीक करो और पुर्नस्थापित करो।'' मैं एक राष्ट्रपति बनने की प्रतिज्ञा करता हूँ जो विभाजित नहीं करना चाहता है, बल्कि एकजुट करना चाहता है। आप सभी के लिए जिन्होंने राष्ट्रपति ट्रम्प को वोट दिया, मैं आज रात निराशा को समझता हूँ, लेकिन अब एक–दूसरे को मौक़ा दें जो बिडेन पूर्व राष्ट्रपति ओबामा के समय से भारत–अमेरिका के रणनीतिक संबंधों के पक्ष में हैं। हालाँकि ट्रम्प का भारत–प्रशांत क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित था, जहाँ भारत चीन को रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का एक महत्वपूर्ण सहयोगी बन गया, और यह संभावना है कि बिडेन भारत के एक महत्वपूर्ण सहयोगी बने रहेंगे। इसके साथ ही, अफगानिस्तान में शांति स्थापना और आतंकवाद के ख़िलाफ़ भारत और अमेरिका की नीतियों को एक ही दिशा में लागू किया जाएगा।

ओबामा और बिडेन ने अपने प्रत्येक देश और पूरे क्षेत्र में आतंकवाद से लड़ने के लिए भारत के साथ सहयोग को मज़बूत किया। 'बिडेन का मानना है कि दक्षिण एशिया में आतंकवाद के लिए कोई सहिष्णुता नहीं हो सकती है।' हालाँकि, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर प्रशासन में अपने समय के दौरान उन्होंने बहुत कुछ नहीं कहा, भारत सरकार को उम्मीद है कि जब वह सीमा पार आतंकवाद की बात करेंगे तो वह भारत–पाकिस्तान के प्रति अमेरिकी प्रशासन के दृष्टिकोण की विरासत को आगे बढ़ाएँगे। ट्रम्प प्रशासन ने ईरान के साथ परमाणु समझौते पर एकतरफ़ा प्रतिबंध लगा दिया था जो पिछले ओबामा प्रशासन के फैसले के ख़िलाफ़ था। अमेरिका और ईरान दोनों के साथ भारत के संबंध अच्छे हैं। ऐसी स्थिति में भारत के सामने एक दुविधा पैदा हो गई थी। यह संभव है कि जो बिडेन प्रशासन इस स्थिति को हल करेगा।



ट्रम्प प्रशासन में, अमेरिका विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को, मानवाधिकार आयोग जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से दूर जा रहा था। भारत वैश्विक संस्थानों के महत्व के पक्ष में है। इस स्थिति में, भारत और ट्रम्प प्रशासन की नीतियों में उलट–फेर हुआ। शायद संयुक्त राज्य अमेरिका ने जो बिडेन के प्रशासन के तहत इन वैश्विक संस्थानों के महत्व को मान्यता दी। ट्रम्प के नेतृत्व में, अमेरिका पेरिस जलवायु संधि से ख़ुद को अलग कर रहा था, जबकि भारत पर्यावरण को उन्नत करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है जो बिडेन के शासन के तहत, यह संभव है कि पेरिस संधि को यूएसए द्वारा मान्यता दी जाए। ट्रम्प प्रशासन ने भारतीय वस्तुओं पर प्रतिबंधों को अमेरिका के पक्ष में भारत–अमेरिकी व्यापार संतुलन के साथ–साथ भारत को जीएसपी श्रेणी से अलग करने के प्रयास में लगाया।

यह संभव है कि भारत फिर से बिडेन प्रशासन के तहत जीएसपी श्रेणी में शामिल हो जाए। अनिवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों की स्थिति में सुधार की संभावना है जो ट्रम्प की संरक्षणवादी नीतियों से नकारात्मक रूप से प्रभावित थे। उपराष्ट्रपति कमला हैरिस भी भारतीय मूल की हैं। अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग की रिपोर्ट ने भारत को धार्मिक उत्पीड़न का देश बताया जिसके लिए ट्रम्प प्रशासन की प्रतिक्रिया तटस्थ थी, लेकिन बिडेन प्रशासन की उपाध्यक्ष कमला हैरिस ने इसके ख़िलाफ़ अपना बयान दिया। उसी समय, ट्रम्प प्रशासन जम्मू और कश्मीर में स्थिति, लोकतंत्र के उल्लंघन, नागरिकता संशोधन अधिनियम, जाति और सांप्रदायिक हिंसा के विषय पर तटस्थ था, जबकि कमला हैरिस ने इन मुद्दों पर भारत के ख़िलाफ़

प्रतिक्रिया व्यक्त की।

2013 में भारत का दौरा करने वाले जो बिडेन ने भारत से दूसरे देशों में लोगों के प्रवास पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। चीन को रोकने के लिए बनाया जा रहा क्वाड (भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान) ट्रम्प प्रशासन की रणनीतियों का महत्वपूर्ण बिंदु था और यह इतना प्रभावी हो गया कि जर्मनी भी इसमें शामिल होने पर विचार कर रहा था, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि क्वाड बिडेन प्रशासन में भी इतना महत्व हासिल करेगा। ट्रम्प ने चुनाव प्रचार में हॉडी मोदी और नमस्ते ट्रम्प (भारत के प्रधानमंत्री और पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की घटनाओं) का इस्तेमाल किया।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में केवल राष्ट्रीय हित अपरिवर्तित रहते हैं। व्यक्तिगत संबंध राष्ट्रीय हितों के लिए बाधा नहीं बनते हैं, इसलिए बिडेन श्री नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रम्प के साथ संबंधों से प्रभावित नहीं होंगे। भारत वर्तमान में विश्व मंच पर एक बढ़ती हुई शक्ति है। इसलिए, भारत अमेरिका की नीतियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और अमेरिका के साथ बेहतर संबंध भारत की वैश्विक स्थिति में सुधार करेंगे, इसलिए दोनों देशों को एक–दूसरे की आवश्यकता है। भारत और अमेरिका के बीच बेहतर संबंध पूर्व और पश्चिम के बीच का ऐसा संबंध है जो पूरी दुनिया के लिए फ़ायदेमंद होगा।

जो बिडेन भारत का मित्र रहा है। बराक ओबामा प्रशासन में उपाध्यक्ष बनने से बहुत पहले, बिडेन ने भारत के साथ मज़बूत संबंधों की वकालत की थी। बिडेन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, सीनेट की विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष के रूप में और बाद में उपाध्यक्ष के रूप में, भारत के साथ रणनीतिक जुड़ाव को गहरा बनाने में। वास्तव में, 2006 में, अमेरिका के उपराष्ट्रपति बनने से तीन साल पहले, बिडेन ने अमेरिका–भारत संबंधों के भविष्य के लिए अपने दृष्टिकोण की घोषणा की, ''मेरा सपना है कि 2020 में, दुनिया के दो निकटतम राष्ट्र भारत होंगे'' और संयुक्त राज्य अमेरिका 2013 में मुंबई की यात्रा के दौरान एक भाषण में, श्री बिडेन ने कहा था, ''हम जिस तरह से आप एक एकल, गर्वित राष्ट्र में जातीयता, विश्वास और जीभ पिघल रहे हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं।''

पिछले 20 वर्षों में, हर अमेरिकी राष्ट्रपति–बिल क्लिंटन, जॉर्ज डब्ल्यू बुश, बराक ओबामा और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच कई मुद्दों पर मतभेद थे, लेकिन अगर कोई एक सामान्य विषय था जिस पर सभी सहमत थे तो यह था– 'भारत के साथ एक मज़बूत संबंध।' इसका मतलब यह है कि भारत के साथ बेहतर संबंधों के पक्ष में द्विदलीय समर्थन की परंपरा रही है और प्रत्येक अमेरिकी राष्ट्रपति ने पिछले दो दशकों में अपने पूर्ववर्ती से विरासत में जो हासिल किया है, उससे बेहतर बनाया है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि बिडेन परंपरा को ज़ारी नहीं रखेगा, लेकिन निश्चित रूप से, उसकी अपनी शैली और बारीकियाँ होंगी, और रिश्ते पर अपनी व्यक्तिगत मुहर लगाएगा।

इन सबसे ऊपर, श्री बिडेन की विदेश नीति को देखा जाएगा कि वह विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को, मानवाधिकार परिषद, संयुक्त कार्य योजना जैसे समझौतों सहित ट्रम्प की बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था से कितना उलट–फेर करता है। ईरान परमाणु समझौते और पेरिस जलवायु समझौते और पारंपरिक ट्रांस–अटलांटिक और ट्रांस–पैसिफिक गठबंधन से बिडेन की विदेश नीति को भी देखा जाएगा कि नियमों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए वह क्या ठोस उपाय करता है। श्री बिडेन के प्रशासन के साथ सरकार के व्यवहार की सफलता अब इस बात पर निर्भर करती है कि भारत सरकार अगले कुछ महीनों में अमेरिका के साथ रिश्तों में कितनी 'सामान्य' स्थिति में वापस आ सकती है।



डॉ. सत्यवान सौरभ
333, परी वाटिका,
कौशल्या भवन,
बड़वा (सिवानी), भिवानी,
हरियाणा–127045
वार्तासूत्र :- 09466526148
01255281381

मैंने जब पूछा

बिटिया से जब पूछा मैंने, ''तुमने खाना खाया है?''
बोली, ''दाल नहीं है घर में, पर चूल्हा सुलगाया है!''

बीबी से जब पूछा मैंने, ''तुमने खाना खाया है?''
बोली, ''बिटिया रो रही थी, डाँट उसे सुलवाया है!''

बापू से जब पूछा मैंने, ''तुमने खाना खाया है?''
पड़े–पड़े बिस्तर पर बोले, ''तुमने आज कमाया है?''

माँ से जब पूछा मैंने, ''तुमने खाना खाया है?''
बोली, ''बेटा, भूख नहीं है, आज देर से खाया है!''

भाई से जब पूछा मैंने, ''तुमने खाना खाया है?''
बोला, ''कब से बैठा हूँ मैं, भाभी ने नहीं बनाया है!''



पंकज कुमार पाण्डेय 'कुक्कू'
वार्ड :- 11,
मुहल्ला :- पंजियार टोली,
पोस्ट :- रोसड़ा, थाना :- रोसड़ा,
जिला :- समस्तीपुर,
बिहार–848210
वार्तासूत्र :- 07667273836

ग़ज़ल

ख़त्म उम्मीदों का हर किस्सा हुआ।
छोड़िए जो भी हुआ अच्छा हुआ।
छोड़ कर मुझको जहाँ पे तुम गये,
वक़्त मेरा है वहीं ठहरा हुआ।
अब तेरी तारीफ़ में मैं क्या कहूँ?
चाँद धरती पर लगे उतरा हुआ।
वो रहेगा हो के याँ हर हाल में,
जो भी है तकदीर में लिक्खा हुआ।
ज़िंदगी जीने के 'हीरा' नाम पर,
रोज़ बस साँसों से समझौता हुआ।



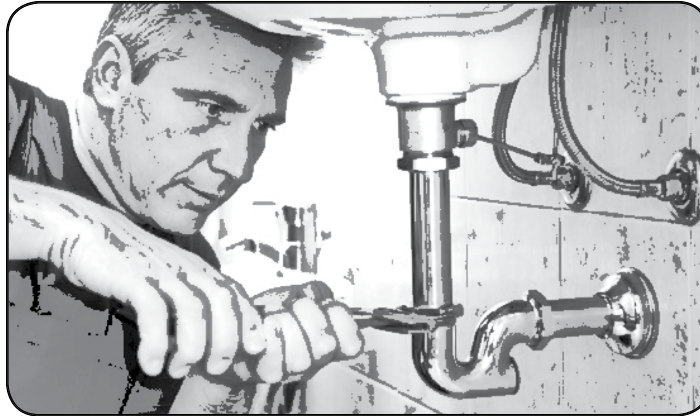
हीरालाल यादव 'हीरा'
गुरु प्रसाद सोसायटी, शिवाजी नगर,
कुरार विलेज, मावाड पूर्व, मुंबई–400097

सत्यव्रत

एक शहर के एक मोहल्ले में अनेक घर और दुकानें थीं। सभी लोग अपने अपने ढंग से अपने जीवन का आनंद ले रहे थे। एक–दूसरे से बहुत मिलकर रहते थे। हमेशा एक–दूसरे की मदद किया करते थे। कोई किसी का दुश्मन नहीं था। उस समय ग़रीबी बहुत थी और साथ ही साथ कोई–कोई व्यक्ति ही पढ़ा लिखा होता था, बाक़ी सभी अँगूठा छाप थे। उस समय लोगों को दो वक़्त का खाना भी मिल जाता तो लोग परमात्मा का धन्यवाद करते थे। सभी को यही होता था कि कहीं छोटी–सी नौकरी मिल जाये तो परिवार का पेट पल जायेगा। कोई अपना काम करने के बारे में नहीं सोचता था। कोई सोचता भी कैसे उस समय पानी भी हफ़्ते में दो या तीन बार ही आता था। कोई नहीं जानता था कि आगे उनके साथ क्या होगा!

उसी मोहल्ले में एक घर था, जिसमें एक पति–पत्नी रहते थे। पति का नाम अजय और पत्नी का नाम कमला था। अजय कपड़े पर कढ़ाई का काम करता था। उस समय बहुत कम लोग कपड़े पर कढ़ाई का काम किया करते थे। अजय के पास कढ़ाई करने की मशीन थी और कमला हाथ से कढ़ाई किया करती थी। दोनों कढ़ाई का काम करके अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। दिन–रात दोनों ख़ूब मेहनत से काम करते थे। अजय सबकी मदद किया करता था, किसी को पैसे की ज़रूरत होती उसे पैसे दे देता। अगर किसी के घर में खाने को कुछ न होता तो खाने का राशन दे आता। कुछ लोग अजय से चिढ़ते थे कि वो कैसे इतनी मेहनत कर लेता है।

देखते–ही–देखते अजय ने अपने घर को बहुत अच्छा बना लिया था। अजय ने अपने घर को अपनी पत्नी के नाम करवाया था, जिसे देखकर आयकर विभाग के अफ़सर पूछने आ गए कि कमला के पास इतने पैसे कहाँ से आये कि उसने घर ले लिया। पूछताछ हुई तो कमला ने बताया कि मुझे हाथ से कपड़े पर कढ़ाई करना आता है और मेरे पति भी कपड़े पर मशीनी कढ़ाई करते हैं। आयकर विभाग के अधिकारी को कमला पर यक़ीन नहीं हुआ। उसने कहा कि आप हमारे साथ आयकर विभाग के दफ़्तर में चलिए, वहाँ चल कर हमें कढ़ाई करके दिखाइए। अजय और कमला चल दिए। वहाँ पहुँचकर कमला ने सभी के सामने कढ़ाई करके दिखाया। विभाग के सभी अधिकारी बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने कमला की कढ़ाई करते समय



की तस्वीर खींच ली। आयकर विभाग ने अजय और कमला के घर के साथ लगती ज़मीन भी कमला के नाम कर दी जो ज़मीन किसी के नाम पर नहीं थी, इसीलिए आयकर विभाग ने वो ज़मीन भी उन्हें दे दी। उस जगह पर कुछ ग़रीब लोग रहते थे। अजय किसी को दुःखी देख नहीं सकता था तो उसने कहा कि आप जब तक चाहो इस जगह पर रह सकते हो। वो लोग अजय को धन्यवाद कहने लगे। अजय और कमला को एक पुत्र था। उसका नाम रामेश्वर रख दिया। वैसे तो रामेश्वर चल सकता था, पढ़ सकता था और काम भी कर सकता था। बस उसका क़द आम लोगों से कम था। उसने 12 वीं तक की शिक्षा ले रखी थी। रामेश्वर एक बुद्धिवान व्यक्ति था और सदा अपने माता–पिता के दिखाए रास्ते पर ही चलता था।

12 वीं तक पढ़ने के बाद रामेश्वर ने पिता का हाथ बँटाना शुरू कर दिया था। अब वो भी अपने पिता के साथ मिलकर कपड़े पर कढ़ाई करना सीख गया था। अजय रोज़ दोपहर के 12 बजे दुकान से घर खाना खाने जाता था और ठीक शाम 4 बजे चाय पीने। साइकिल पर सवार होकर अजय जब घर की ओर चलता तो रास्ते में रहने वाले लोग अपनी अपनी घड़ी ठीक करने लगते थे, क्योंकि लोग जानते थे कि हमारी घड़ी ग़लत समय बता सकती है, पर अजय कभी देर नहीं कर सकता। रामेश्वर में भी वही आदतें थीं। वो भी सभी काम समय पर करने में विश्वास रखता था। रामेश्वर के माता–पिता ने सोचा कि अब रामेश्वर कमाने भी लगा है और उसकी विवाह की आयु भी हो गयी है, क्यों न इसका विवाह कर दें। रामेश्वर ने अपने माता–पिता के कहने पर विवाह कर लिया। रामेश्वर का विवाह अजय और कमला ने बड़ी धूम–धाम से किया था। रामेश्वर के माता–पिता ने अपने सभी रिश्तेदारों और मोहल्ले के सभी लोगों को आमंत्रित किया था। रामेश्वर के विवाह ऐसा था जैसे किसी राजकुमार का विवाह हो रहा हो। उस समय कोई भी विवाह पर इतना ख़र्च नहीं करता था। बस मंदिर में विवाह करवाकर घर आ जाते थे और एक पंगत में बिठाकर सभी को खाना खिलाया जाता था। पर रामेश्वर के विवाह में खाने–पीने के अनगिनत पंडाल लगे थे। विवाह के कार्यक्रम को देखकर कुछ मोहल्ले के लोग अजय और उसे परिवार से जलने लगे थे।

विवाह हो गया। रामेश्वर और उसके परिवार बहुत ख़ुश थे। रामेश्वर का जीवन फिर पहले की तरह हो गया। वो अपना काम करता और घर आ जाता। रामेश्वर के 2–3 मित्र थे। रामेश्वर उनसे कभी–कभी मिलता था, क्योंकि वो सुबह दुकान पर चला जाता और शाम को लौटता था, इसीलिए समय नहीं निकल पाता था। रामेश्वर ने एक दिन अख़बार में पढ़ा कि पी.सी.ओ. खुलने जा रहे है। उस समय पत्र से ही लोग एक–दूसरे से बात करते थे। आमजन को तो फोन के बारे में पता भी नहीं था, ये सब के लिए नई बात थी। रामेश्वर ने पी.सी.ओ. लगवाने के लिए पता किया। रामेश्वर ने घर के नीचे ही एक कमरे को दुकान बना दिया और पी.सी.ओ. लगवाने के लिए टेलीफोन एक्सचेंज को पत्र लिख दिया और अपने ज़रूरी दस्तावेज़ भी जमा करवा दिए। लगभग एक महीने के बाद रामेश्वर के घर पर पी.सी.ओ. लग गया। एक महीने तक रामेश्वर अपने पिता के साथ ही काम करता रहा।

पी.सी.ओ. खुलने से सभी ख़ुश थे। लोग घंटों तक कतार में लगकर अपने दूर रहने वाले रिश्तेदारों से बात करते थे। रामेश्वर का काम बहुत अच्छे से चलने लगा। सुबह जल्दी ही वो दुकान खोल लेता और देर रात तक काम करता। ये देखकर अजय भी ख़ुश था। अजय सुबह बाग में सैर करने जाया करता था। वहाँ से आकर नहाकर दुकान पर जाता था। अजय अपनी कढ़ाई का ही काम करता था और रामेश्वर पी.सी.ओ. चलाया करता था। अजय सोमवार शाम को कीर्तन सुनने मंदिर जाया करता था। उस दिन भी अजय ने वैसा ही किया।

सोमवार का दिन था, उस दिन भी अजय मंदिर गया। वहाँ से लौटा तो उसने अपनी बहू (रामेश्वर की पत्नी) से कहा कि आज मीठा खाने का मन है, क्या तुम मेरे लिए हलवा बना दोगी? रामेश्वर की पत्नी ने हलवा बना दिया। हलवा खाकर अजय सोने चला गया। आधी रात बीत गयी अजय को प्यास लगने लगी। अजय पानी लेने के लिए रसोई घर की तरफ़ चल दिया, साथ में कमला सोयी हुई थी। अजय ने रसोई घर का दरवाज़ा खोला और वहाँ पानी का गिलास भरा और पी लिया। पानी पीकर जैसे ही अजय पीछे मुड़ा वो गिर गया। गिरने की आवाज़ बहुत ज़ोर से आई। आवाज़ सुनकर कमला उठ गयी। उसने देखा कि अजय अपने पलंग पर नहीं है। कमला उठी और इधर–उधर अजय को खोजने लगी। उसने देखा कि अजय रसोई घर में गिरा हुआ है। उसने तुरंत रामेश्वर को ऊँचे स्वर में पुकारना शुरू कर दिया। पुकार सुनकर रामेश्वर और उसकी पत्नी दोनों रसोई घर में आ गए। पिता को गिरा देख उसने आस–पास वाले लोगों को बुलाया और अजय को अस्पताल ले गया। अस्पताल पहुँचने पर डॉक्टर ने अजय को मृत घोषित कर दिया। अजय के शरीर को लेकर रामेश्वर और कुछ आस–पास वाले लोग वापिस आये। अगले दिन अजय का अंतिम संस्कार किया गया। जो मोहल्ले के लोग अजय और उसके परिवार से जलते थे, उन्हें अंदर–ही–अंदर ख़ुशी होने लगी।

अजय की मृत्यु के कुछ महीने ही बीते थे कि रामेश्वर के घर एक पुत्र ने जन्म लिया। रामेश्वर को पिता की मृत्यु से बहुत दुःख पहुँचा था, पुत्र के जन्म लेने से उसका दुःख कुछ कम हुआ। रामेश्वर पी.सी.ओ. ही चला रहा था, उसके पास दिन में तरह–तरह के लोग आते थे फोन करने। रामेश्वर पी.सी.ओ. में बैठता था तो उसे मोहल्ले में होने वाले बदलाव दीखते रहते थे। एक बार उस मोहल्ले में पानी का पाइप लगाने वाले आये। रामेश्वर ने उन्हें काम करते देख लिया था। थोड़ी देर उनके पास खड़े होकर समझ लिया था कि उन्होंने पाईप कैसे लगाए हैं। वो लोग अपना काम ख़त्म करके चले गए। फिर कुछ समय बाद सड़क बनाने वाले आ गए। उन्होंने अपने तरीक़े से काम करना शुरू कर दिया। काम करते हुए अचानक पाईप के वाल पर हथोड़े की चोट लग गयी। सड़क बनाने वाले जल्दी–जल्दी काम ख़त्म करके वहाँ से चले गए। अगले दिन से मोहल्ले में पानी आना बंद हो गया। कभी आता भी तो बहुत कम आता और आधे घरों में ही आता। इस बात से सभी परेशान थे कि पानी नहीं आ रहा है। रामेश्वर के घर भी पानी आना बंद हो गया था। इसे देखते हुए रामेश्वर ने पूरे मोहल्ले वालों से पूछा कि किस–किस के घर पानी आ रहा है? तब रामेश्वर को पता चला कि कुछ घरों में पानी आ रहा है और कुछ घरों में पानी नहीं आ रहा है। रामेश्वर ने निश्चित किया कि वो सुबह इस बात की शिक़ायत करवाएगा कि मोहल्ले में पानी की समस्या है।

अगले दिन सुबह रामेश्वर निगम कार्यालय में पहुँच गया, वहाँ उसने पानी न आने का शिक़ायत पत्र जमा करवाया। शिक़ायत पत्र जमा करवाकर वो घर लौट आया और अपनी दुकान (पी.सी.ओ.) में बैठ कर काम करने लगा। उसी दिन दोपहर में एक कर्मचारी रामेश्वर की दुकान पर पहुँचा। रामेश्वर ने बताया कि पूरे मोहल्ले में पानी नहीं आ रहा है। ये बात उन लोगों तक पहुँच गयी जो रामेश्वर से जलते थे, वो बाहर आ गए। रामेश्वर अपनी दुकान (पी.सी.ओ.) पर काम कर रहा था और जो कर्मचारी आया था वो मोहल्ले के कुछ लोगों से मिला जो लोग रामेश्वर से जलते थे। उन्होंने उस कर्मचारी को कहा कि पानी आ रहा है। रामेश्वर से पूछा गया कि क्या तुम्हारे घर पानी आ रहा है तो रामेश्वर ने कर्मचारी को बताया कि हमारे घर पानी नहीं आ रहा है। वो कर्मचारी अपनी रिपोर्ट तैयार करके चला गया। उसने वहाँ जाकर अपने उच्च अधिकारी को रिपोर्ट दे दी और ये बताया कि मोहल्ले में सिर्फ़ एक ही आदमी है जिसने शिक़ायत की है, बाक़ी किसी को कोई समस्या नहीं है। शिक़ायत जिला अधिकारी के पास भी पहुँच गयी थी। उच्च अधिकारी ने कर्मचारी से कहा कि आप उसके घर में अलग पानी की पाईप लगवा दो। कर्मचारी फिर रामेश्वर

के पास आ गया। उसने कहा कि आपकी शिक़ायत है तो हम आपके घर में अलग पाईप लगा देते हैं, आपकी समस्या हल हो जाएगी। रामेश्वर ने कहा कि पूरे मोहल्ले में पानी की समस्या है, मैं पूरे मोहल्ले से पानी की समस्या को दूर करना चाहता हूँ। कर्मचारी ने जाकर फिर उच्च्य अधिकारी को बताया कि रामेश्वर अपने घर में पाईप लगाने से मना कर रहा है और कह रहा है कि पूरे मोहल्ले में पानी की समस्या है।

अगले दिन उच्च्य अधिकारी ने फ़ैसला किया कि अब वो स्वयं रामेश्वर से मिलेगा। अगले दिन उच्च्य अधिकारी आया, रामेश्वर से मिला। रामेश्वर ने कहा, ''आपको यही लगता है न कि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो आप 10 मिनट रूक जाएँ। दोपहर के 12 बजने वाले है, पानी का समय होने वाला है।''

दोपहर के 12 बज गए, रामेश्वर मोहल्ले के हर घर में उस अधिकारी को ले गया। रामेश्वर ने पहले घर का दरवाज़ा खटखटाया, घर की महिला बाहर आई। रामेश्वर ने पूछा, ''आपके यहाँ पानी आ रहा है?''

महिला ने कहा, ''नहीं आ रहा है।''

रामेश्वर ने पूछा, ''कितने दिनों से नहीं आया?''

महिला ने उत्तर दिया, ''5 दिन हो गए हैं, बीच में एक बार थोड़ा पानी आया था, फिर बंद हो गया था।''

रामेश्वर दूसरे घर में गया, वहाँ की महिलाएँ कपड़े का ढ़ेर लेकर पानी आने का इंतज़ार कर रही थीं। रामेश्वर ने पूछा, ''माँ जी, पानी आ रहा है?''

सामने से उत्तर आया, ''बेटा पानी नहीं आ रहा।'' ऐसे करके रामेश्वर ने सभी घरों का हाल अधिकारी को दिखाया। बीच में एक दो घर थे जो मोहल्ले के शुरू में थे, वहाँ पानी आता था उसके आगे नहीं आता था। अधिकारी ये देखकर वहाँ से चला गया।

अगले दिन सुबह ज़मीन खोदने और पाईप ठीक करने वाले लोग आ गए। वो रामेश्वर के पी.सी.ओ. के आगे से खोदने वाले थे। रामेश्वर ने उन्हें रोक दिया। रामेश्वर ने एक जगह दिखाई और कहा, ''यहाँ से खोदना शुरू करो।''

कर्मचारी बात मानने पर न आये। रामेश्वर ने कहा, ''मैं यहाँ से खोदने नहीं दूँगा। तुम खोदने की शुरूआत मेरी बताई जगह से करो।'' कर्मचारी वहाँ से खोदने लगे, जहाँ से रामेश्वर ने बताया था। रामेश्वर अपना काम कर रहा था और कर्मचारी उस जगह पर खोद रहे थे। कर्मचारी खोदते रहे। कुछ समय खोदने के बाद उन्हें पाईप नज़र आने लगा। उन्होंने रामेश्वर को बताया कि हमें पाईप मिल गया तो रामेश्वर ने कहा कि इसके साथ–साथ खोदो। कर्मचारी खोदते रहे, कुछ समय बाद उन्हें दो वाल मिले। उन कर्मचारियों ने देखा कि एक वाल टूटा हुआ है जिसका टुकड़ा पाईप में फँसा हुआ है। उन्होंने उस वाल को बदला और मोहल्ले में पानी आ गया। मोहल्ले में जो लोग रामेश्वर को उसके परिवार से जलते थे, वो अधिक जलने लगे कि इसको ये सब बातें कैसे पता है मोहल्ले में हम भी रहते हैं।

कुछ दिन सब शांत रहा। रामेश्वर अपनी दुकान पर काम करता रहा। जो लोग रामेश्वर से ईर्ष्या रखते थे, उन सब ने एक बैठक की। बैठक में रामेश्वर की ही बात होने लगी। बातों–ही–बातों में रामेश्वर से ईर्ष्या रखने वाले लोगों ने सोचा कि एक मौक़ा मिल जाए तो रामेश्वर को बर्बाद कर देंगे। रामेश्वर इन सब बातों से अनज़ान अपने काम पर लगा रहा। कमला ख़ुश थी कि रामेश्वर के पास बैठकर करने वाला काम था, क्योंकि रामेश्वर किसी भी भारी वस्तु को नहीं उठा सकता था और साथ ही कोई वाहन भी चला नहीं सकता था, अपने क़द के कारण। कुछ दिन बाद मोहल्ले में बच्चे गेंद के साथ खेल रहे थे। खेलते–खेलते गेंद बार–बार बिजली के तारों पर लग रही थी, जिस से रामेश्वर के घर और दुकान दोनों की बिजली बार–बार बंद होकर जल रही थी। इससे परेशान होकर रामेश्वर ने बच्चों को समझाया कि यहाँ न खेलो। अगर खेलना ही है तो नीचे खेलो जिससे बिजली के तारों पर गेंद न लगे। बच्चे वहाँ से अपने–अपने घर चले गए। शाम को जब सभी मोहल्ले के पुरुष अपने–अपने काम से लौटे तो बच्चों ने बताया कि रामेश्वर काका ने उन्हें खेलने से मना कर दिया। फिर क्या था जो लोग रामेश्वर और उसके परिवार से ईर्ष्या रखते थे वो सब इसी मौक़े की तलाश में थे। वो सभी लोग इकट्‌ठा होकर रामेश्वर के पास आ गए और कहने लगे कि तुमने हमारे बच्चों को खेलने से क्यों मना किया? वहाँ झगड़े का–सा माहौल हो गया। उन लोगों ने कहा कि हम तुम्हें यहाँ रहने नहीं देंगे। तुम्हारा काम बंद करवा देंगे। रामेश्वर ने उस दिन गुस्से में सबके सामने शपथ ली कि वो कभी भी इस दुकान में क़दम नहीं रखेगा। शपथ तो ले ली, अब उसे पूरा भी करना था। अगले ही दिन रामेश्वर ने पी.सी.ओ. बंद करवा दिया और एक फैक्ट्री में नौकरी करने लगा। उसने जो शपथ ली थी, उसका आजीवन पालन किया। पी.सी.ओ. से प्रतिदिन 2000 से 2500 रुपये कमाने वाले व्यक्ति ने 2500 रुपये महीने की नौकरी करनी शुरू कर दी। रामेश्वर रोज़ सुबह ऑटोरिक्शा में बैठ कर जाता और आगे 2 किलोमीटर का सफ़र पैदल चलकर करता था। अपनी शपथ को पूरा करने के लिए उसने कभी अपनी उस दुकान में क़दम नहीं रखा। कुछ समय बाद उसने वो मोहल्ला छोड़ दिया। फिर कभी उस मोहल्ले में रामेश्वर दिखाई नहीं दिया।

✍ ***सुमित विग***



गली नं.-6,
मकान नं. बी-10-804/1,
मोचपुरा बाज़ार,
नज़दीक ट्रंक बाज़ार,
लुधियाना,
पंजाब-141008
वार्तासूत्र :- 09803078073

वार्ड पार्षद एक ही कच्चे घर के समक्ष दर्ज़नों लोगों का फोटो खिंचवाकर दिलवा रहे हैं उन्हें आवास योजना का लाभ

मामला हुसैनाबाद नगर पंचायत क्षेत्र में आवास योजना के बंदरबाँट का



हुसैनाबाद :— हुसैनाबाद नगर पंचायत अंतर्गत विभिन्न वार्डों में कुछ वार्ड पार्षदों को छोड़कर अधिकांश वार्ड पार्षदों द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के आवंटन को लेकर लूट मची हुई है। ये सारे वार्ड पार्षद मोटी रक़म की उगाही करने को लेकर एक ही स्थल पर एक ही कच्चे घर के समक्ष दर्ज़नों लाभुकों को बारी—बारी से खड़ा करवाकर फोटो खिंचवा रहे हैं, ताकि वे उन्हें आवास योजना का लाभ दिलवाकर उनसे मोटी रक़म की उगाही कर सकें। आपको बताते चलें कि ये सारे वार्ड पार्षद वही दूध के धुले हुए वार्ड पार्षद हैं, जिन्होंने विगत 2020 के अगस्त महीने में तत्कालीन कार्यपालक पदाधिकारी कुंदन कुमार द्वारा आवंटित दुकान को अवैध करार देते हुए, उसे रद्द कराने के लिए एकजुट हुए थे। अब ऐसे वार्ड पार्षदों के ऊपर कौन—सी कार्रवाई की जाए, जिनसे कि इन्हें इनकी असली औक़ात का पता चल सके। मौक़े पर कुछ लोगों ने अपने नाम न बताने की शर्त पर विभिन्न वार्डों में हो रहे इस तरह की मनमानी की शिक़ायत की है, जिनके सत्यापन के लिए हुसैनाबाद नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी कमलेश्वर नारायण से संपर्क किया गया तो उन्होंने कहा कि अगर इस प्रकार की बात है तो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है, पर ऐसे करवाकर वे कोई तीर नहीं मार लेंगे, क्योंकि लाभुकों की सूची विभाग को भेजने से पूर्व उक्त स्थल पर जाकर उनकी सघन जाँच की जाएगी, तत्पश्चात लाभुकों की सूची विभाग को भेजी जाएगी। इसके बाद ही लाभुक आवास योजना का लाभ ले सकेंगे, वहीं इस ख़बर के प्रसारण एवं प्रकाशन के बाद पलामू उपायुक्त शशि रंजन के आदेश के आलोक में हुसैनाबाद अनुमंडल पदाधिकारी सह कार्यपालक पदाधिकारी कमलेश्वर नारायण ने तत्काल ही विभिन्न वार्डों में आवास योजना में हुई भारी अनियमितता की जाँच के लिए नगर प्रबंधक व पीएमएवाई जेई की अलग—अलग टीम बनाकर जाँच रिपोर्ट सौंपने का आदेश दिया है जिससे वार्ड पार्षदों के बीच हड़कंप मचा हुआ है। हुसैनाबाद अनुमंडल पदाधिकारी सह कार्यपालक पदाधिकारी कमलेश्वर नारायण के आदेश के बाद वार्ड पार्षदगण हुसैनाबाद नगर पंचायत अध्यक्ष शशि कुमार एवं हुसैनाबाद नगर पंचायत उपाध्यक्ष गयासुद्दीन सिद्दीक़ी द्वारा आवंटित आवासों की भी जाँच की माँग की है, वहीं स्थानीय लोगों द्वारा हुसैनाबाद नगर पंचायत उपाध्यक्ष गयासुद्दीन सिद्दीक़ी पर अपने बेटे के नाम अवैध रूप से अंबेडकर चौक पर दुकान आवंटन कराने एवं समुदाय विशेष को आवास योजना के लाभ देने का आरोप लगाया गया है, जबकि इन बातों को हुसैनाबाद नगर पंचायत उपाध्यक्ष गयासुद्दीन सिद्दीक़ी ने खंडन किया है। आपको बताते चलें कि यह कोई पहली बार नहीं है, इससे भी पहले कई वार्ड पार्षदों ने अपने परिजनों को आवास योजना का लाभ दिलवाया है। इतना ही नहीं, कहीं—कहीं तो कई वार्ड पार्षदों द्वारा अविवाहित लोगों को भी आवास योजना का लाभ दिलवाया गया है जिसकी शिक़ायत पूर्व में भी हुसैनाबाद अनुमंडल पदाधिकारी सह कार्यपालक पदाधिकारी से की गई है। अब ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या बेलगाम हुए हुसैनाबाद नगर पंचायत अध्यक्ष शशि कुमार, हुसैनाबाद नगर पंचायत उपाध्यक्ष गयासुद्दीन सिद्दीक़ी एवं दोषी वार्ड पार्षदों की सिर्फ़ शिक़ायत ही होती रहेगी या उन पर कोई कार्रवाई भी होगी?



✍ ***उत्तम कुमार***
संवाददाता : अरण्य वाणी
(हुसैनाबाद)

ज़रा आना सवेर

सुनो...!
ज़रा आना सवेर
आसमाँ में फटते
भौंह को देखेंगे
हम तुम सवेर
ज़रा आना सवेर...

सागर से निकलते
लालिमा को लिए
पहाड़ पर चढ़ते
रवि को देखेंगे
हम तुम सवेर
ज़रा आना सवेर...

ज़रा आना सवेर
ओस में भींगी
हुई घास पर
सागर के
उस किनारे पर चलेंगे
हम तुम सवेर
ज़रा आना सवेर...!



✍ ***रवि प्रकाश***
पता :- खड़ार पर (जपला),
जिला :- पलामू, झारखंड-822116
वार्तासूत्र :- 08709967885

आगे क़दम बढ़ाते हैं

आओ हम सब मिलकर यारों,
आगे क़दम बढ़ाते हैं।
नन्हें हाथ जो भीख माँगते,
उनमें क़लम थमाते हैं।

बाधाओं से हार मानकर,
कायरता दिख जाती है।
बंद पड़ी अँधियारी कोठी में,
जाकर छिप जाती है।
वीरान पड़ी इस भूमि पर,
सपनों के वृक्ष लगाते हैं।
आओ हम सब मिलकर यारों,
आगे क़दम बढ़ाते हैं।

गद्दारी – धोख़ेबाज़ी,
अपनों को देना बंद करो।
प्यार बढ़े रिश्ते–नातों में,
ऐसा उचित प्रबंध करो।
भगत सिंह, शेखर और गांधी,
का साहस जगाते हैं।
आओ हम सब मिलकर यारों,
आगे क़दम बढ़ाते हैं।

निडर खड़े जो अपने पथ पर,
आख़िर में वो सफल बने।
कमज़ोरी पर क़ाबू पाकर,
लोगों में वो सबल बने।
दीपक की ज्योति बनकर,
उजियारे को फैलाते हैं।
आओ हम सब मिलकर यारों,
आगे क़दम बढ़ाते हैं।

उम्मीद छोड दी जीवन से,
जीवन को जीना भूल गए।
बाधाओं से तंगी पाकर,
रस्सी पर जो झूल गए।
सपने फिर आँखों में आए,
ऐसा पाठ पढ़ाते हैं।
आओ हम सब मिलकर यारों,
आगे क़दम बढ़ाते हैं।
नन्हें हाथ जो भीख माँगते,
उनमें क़लम थमाते हैं।



पूजा दीपांकर
मुहल्ला :- अम्बेडकर पार्क,
थाना :- रामगढ़,
जिला :- फ़िरोज़ाबाद, उत्तर प्रदेश–283203
वार्तासूत्र :- 08171626342

जाता क्या है

लबों की ओर हँसी का बस ज़रा जाम कर दिया करो।
एक पल में मुसीबतों का काम तमाम कर दिया करो।

गर निज़ात पानी है अपने भीतर पलते गुरूर, घमंड से,
गली से गुज़रते किसी ग़रीब को सलाम कर दिया करो।

दफ़्तरों में बैठे–बैठे जब तुम ख़ास लगने लगो ज़्यादा,
क़ब्र में दबे लोगों को देख ख़ुद को आम कर दिया करो।

कोई बचपन का साथी इस भरी भीड़ में टकरा जाए तो,
अरे, ऐसे–ऐसे मौक़ों पर तो सुबह से शाम कर दिया करो।

देश की ख़ातिर ज़रूरत जो आन पड़े कभी तो यारो,
ज़िस्म की एक–एक बूँद वतन के नाम कर दिया करो।

जाता क्या है, मुस्लिम से मिलो तो अस्सलाम वालेकुम,
और 'राहुल' हिन्दू से मिलो तो राम–राम कर दिया करो।



राहुल लोहट
मुहल्ला :- खरड़वाल,
पोस्ट :- अमरगढ़,
थाना :- नरवाना, जिला :- जीन्द,
हरियाणा–126116
वार्तासूत्र :- 08199812295

ज़िंदगी

हर सुबह
मेरे दरवाज़े पर
आ खड़ी होती है
ज़िंदगी,
कुण्डी खड़काती है
जाने किस उम्मीद में
ज़िंदगी।

मैं हर बार
मुस्कुराकर
खोल देती हूँ दरवाज़ा,
और
मेरे साथ
हो लेती है ज़िंदगी,
दिन भर रहती है
मेरे साथ,
जीती है पूरा दिन,
पता नही सारा दिन
वो मुझे सहारा देती है
या मैं उसे।

पर
शाम ढ़ले तक
थककर–हारकर
या शायद
कुछ न पाकर
टूटी उम्मीद ले
उदास–निराश हो
विदा लेती है
ज़िंदगी।

अगली सुबह
फिर
नई उम्मीद
नई आशा के साथ
मेरे दरवाज़े की
कुण्डी खड़काती है
ज़िंदगी।



मंजूषा मन
अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन,
ग्राम :- रवान,
थाना :- बलौदा बाज़ार,
जिला :- बलौदा बाज़ार,
छत्तीसगढ़–493331
वार्तासूत्र :- 09826812299

अपराध बोध...

ज्वाला बाबू अनमोल की बातों को बहुत ही बेचारगी से सुन रहे थे। हालाँकि, अब ये रोज़ की दिनचर्या हो गई थी।

वे चलते–चलते अपने मकान को और कभी–कभी अपनी रखी चीज़ों को भी भूल जाते थे। कभी चश्मा भूल जाते तो कभी छड़ी...लेकिन आज तो हद ही हो गई थी। वे अपना घर ही भूल गये थे और किसी ने उनको चौक पर से उनके घर तक सकुशल पहुँचाया था।

अनमोल बिना लगाम के घोड़े की तरह बदजुबानी पर उतर आया था– ''बाबूजी, आपको तो कुछ याद–वाद रहता नहीं है...कम–से–कम हमारी हालत पर तो रहम कीजिए। जब आपको अपना मकान ही याद नहीं रहता तो आप घर से बाहर निकलते ही क्यों हैं? ख़ामखाँ आपके चलते हमलोगों को परेशानी होती है और बाहर के लोग हमारे ऊपर ये इल्ज़ाम लगायेंगे कि बूढ़े को मरने के लिए जान–बूझकर ये लोग बाहर छोड़ आते हैं। आपको जिस चीज़ की ज़रूरत हो हमसे कहिये हम आपको लाकर देंगे।''

ज्वाला बाबू बड़ी बेचारगी से अनमोल की बातों को एकटक ध्यान लगाकर सुन रहे थे और, वो ये भी सोच रहे थे कि मेरे जैसा ज़िम्मेदार व्यक्ति आज उम्र के उस पड़ाव पर पहुँच गया है जहाँ दिमाग़ चीज़ों को बहुत लंबे समय तक याद नहीं रख पाता तो भला इसमें उनकी क्या ग़लती हो सकती है...!

हालाँकि, इस घटना को हुए लगभग सप्ताह भर हो चुका था। एक सुबह वो कहीं से टहल कर आ रहे थे कि फिर से वो अपना ही घर भूल गये।

वो अपने ही घर की तस्दीक कर लेना चाह रहे थे...जैसे ये उनका ही घर है या नहीं...!

मैं, उनके बगल से गुज़र रहा था, तभी उन्होंने मुझे टोका – ''सुनो, ये मेरा ही घर है ना...?''

मैंने एक बार उन्हें देखा फिर मकान को, ''नहीं, ये वर्मा जी का मकान है। आपका घर थोड़ा–सा और आगे है।''

''मुझे वहाँ तक पहुँचा दोगे...? ''

''हाँ, क्यों नहीं...!''

मैंने उन्हें सहारा देकर उनका हाथ पकड़ लिया और उनको उनके घर तक पहुँचा आया।

ज्वाला बाबू ने अपने घर के ग्रिल को अपने खुरदरे हाथों से छुआ। फिर अपने मोटे फ्रेम वाले चश्मे से घर को देखा। फिर वे अपने भरोसे को सही पाकर बोले, ''हाँ, यही है...।''

''तुमने मुझे यहाँ तक पहुँचा दिया. ..तुम्हारा बहुत–बहुत धन्यवाद...अब क्या करूँ...मुझे कुछ याद नहीं रहता तो...इध ार कुछ सालों से ऐसी परेशानी हो गई है...नहीं तो पहले ऐसी कोई बात नहीं थी...।'' वे सफ़ाई देते हुए बोले।

''गायत्री...!'' उन्होंने अपनी स्वर्गवासी पत्नी को आवाज़ लगाई, लेकिन उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ।

फिर, जैसे अपने आप से बोले, ''अरे. ..उसको गुज़रे तो क़रीब दो महीने से ज़्यादा हो गये...।'' उनकी आँखें अब भीगने लगी थीं...और वे ग्रिल को ठेलकर धीरे से अंदर चले गये।



✍ महेश कुमार केशरी
C/O :- मेघदूत मार्केट, फुसरो,
बोकारो (झारखंड)
वार्तासूत्र :- 09031991875
ई–मेल :- keshrimahesh322@gmail.com

नेह के बंधन

''माँ, मुझे गोद में मत लो, डॉक्टर ने मना किया है ना'', तीन वर्ष की शुभि ने हाँफती रूग्ण माँ की गोद से फिसलते हुए कहा।

''अरे, आपकी दो ही पुत्रियाँ हैं? एक बेटा तो और होना चाहिए।'' नई पड़ोसन ने शुभि की माँ से कहा।

''मेरे तो ये ही बेटे हैं और ये ही बेटियाँ। माँ ने स्नेहपूर्वक बच्चियों को निहारते हुए कहा।

''साहित्य–सेवा तो तू वैसे ही कर लेगी, चिकित्सक बनने की तैयारी कर, शुभि।'' किशोरी पुत्री को माँ समझा रही थीं।

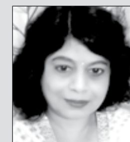
''माँ, तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? दूसरे शहर जाना पड़ेगा मेडिकल की पढ़ाई के लिए।'' शुभि चिंतित थी।

माँ हृदय रोग के कारण अस्पताल में भर्ती होती रहती व अध्ययन में कड़े परिश्रम के साथ उन्हें भी दो शहरों के मध्य की दूरी पार कर, बीच–बीच में आकर सँभालती रही साहसी व परिश्रमी पुत्री।

फिर एक दिन माँ ने अपनी प्राणप्रिय पुत्री से सदैव के लिए दूरियाँ बना लीं। शुभि को लगा मानो उसके जीवन से प्रेरणा का ज्योति–पुंज विदा हो गया हो।

''ज़ोर–ज़ोर से साँस लो।'' डॉ. शुभि ने हाँफती–काँपती रूग्ण को स्टेथस्कोप से जाँचते हुए कहा। अपना करूण मुख सौम्य महिला चिकित्सक की ओर, रोगिणी ने घुमाया तो शुभि को लगा ये तो पीड़ा झेलतीं, हूबहू उसकी स्वर्गवासी माँ की आँखें थीं।

माँ जन्म–मृत्यु के बंधनों से परे, समस्त दूरियाँ पार कर, कर्मभूमि पर फिर से उसे हाथ पकड़ चलना सिखा रही थी।



✍ डॉ. महिमा श्रीवास्तव
34/1, सर्कुलर रोड,
मिशन कंपाउंड के पास,
अजमेर, राजस्थान–305001
वार्तासूत्र :- 08118805670

'अरण्य वाणी' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ...!

सक्सेस पब्लिक स्कूल

स्थान :- अनुमंडल कार्यालय के समीप, हुसैनाबाद, पलामू (झारखंड)

निदेशक
मो0 नासिर
वार्तासूत्र :- 07070057786







- पाठ्यक्रम C.B.S.E. पैटर्न पर आधारित।
- कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य।
- खेल-खेल में पढ़ाई की सुविधा।
- संगीत एवं कम्प्यूटर की सुविधा।
- समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन।

विशेष

उच्च स्तरीय अंग्रेज़ी माध्यम द्वारा पढ़ाई की व्यवस्था।



स्मार्ट क्लासेज़ की व्यवस्था

काम किया है, काम करेंगे।
सदा सबका सम्मान करेंगे।।

हमारा उद्देश्य :-

- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा, बिजली एवं पानी की उत्तम व्यवस्था कराना।
- ग़रीब, असहाय एवं दलितों को आवास एवं शौचालय का लाभ दिलवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के हर मुख्य मार्ग के साथ-साथ हर गली में सड़क का निर्माण करवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के हर गाँव में नाली निर्माण करवाना।
- ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित विद्यालयों को मॉडल विद्यालय की उपाधि दिलवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र को स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान दिलवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के हर पंचायत में विवाह मंडप का निर्माण करवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के हर पंचायत के हर गाँव में स्ट्रीट लाइट/एलइडी लाइट लगवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के हर पंचायत में छठ घाट का भव्य निर्माण करवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के लिए कम्प्यूटर, सिलाई, कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण दिलवाना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र में लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा देना।
- वृद्धा-पेंशन, विधवा-पेंशन दिव्यांग-पेंशन को ससमय भुगतान करवाना।
- किसानों को हरसंभव सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाना।
- बेरोज़गारों के लिए रोज़गार-सृजन करना।
- हुसैनाबाद ग्रामीण क्षेत्र में जगह-जगह जलमीनार लगवाना।

आलोक कुमार सिंह उर्फ़ टुटू सिंह

जिला परिषद सदस्य प्रत्याशी : मध्य क्षेत्र, हुसैनाबाद







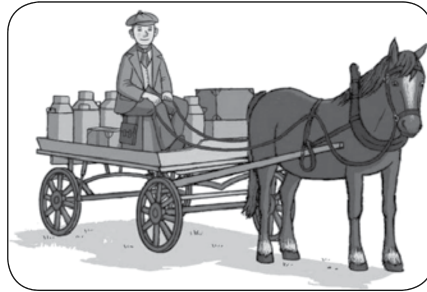




इतिहास के पन्नों में दफ़न होने को मज़बूर 'ताँगा' संस्कृति

प्राचीनकाल से ही मनुष्य स्वयं को विकसित करने में लगा हुआ है। वह नित्य नये–नये आविष्कार कर रहा है जिससे वह अपने दैनिक और भविष्य में सभ्यताओं के विकास के साथ–साथ मानव अपने मस्तिष्क को भी विकसित कर रहा है। सर्वप्रथम जब मनुष्य रूप अपने पूर्वज बंदरों या जिनसे भी वह विकसित होकर आधुनिक रूप में आया। उसने सभ्यताओं को विकसित किया और अपने आप की सुलभता के लिए साधनों का आविष्कार किया। आदिम मनुष्य ने पहले आग का, फिर सवारी साधनों को आविष्कृत किया। नवपाषाण युग की सबसे बड़ी क्रांतिकारी खोज पहिया थी। उसके काफ़ी पहले से ही मनुष्य ने अपने साधनों के रूप में जानवरों को पालतू बनाना शुरू कर दिया था। सर्वप्रथम उसने सुरक्षा के लिए कुत्ता, फिर सामान को वहन करने के लिए घोड़ा, खच्चर तथा तन की मज़बूती के लिए दुधारू पशुओं को पालना शुरू किया। घोड़ा और पहिए की मदद से उसने वस्तुओं और सामानों को वहन करने के लिए घोड़ा गाड़ी और बैलों को पालतू बनाकर बैलगाड़ी का निर्माण किया। घोड़ों का उपयोग मनुष्य ने घोड़ा गाड़ी बनाकर सामान वहन करने तथा उत्सवों में ख़ुशियों को बढ़ाने और दोगुना करने के लिए नचाने में किया।

घोड़ा गाड़ी जिसे बदलते युग में उसे इक्का, ताँगा और विक्टोरिया या फिटन नामों से पुकारा गया। घोड़ों का प्रयोग पहले युद्धों में सवारों के लिए और रथों में घोड़ों को जोतकर युद्धों को जीतने के लिए प्रयोग किया गया। आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक घोड़ों को पालना, उनकी सवारी करना राजाओं–महाराजाओं की शान थी। राजाओं–महाराजाओं के लिए अच्छी व विशेष नस्लों के घोड़े पाले जाते थे जिनका उपयोग उनके द्वारा शिकार खेलने एवं रथों में जोतकर युद्धों में किया जाता था। घोड़ा गाड़ी का प्रयोग शादियों में दूल्हे के बैठने और दुल्हनों को ससुराल लाने व रानियों के सैर पर जाने के लिए किया जाता रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों और इतिहास में उच्चकोटि के घोड़ों का वर्णन मिलता है। हमारे इतिहास और कहानियों व किंवदंतियों में ऐसे घोड़ों का मिलता है जो शायद हवा से भी तेज चलते थे या यूँ कहें कि उड़ते थे जिनका प्रत्यक्ष उदाहरण मध्यकाल में चंदेल शासक परमाल देव के दो सामंत आल्हा और ऊदल के घोड़ों के संबंध में मिलता है। कहा जाता है कि उनके घोड़े, बेंदुला और हरनागर इस प्रकार दौड़ते थे मानो उड़ रहे हों। उनकी रफ़्तार से ऐसा प्रतीत होता था मानो वे पानी के ऊपर चल न रहे हों वरन उड़ रहे हों। प्रसिद्ध हिन्दू राजपूत राजा महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक के बारे में भी



कई किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं कि वह हाथी के बराबर ऊँचा था। दरअसल चेतक के मुख पर हाथी की सूँड वाला मुखौटा लगाया जाता था जिससे वह एक हाथी के समान प्रतीत होता था। महाराणा प्रताप और उनके चेतक के संबंध में तो कवियों ने कविताएँ भी लिखी हैं।

आज बदलते आधुनिक यातायातों के साधनों की दौड़ में घोड़ा गाड़ी, इक्का, विक्टोरिया (फिटन) या ताँगा पिछड़ता नज़र आता है। एक समय था जब घोड़ा गाड़ी या ताँगा अपने आप में एक क्षण का विषय हुआ करता था। घोड़ा गाड़ियों की दौड़ प्रतियोगिताएँ हुआ करती थीं। लोग घोड़ों को अपनी संतान की तरह पालते थे। उन्हें बड़े प्रेम से अस्तबल में रखा जाता था तथा उनको परिवार का ही एक अंग माना जाता था। भारतीय सिनेमा में घोड़ा गाड़ियों का भरपूर प्रयोग हुआ है। कई भारतीय सिनेमा के चलचित्र जैसे मर्द, नया दौर, शोले, मुग़ले–आज़म, कलंक इत्यादि बहुत ढेर सारे इन्हीं सब घोड़ा गाड़ियों के उपयोग से भरे हुए हैं।

युग बदलते गए और मानव द्वारा उपयोग सवारी साधन भी। आज के इस बदलते और विकसित होते दौर में ताँगा का प्रयोग यदा–कदा या शायद बिल्कुल भी देखने को नहीं मिलता है। आज के विकसित यातायात के साधन चाहे वो मोटरकार हो या हवाई जहाज सभी ने विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों जैसे– ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण इत्यादि से पर्यावरण को दूषित कर दिया है। आज तक कभी घोड़ा गाड़ी से किसी प्रकार के प्रदूषण का वर्णन नहीं मिलता है।

घोड़ा गाड़ी एक सवारी का साधन ही नहीं वरन एक संस्कृति है। जिसको बदलते आधुनिक युग ने बिल्कुल से नकार–सा दिया है। यह एक बिना प्रदूषण फैलाने वाली सवारी संस्कृति है। मानव स्वयं की सुलभता के चक्कर में अपनी महत्वपूर्ण संस्कृतियों से दूर होता जा रहा है। मानव स्वयं को विकसित तो कर रहा है, लेकिन साथ–ही–साथ अपनी पुरानी परंपराओं और संस्कृतियों से दूर होता जा रहा है। आज घोड़ा गाड़ी, ताँगा या इक्का संस्कृति विलुप्त होने की कगार पर है जिसे सरकारों द्वारा भी अनदेखा किया जा रहा है। इक्का गाड़ी और घोड़ों के कई फ़ायदे थे जो हमें विभिन्न तरह से लाभान्वित करते थे। एक तो प्रदूषण से मुक्ति रहती थी। दूसरा घोड़े की लीद का खाद और मशरूम की खेती में महत्वपूर्ण योगदान था। आज के बदलते दौर में लोग जल्दी में रहते हैं जिससे विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं। घोड़ा गाड़ी के दौर में दुर्घटनाएँ तो होती ही नहीं थीं और साथ ही साथ लोग सुरक्षित अपने गंतव्य तक पहुँच जाते थे।

भारत में इक्का का प्रयोग तो शायद आधुनिक युग की देन है, लेकिन मुख्यतः घोड़ा गाड़ी का प्रयोग सर्वप्रथम जहाँगीर के समय से माना जाता है। मुग़ल बादशाह

जहाँगीर को अंग्रेज़ व्यापारी सर टॉमस रो द्वारा पहली बार घोड़ों से चलने वाली गाड़ी को भेंट स्वरूप दिया गया। फिर उसके बाद तो घोड़ा गाड़ी का एक युग ही चल पड़ा। घोड़ा गाड़ी से संबंधित चीज़ें और घटनाएँ आज भी हमारे आस–पास मौजूद हैं। इन घोड़ा गाड़ियों का भी अपना एक लंबा इतिहास रहा है। आज भी भारत के कई शहरों और गाँवों में घोड़ा गाड़ी की दौड़ प्रतियोगिता जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। जिनमें प्रयागराज (संगम नगरी), पुष्कर (राजस्थान) इत्यादि शहर प्रसिद्ध हैं। शौक़ीन लोग आज भी ताँगा दौड़ प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और इन पर बाज़ियाँ खेलते हैं। दौड़ जीतने वाली घोड़ा गाड़ी को इनाम में शील्ड, मेडल, प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता है। आज के दौर में भी पुष्कर में घोड़ों को ख़रीदने और बेंचने के लिए प्रत्येक वर्ष एक बहुत बड़े मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें भारी संख्या में घोड़ों की ख़रीद–फ़रोख़्त की जाती है। मेले में घुड़सवारी और ताँगा दौड़ जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के शौक़ीन लोगों की भारी भीड़ जमा होती है। मेले में देश–विदेश के उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ नस्ल के घोड़ों को ख़रीदने व बेचने के लिए देश–विदेश के लोग भारी संख्या में एकत्रित होते हैं।

कभी शानो–शौक़त की सवारी कहे जाने वाले इक्के व ताँगे जैसे आज गुम से हो गए हैं। कभी इक्के व ताँगे की सवारी राजशाही सवारी मानी जाती थी। जैसे–जैसे समय का पहिया घूमा लोग आधुनिक संसाधनों की ओर बढ़ने लगे। अब गाँव–गाँव, घर–घर दुपहिया व चारपहिया वाहनों की बाढ़–सी आ गयी है। पहले लोग जहाँ इक्के व ताँगे पर बैठकर शौक़ से यात्रा किया करते थे, वहीं अब लोग इस सवारी पर बैठना अपनी मर्यादा के ख़िलाफ़ व शान में गुस्ताख़ी समझते हैं। नवाबी शहर के इतिहासकारों की मानें तो ताँगा सार्वजनिक यातायात का सबसे पुराना साधन रहा है। यह साधन सबसे अधिक समय तक टिकाऊ रहा है। इसका चलन नवाबी काल से शुरू हुआ था और आज़ादी के बाद भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए यह लोगों की पहली पसंद बना रहा। जगह–जगह सड़कों के किनारे, चौराहों पर घोड़ों की प्यास बुझाने के लिए चरही बनी रहती थी। कभी देश में इक्के व ताँगों का दौर था। सड़कें ऊँची–नीची होने की वज़ह से रिक्शा चलाना असंभव–सा था। बड़े–बड़े घरानों के पास निजी ताँगे होते थे। उस समय घोड़े–घोड़ियों व उनका दाना सस्ता उपलब्ध होता था। आज के समय में ताँगा चालकों की आजीविका का साधन समाप्ति के कगार पर है। ताँगा चालक और उनके घोड़े एक अभिशप्त जीवन जीने को मज़बूर हैं।

सरकार की अनदेखी और उदासीनता तथा मानव विकास की दौड़ में किस प्रकार इस संस्कृति को खोया जा रहा है, इसका दृश्य भारत या यूँ कहें कि विश्व के सभी महानगरों, छोटे शहरों और लगभग 98 प्रतिशत गाँवों–देहातों में देखा जा रहा है। कभी राजा–महाराजाओं की शान कहलाने वाली ताँगे की सवारी आज इतिहास के पन्नों में दफ़न–क़ैद होने को मज़बूर है। सभी महानगरों, शहरों इत्यादि में रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड से बड़ी संख्या में संचालित होने वाली ताँगा गाड़ी कभी दूर–दराज़ से आने वाले यात्रियों के आकर्षण का केंद्र तो थी ही, साथ–ही–साथ धार्मिक तीर्थस्थलों के लिए प्रदूषण मुक्त सवारी थे। गुड़–चना खाकर टिक–टिक, खन–खन की आवाज़ करते हुए सवारियों से भरे ताँगे को खींचकर सवारियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाने वाले तंदुरुस्त घोड़े आज अपनी दुर्दशा की कहानी दर्शा रहे हैं–कह रहे हैं। बिना प्रदूषण, दुर्घटना मुक्त और किसी भी जीव को नुक़सान न पहुँचाने वाले इस आवागमन के साधन से अपनी जीविका चलाने वाले ताँगा चालक भी अब सरकारी उपेक्षा से त्रस्त हैं। ताँगा चालकों का कहना है कि परिवार का ख़र्च वहन करना ही मुश्किल हो गया है तो इन घोड़ों की खुराक का इंतज़ाम कैसे होगा? चालकों का कहना है कि भाग–दौड़ के इस जीवन में हर व्यक्ति समय के अभाव में मशीनी गाड़ियों में सवारी करने को मज़बूर है।

दूसरी ओर संतों और बुद्धिजीवियों का कहना है कि सरकार संस्कृति और विरासत को ख़त्म करना चाहती है, उनका आरोप है कि सरकार शहर को हाईटेक बनाने के लिए प्रदूषण फैलाने वाली गाड़ियों को तो लाइसेंस–परमिट दे रही है, परंतु ग़रीब ताँगा चालकों की आजीविका के साधन को ख़त्म कर रही है। बुद्धिजीवियों का कहना है कि पर्यावरण के अनुकूल इस साधन की दुर्दशा को देखते हुए सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करके इनकी स्थिति सुधारने के लिए पहल करनी चाहिए। आज आवश्यकता है कि सरकार और हम सभी मिलकर इस विलुप्त होती विरासत–संस्कृति को बचाने का प्रयास करें, नहीं तो यह संस्कृति गिद्धों, बाघों, शेरों और विलुप्त हो चुकी विभिन्न वनस्पतियों की प्रजातियों की तरह विलुप्त हो जाएगी और आने वाली पीढ़ी इसे सिर्फ़ सिनेमा के चलचित्रों पर ही देख पाएगी, वास्तविकता में नहीं। इसको बचाना इसलिए और भी आवश्यक है, क्योंकि ये हमारी संस्कृति/धरोहर/विरासत है। जैसे आज ताजमहल, कुतुबमीनार, लालकिला, चारमीनार, मंदिर, मस्जिद और विभिन्न तीर्थ स्थलों इत्यादि को हमारी सरकार और हम संरक्षण प्रदान कर रहे हैं, ठीक उसी तरह ताँगा संस्कृति–इक्का विरासत को हमें और सरकार को संरक्षण प्रदान करने की भरपूर आवश्यकता है, क्योंकि इनके विलुप्त होते ही हो जाएगा एक सुनहरे युग का अंत। मरण हो जाएगा एक संस्कृति का और क्षरण हो जाएगा एक विरासत का। विलुप्त हो जाएगी एक और धरोहर। अंत हो जाएगा एक और सभ्यता का जो देश, समाज और पर्यावरण के लिए एक आवश्यक अंग है।

अगर हम ताँगे के इतिहास में जाएँगे तो पता चलता है कि इस सवारी ने युगों को ढ़ोया है...बदलते देखा है, लेकिन ये इनकी सेवाओं की उपेक्षा की हद है कि इतिहास में इसका कहीं कोई ज़िक्र तक नहीं किया गया। आइए हम सब मिलकर प्रयास करते हैं इस इतिहास को बचाने का, सँवारने का, सँजोने का और इसको उभारने का। ताँगे को इतिहास के पन्नों में दफ़न न कर इसके

युग को वापस लाने का एक प्रयास करते हैं जिससे शायद हम लौट सकें उसी ताँगे के एक स्वर्णिम प्रदूषण मुक्त युग में और आने वाली पीढ़ी को दे सकें एक स्वर्णिम और प्रदूषण मुक्त भविष्य। आइए चलिए मिलकर बचाने का एक छोटा–सा प्रयास करते हैं अपनी ताँगा संस्कृति, इक्का विरासत और घोड़ा गाड़ी धरोहर को जिससे हम पुराने समय में शायद फिर लौट सकें और जी सकें वही पुराने युग के सुनहरे लम्हें और यादों को...।

आज जब भी मैं किसी इक्के को सड़क पर कभी–कभार सरपट दौड़ते देखता हूँ ये कुछ पंक्तियाँ गुनगुनाते हुए अनायास ही निकल आती हैं :–

मैं हूँ
दो पहिया ताँगा,
खुश हूँ देखकर...
दूसरों के सुखों का सुख..
मैंनें समय ढोया, बागियों को ढोया
नवाबों व बेगमों को प्रश्रय दिया...
गन्तव्य तक पहुँचाया...
उबड़–खाबड़ सड़कों पर...
अंग–अंग चकनाचूर कर बस...
यूँ ही चलता रहा...
गाँव की पगडंडी से...
शहरी सड़कों तक...
जहाँ हाँका गया...वहाँ गया...
न कोई गिला, न कोई शिकवा...
मैं नहीं कहता कि मैं नहीं होता तो
ये नहीं होता...वो नहीं होता...
लेकिन अगर मैं नहीं होता
तो शायद इतिहास नहीं होता...
इतिहास का साक्ष्य नहीं होता...।

✍ **सुभाष चन्द्र**
मुहल्ला :- शिव नगर,
पोस्ट :- अल्लापुर,
थाना :- जार्ज टाउन,
जिला :- प्रयागराज,
राज्य :- उत्तर प्रदेश,
पिन नंबर :- 211006
वार्तासूत्र :- 06392798774, 09532188761
ई-मेल :- subhashgautam711@gmail.com

मकर संक्रांति पर ईश्वरीय संदेश

भारत में पूरे वर्ष जनवरी से दिसंबर तक कोई ना कोई त्यौहार मनाए जाते रहते हैं। इसमें शुरूआत जनवरी से होती है और जनवरी पहला त्यौहार मकर संक्रांति का लेकर आता है। यह एक ऐसा त्यौहार है जो पूरे भारतवर्ष में अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग तरीक़े से मनाया जाता है। मकर संक्रांति के लिए कहा गया है कि इस दिन सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है। इसी को उत्तरायण भी कहा जाता है। इसी दिन से दिन धीरे–धीरे बढ़ना शुरू होता है। इस दिन तिल का भी बहुत महत्व रखता है। कहा जाता है मकर संक्रांति का दिन पूरे वर्ष का सबसे ठंडा दिन होता है और तिल गर्म होता है। तिल का स्वाद कड़वा होता है। तिल का महत्व इसलिए भी है कि इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश कर उत्तरायण की ओर बढ़ता है अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने लगता है और धीरे–धीरे तिल के समान रोज़ बढ़ते–बढ़ते उत्तरायण अर्थात् पूर्ण दिवस बड़ा हो जाता है मार्च माह के अंदर, इसलिए भी मकर संक्रांति का बड़ा महत्व है। शास्त्र हमें यह भी बताते हैं कि भीष्म पितामह जी ने इसी दिन स्वेच्छा से अपनी देह का त्याग किया था। कहा जाता है जो आत्माएँ इस दिन देह का त्याग करती हैं वे सीधा स्वर्ग अर्थात् देव लोक पहुँच जाते हैं। अब हम इसे थोड़ा आध्यात्मिकता से देखें तो पता चलता है कि जब हम अंधकार से प्रकाश की ओर जाते हैं अर्थात् परमात्मा इस सृष्टि पर जब द्वापर और कलयुग के अंत में जबकि यह संसार में अज्ञान अंधकार का समय होता है। तब कलयुग के अंत में आकर ज्ञान सूर्य परमपिता ज्ञान का अमृत देने आते हैं। इससे धीरे–धीरे संसार का परिवर्तन होता है और सतयुगी देवी सृष्टि की स्थापना होने लगती हैं। इसी का प्रतीकात्मक स्वरूप मकर संक्रांति है। जैसे–जैसे मन का अंधकार मिटता जाता है, आत्माओं में ज्ञान बढ़ता जाता है तो वह देव के समान कर्म करने लगता है।

दूसरी बात है कि इस दिन जो तिल और गुड़ का जो महत्व है। अर्थात् तिल कड़वा और गुड़ अर्थात् मीठा। एक–दूसरे के साथ खुशियाँ बाँटने के लिए हम तिल–गुड़ खिलाते हैं। परमात्मा भी हमें यही सिखाती है कि सभी मनुष्य आत्माओं के अंदर अनेक प्रकार की बुराइयाँ हैं। अनेक प्रकार की कमज़ोरियाँ हैं। यदि हम इसे ज्ञान के आधार से परिवर्तित करें तो हम भी धीरे–धीरे प्रकाश की ओर बढ़ते जाएँगे। हमारे मन की भावना धीरे–धीरे ठीक एक तिल के समान, छोटे से स्वरूप से हमारे परिवर्तन का कार्य प्रारंभ हो सकता है। अर्थात् अच्छे संकल्प करें, मीठे बोल बोले, अच्छा व्यवहार करें और सब के लिए शुभ भावनाएँ रखें। इस प्रकार से हम छोटी–सी शुरूआत कर परिवर्तन का एक क़दम उठा सकते हैं तो हम पूरा ही वर्ष गुड़ के समान मीठे बन जाते हैं तो अवश्य ही हमारे अंदर देव कुल के संस्कार पुनः स्थापित हो जाते हैं और सृष्टि पर सतयुगी साम्राज्य पुनः स्थापित हो जाता है।

इसी दिन पतंग भी उड़ाया जाता है। पतंग उड़ाना इस बात का प्रतीक है कि जब भी कोई ख़ुशी की बात होती है या कोई भी ख़ुशी का असर होता है तो मनुष्य ख़ुशी में नाचता है। हम भी तो अज्ञानता से ज्ञान की ओर जाते हैं, दुःख से सुख की ओर जाते हैं, रात से दिन की ओर जाते हैं तो या ख़ुशी अर्थात् पतंग उड़ाने के जैसा हो जाता है। यदि हम अपने आपको प्रतिदिन ख़ुश रखते हैं। प्रतिदिन हम अच्छाइयों को अपनाकर एक–दूसरे के साथ ख़ुशियों को बाँटे तो एक–दूसरे के जीवन से दुःख को दूर कर सकते हैं।

जिस प्रकार से तिल और गुड़ के लड्डू को बनाने के लिए हमें पाँचों ही ऊँगलियों का सहयोग लेना पड़ता है। यह हमें यह सिखाता है कि यह सहयोग का भी प्रतीक है और एकता का भी। अगर किसी की कड़वी भावनाएँ हैं। किसी का कड़वा स्वभाव संस्कार है, किसी की नकारात्मक सोच है जो ऐसे लोगों के साथ मिलकर भी हम अपनी तरफ़ से मीठापन अपनी तरफ़ से शुभ सोच और अपनी तरफ़ से प्यार भरे व्यवहार करें तो इन दोनों को मिलाकर तिल और गुड़ के समान मिठास ला सकते हैं। ठीक इसी प्रकार संसार को सुखमय बनाने का भी किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है, परंतु जब हम और आप मिलकर एक लक्ष्य पर चलते हैं। एक शुभ संकल्प करते हैं तो अवश्य ही हम सुखमय दुनिया ला सकते हैं। मकर संक्रांति का त्यौहार हमें यही शिक्षा देता है।

✍ **बी.के. नम्रता राजयोगिनी**
प्रवक्ता : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय,
मधुशाला रोड, जपला, पलामू,
झारखंड–822116



किसान



चूल्हा घर का तब जला है।
किसान धूप में जब तपा है।
धरा भी प्यासी रहती तब तक
हो चाहे फिर कितनी वर्षा
लहलहाती, हरी–भरी तभी वो
पसीना किसान का जब मिला है।
करता वो अपनी निष्ठा से जो,
हिस्सा कहाँ, कब उसका मिला है।
महाजन के शोषण अँधाधुँध
मौसम ने भी ख़ूब छला है।
सत्ता का मोहरा वो बन गया
ना चुका पाए, कर्ज़ा इतना चढ़ा है
सबकी भूख का जो रखे ध्यान
भूखा उसका परिवार रह जाता है
जाने कब ये दुविधा टलेगी
अपनों ने ही दंगा बढ़ा रखा है
सोचो कभी विवशता किसान की
हालातों ने उससे ख़ूब खेला है।
मत करो अब और तमाशा
उठाया उसने रोटी का ज़िम्मा है
अस्तित्व नहीं है उसका कोई
पर सच है, देश ये उसी पर टिका है।
मनाते आजकल ना जाने 'डे' कितने
उसका तिहाई भी ना किसान को मिला है।
अपना लेता अंततः फाँसी का फंदा
'कृषि प्रधान देश' का बस तमगा लगा है।

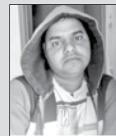


विनीता पुंढ़ीर
म. नं. :- 66/67, सुभाष पार्क,
पोस्ट :- उत्तम नगर,
थाना :- बिन्दापुर, नई दिल्ली-110059
वार्तासूत्र :- 09911379651

मैं सब सीखूँगा



मैं चिड़ियों के गीत सुनूँगा
मैं चिड़ियों के गुण गुनूँगा
चहक–चहक कर उनका उड़ना
भिन्न–भिन्न ध्वनि में उनका कहना
मैं सब सीखूँगा...
सवेरे–सवेरे पूरब की लाली देखूँगा
बाग–बगीचों में तितलियों के पर गिनूँगा
पत्तों पर बिखरीं चाँदी–सी ओस की बूँदें
जाग उठीं कोमल कलियाँ जो थी आँखें मूँदें
मैं सब सीखूँगा
मैं सब देखूँगा...
मोर–मोरनी का मनोरम नृत्य
नीड़ निर्माण बया का अद्भुत कृत्य
भँवरों का मधुर गान
पपीहे की अमर तान
मैं सब देखूँगा...।



मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
ग्राम :- रिहावली डाक तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा-283111
वार्तासूत्र :- 09627912535

ख़ुद का विश्वास है ये ज़िंदगी

हर पल मुस्कुराइये, बड़ी ही ख़ास है ये ज़िंदगी।
सुख हो या दुःख ख़ुद का विश्वास है ये ज़िंदगी।

ना जलो यहाँ किसी से ना उदास हो यहाँ कभी,
ज़िंदादिली से जीने का अहसास है ये ज़िंदगी।

काँटे चुभते तो बहुत हैं हर एक शख़्स को यहाँ,
फूलों की ख़ुशबू–सी कटिहास भी है ये ज़िंदगी।

सच्च कड़वा होता है ज़हर–सा लगता है एक बार,
सच्चाई स्वीकारो बड़ी ख़ुशनसीब है ये ज़िंदगी।

वज़ह ना ढूँढ़ो मुस्कुराने की है लिबास ज़िंदगी,
बेवज़ह मस्कुराइये, हर एक साँस है ये ज़िंदगी।

शिकवे ना शिक़ायत कीजिये यहाँ हर किसी से,
इरादों से इसे सँवारिये ना करो बेबस ये ज़िंदगी।

सड़क के माफ़िक बड़ी ही घुमावदार है मंज़िलें,
होशियारी व सूझबूझ का परिहास है ये ज़िंदगी।

नापकर देखो ज़मीं को खुले आसमाँ तले 'विजय',
मीठे सपनो का संचार और संसार है ये ज़िंदगी।



विजय शिवप्रसाद 'पुरोहित'
चाँदखेडा, अहमदाबाद, गुजरात-382424
वार्तासूत्र :- 08849053087

अनुनय

सुनो...
सुन रहे हो ना
यूँ उदास न रहो
मुझे याद करो
चेहरे पर
हँसी आ जायेगी!

देखो...
यूँ ख़ामोश न रहो
मुझसे बातें करो
ख़्वाब में ही सही
सुकून मिल जायेगा।

सोचो...
जो वक़्त गुजारा
साथ–साथ हम दोनों ने
याद करके
ख़ुश हो जाओगे।
भूलो...
अब उस वहम् को
जिसे रखते हो पास
पहले जैसा ही
पा लोगे मुझे...!



मोहिनी निखिल गुप्ता
निखिल ट्रेडर्स,
मोहम्मदी रोड (सरकारी अस्पताल के पास),
गोला गोकरन नाथ (खीरी),
उत्तर प्रदेश-262802

संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज़ नहीं है, यह जीवन का एक वाहन है : बी. आर. अंबेडकर

हमारा संविधान भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य में गठित करने का संकल्प है। यह वास्तव में, लोगों को सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता हासिल करने के लिए एक वादा है। विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता स्थिति और अवसर की समानता और सभी के बीच बढ़ावा देने के लिए बिरादरी, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता का आश्वासन देता है। डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने विभिन्न प्रतिबद्ध ताओं को रेखांकित करते हुए मुख्य अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है। उन्होंने कहा, ''संविधान को तैयार करने में हमारी दोहरी प्राथमिकता है राजनीतिक लोकतंत्र के रूप में, और यह बताने के लिए कि हमारा आदर्श आर्थिक लोकतंत्र है और यह भी बताना है कि जो भी सरकार सत्ता में है, उसे यह लाने का प्रयास करना चाहिए।'' भारत का संविधान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र के लिए एक संरचना तैयार करता है। यह शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीक़ों से विभिन्न राष्ट्रीय लक्ष्यों को सुनिश्चित करने और प्राप्त करने के लिए भारत के लोगों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। यह केवल क़ानूनी पांडुलिपि नहीं है, बल्कि, यह एक ऐसा वाहन है जो समय की बदलती ज़रूरतों और वास्तविकताओं को समायोजित और अनुकूल करके लोगों के सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने के लिए राष्ट्र को सक्षम बनाता है। क़ानून के समक्ष समानता और क़ानूनों की समान सुरक्षा संविधान का सार है। साथ ही, संविधान समाज के वंचितों की ज़रूरतों और चिंताओं के प्रति भी संवेदनशील है। भारत का संविधान भूमि का सर्वोच्च नियम है, जिसके आधार पर संपूर्ण शासन प्रणाली काम करती है। हमारे पूर्वजों ने संसदीय लोकतंत्र को नवजात गणराज्य के लिए शासन प्रणाली के रूप में चुना था। लोकतंत्र की संसदीय प्रणाली को चुनने का कारण डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने इन शब्दों में स्पष्ट किया था और कहा, ''...ग़ैर–संसदीय प्रणाली के तहत, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में मौज़ूद है, कार्यकारी की ज़िम्मेदारी का आकलन आवधिक है। यह मतदाताओं द्वारा किया जाता है। इंग्लैंड में, जहाँ संसदीय प्रणाली प्रबल है, ज़िम्मेदारी का मूल्यांकन कार्यपालिका द्वारा दैनिक और आवधिक दोनों स्तर पर होता है। दैनिक मूल्यांकन संसद



सदस्यों द्वारा प्रश्नों, संकल्पों, अविश्वास प्रस्ताव, स्थगन गतियों और अभिभाषणों पर बहस के माध्यम से किया जाता है। आवधिक मूल्यांकन चुनाव के समय मतदाताओं द्वारा किया जाता है। हर पाँच साल या उससे पहले भी यह हो सकता है। ज़िम्मेदारी का दैनिक आकलन जो अमेरिकी प्रणाली के तहत उपलब्ध नहीं है, यह महसूस किया जाता है, यह आवधिक आकलन की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है और भारत जैसे देश में कहीं अधिक आवश्यक है। संसदीय प्रणाली की कार्यकारिणी की सिफ़ारिश में अधिक स्थिरता के लिए अधिक ज़िम्मेदारी को प्राथमिकता दी गई है।''

1922 में महात्मा गांधी ने ज़ोर दिया कि भारत के भाग्य का निर्धारण स्वयं भारतीयों द्वारा किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, ''स्वराज ब्रिटिश संसद का एक स्वतंत्र उपहार नहीं होगा। यह संसद के एक अधिनियम के माध्यम से व्यक्त की गई भारत की पूर्ण आत्म–अभिव्यक्ति की घोषणा होगी, लेकिन यह केवल भारत के लोगों की घोषित इच्छा का एक विनम्र अनुसमर्थन होगा। अनुसमर्थन एक संधि होगी, जिसके लिए ब्रिटेन एक पार्टी होगी। ब्रिटिश संसद, जब समझौता होगा, स्वतंत्र रूप से चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से भारत के लोगों की इच्छाओं की पुष्टि करेगा।'' महात्मा गांधी की दृष्टि संविधान में आध्यात्मिक रूप से निहित थी, जिसे संविधान की प्रस्तावना में भी पढ़ा जा सकता है।

भारत के संविधान की प्रस्तावना उन मूलभूत मूल्यों, दर्शन और उद्देश्यों को दर्शाती और प्रतिबिंबित करती है जिन पर संविधान आधारित है। संविधान सभा के सदस्य पंडित ठाकुर दास भार्गव ने प्रस्तावना के महत्व को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया, ''प्रस्तावना संविधान का सबसे क़ीमती हिस्सा है...यह संविधान की आत्मा है...यह संविधान की कुंजी है...यह संविधान में स्थापित एक गहना है...यह एक उचित मापक है जिसके साथ कोई भी संविधान के मूल्य को माप सकता है।''

अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर, एक संवैधानिक विशेषज्ञ, जिन्होंने संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्होंने कहा, ''भारतीय लोगों के बड़े पैमाने पर अज्ञानता और अशिक्षा के बावजूद, विधानसभा ने आम आदमी में प्रचुर विश्वास और लोकतांत्रिक शासन की अंतिम सफलता और पूर्ण विश्वास में वयस्क मताधिकार के सिद्धांत को अपनाया है। वयस्क मताधिकार के आधार पर लोकतांत्रिक सरकार की

शुरूआत आत्मज्ञान लाएगी और भलाई, जीवन स्तर, आराम और आम आदमी के सभ्य जीवन को बढ़ावा देगी....यह कहा जा सकता है कि इतिहास में पहले कभी भी इस तरह के प्रयोग इतने साहसपूर्वक किए नहीं गए हैं।''

महात्मा गांधी ने भारत के नए संविधान की कल्पना भारत के विशिष्ट और विशेष परिस्थितियों के लिए लागू सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में की थी। 1931 की शुरूआत में, गांधीजी ने लिखा था, ''मैं एक ऐसे संविधान के लिए प्रयास करूँगा जो भारत को दासता और संरक्षण से मुक्त करेगा। मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूँगा जिसमें सबसे ग़रीब यह महसूस करेगा कि यह उनका देश है, जिसके निर्माण में उनकी प्रभावी आवाज़ है। एक ऐसा भारत जिसमें कोई उच्च वर्ग या निम्न वर्ग का व्यक्ति नहीं है, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय सही सामंजस्य से रहेंगे। अस्पृश्यता के अभिशाप के लिए ऐसे भारत में कोई जगह नहीं हो सकती है। हम बाक़ी दुनिया के साथ शांति से रहेंगे और न ही शोषण करेंगे और ना ही शोषित होंगे....यह मेरे सपनों का भारत है जिसके लिए मैं संघर्ष करूँगा।''

संविधान लोगों को उतना ही सशक्त बनाता है जितना लोग संविधान को सशक्त बनाते हैं। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने बहुत अच्छी तरह से महसूस किया कि एक संविधान, चाहे कितना भी अच्छा लिखा गया हो और कितना ही विस्तृत क्यों न हो, उसे लागू करने और उसके मूल्यों द्वारा जीने के लिए सही लोगों के बिना बहुत कम होगा और इसमें, उन्होंने आने वाली पीढ़ियों पर अपना विश्वास ज़ाहिर किया। आज हमें गर्व महसूस करने का पूरा अधिकार है, क्योंकि हमारे संविधान को लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के साथ–साथ एक समावेशी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए दुनिया भर में मान्यता प्राप्त है।

सलिल सरोज



समिति अधिकारी : लोकसभा सचिवालय
(नई दिल्ली)

मेरे शहर की बात



''कनक कटोरी–सी चाँदनी रात में,
तारों की खीर छलक रही है।
नभ छूता रेस्टोरेंट की इमारत,
देशी–विदेशी व्यंजन रख पुलक रही है...
और पास जल रही है
एक भिखारन की आँत,
है हुज़ूर, मेरे शहर की बात।

सूरजरूपी अंगार गिरि से,
धूप की सरिता निकल रही है।
कोलतार की स्लेटी सड़क फिर,
पूरी आँच बेमन निगल रही है...
और पास दे रहा है
एक श्रमिक इन्हें मात,
है हुज़ूर, मेरे शहर की बात।

प्रेम का विशाल सागर,
अब असमय ही सूख रहा है।
हवस की आँधी चल पड़ी,
वफ़ा का ज्योत बुझ रहा है।
और पास रो रहा है
झुरमुट में पड़ा नवजात,
है हुज़ूर, मेरे शहर की बात।''

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'



गंजपारा, वार्ड क्र. :- 11,
शिव मंदिर के पास,
स्टेडियम रोड, बालोद,
छत्तीसगढ़-491226
वार्तासूत्र :- 09753269282

आक्रोश का अंत



चारों तरफ़ आक्रोश फैल गया था, क्योंकि एक देश के जाने–माने कलाकार की हत्या उसकी क़ाबिलियत को ख़त्म करने के लिये की गयी थी। मेरे मुहल्ले में जो लोग अपने आस–पास के चेहरे को पहचानते भी नहीं थे, न कभी एक–दूसरे से मिलते–जुलते थे। आज इस घटना की घोर निंदा करते सड़क पर नज़र आ रहे थे। वे लोग जो घर के खिड़कियों–दरवाज़ों को पल–पल बंद करते रहते थे। वे लोग भी झूठे अहंकार में सोशल मीडिया में अपनी पहचान बनाने को बेताब नज़र आ रहे थे। ऐसा लग रहा था, मानो इस घटना से कुछ ज़्यादा ही मर्माहत हो गये थे। आज हरेक की ज़ुबाँ से यह सुनने को मिल रहा था कि न्याय हम लेकर रहेंगे, यह नाइंसाफ़ी है, यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता...।

और इसी बीच एक दिन हमारे घर के पास रहने वाले चंदन ने अपनी बहन से छेड़खानी करने वाले को डाँट दिया था.. वह चार–पाँच गुण्डे को लेकर उसके घर पहुँच गया था और चंदन को बुरी तरह लहूलुहान कर दिया था...पुलिस भी आई... रपट भी लिखा दी गई, लेकिन कोई गवाह बनकर सामने आने को तैयार नहीं था।

अब सभी लोग चुपचाप अपने–अपने घरों में दुबक गये थे, कहीं कोई चर्चा नहीं हो रही थी...अब कोई इंसाफ़ नहीं माँग रहा था...सब ख़ामोश थे।

संजय श्रीवास्तव



मुहल्ला :- किसान कॉलोनी,
पोस्ट :- अनीसाबाद,
थाना :- फुलवारी शरीफ,
जिला :- पटना, बिहार-800002
वार्तासूत्र :- 09835298682

सौगंध

गाँव में मज़दूरों को बारह महीने प्रतिदिन काम नहीं मिलता। गर्मी के दिनों में कुआँ का पानी सूख जाने के बाद किसान नरेगा योजना में मज़दूरी करने जाते। अधिकांश मज़दूर गर्मी के दिनों में चौक–चौराहे पर ताश खेलते हैं। इनमें से बहुत ऐसे हैं, जिनके पिता की ज़मीन बहुत ज़्यादा है। खेत की सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था नहीं। भगवान भरोसे बरसात में धान की खेती करते हैं।

प्रदीप कुमार अगहन–पूस माह में नदी के पानी से खेत की सिंचाई कर फ़सल तैयार करता। उस समय बाज़ार में सब्जी खुदरा दस–पाँच रुपये प्रतिकिलो बिकती। मुश्किल से अगहन–पूस माह की खेती से पाँच–दस हजार मुनाफ़ा होता। बरसात होने पर धान की पैदावार अच्छी होती है। तब आवश्यक कामों को पूरा करने में कुछ हद तक कठिनाई नहीं होती, लेकिन अकाल पड़ने पर समस्याओं का पहाड़ टूट पड़ता। एक वर्ष अकाल पड़ गया था। प्रदीप ने साल भर मिस्त्री के साथ लेबर का काम करके दो वक़्त की रोटी का जुगाड़ किया था। पिता गाय–बैल और बकरी चराने जाते। माँ घर में खाना बनाती। माँ बरसात के समय मज़दूरों को खाना बनाकर खिलाने में असमर्थ महसूस करने लगी। माँ की स्थिति को देखते हुए शादी कर ली।



आषाढ़–सावन में जेठ माह की तरह सूरज तपता रहा। खेत में धान की रोपाई नहीं हो पाई। किसी तरह पूस–माघ तक नदी किनारे खेती करके और दो–चार बकरे बेचकर परिवार चला लिया। नदी का पानी सूख जाते ही प्रदीप बेसहारा हो गया। नदी–नाले के अलावे खेती करने का कोई स्थाई प्रबंध नहीं। सरकारी कुआँ मंजूर कराने के लिए रिश्वत के दस हज़ार रुपये नहीं। प्रदीप काम खोजने लगा। गाँव के किसान रंजन का पुत्र चंद्रप्रकाश कुमार दस साल से बम्बई में काम करता है। साल–दो साल में एक बार घर आ जाता है। वह घर आया हुआ था। किराने की दुकान में दोनों की मुलाक़ात हो गई। दोनों बचपन के दोस्त और रिश्ते में भाई–भाई लगते हैं। चंद्रप्रकाश छोटा है। चंद्रप्रकाश ने प्रदीप से पूछा ''आजकल खेती–बाड़ी में मुनाफ़ा अच्छा हो रहा है, न दादा!''

''अरे भाई! मुनाफ़ा की बात ही मत करो! पेट चलाना मुश्किल हो गया है। बरसात नहीं होने की वज़ह से धान की खेती भी नहीं हुई और नदी–नाले भी जल्द ही सूख गये। अब तेरे जैसा बाहर जाकर काम करना चाह रहा हूँ, लेकिन यही सोचकर घबरा जाता हूँ कि शहर जाने के बाद मुझे कहाँ काम मिलेगा? कौन काम देगा?''

''अरे दादा! शहर में हज़ार काम है। तुम काम मिलने या नहीं मिलने की चिंता छोड़। तुम केवल इतना बता कि पहले कुछ दिनों तक लेबर का काम कर पाओगे! बाद में तुम्हे मिस्त्री बना दूँगा! पहले मैंने भी छह महीने से साल भर तक लेबर का काम किया था। फिर धीरे–धीरे मिस्त्री का। अब मैं वहाँ राजमिस्त्री कहलाता हूँ।''

''मुझे केवल काम मिल जाए भाई! कोई भी काम कर लूँगा!''

''अच्छा ठीक है, दादा! तुम केवल जाने की तैयारी करो! दो दिन के बाद ही जाना है। मेरे साथ इस बार साठ–सत्तर लड़के जाने को तैयार हैं। लगभग सभी ने रेल का टिकट भी बुक करवा लिया है। तुम भी कल तक करवा लेना।''

''अच्छा भाई! तुम मुझे ये बताओ कि साठ–सत्तर लड़के को कहाँ काम दे पाओगे?''

''दादा! मैं कह रहा हूँ न! काम की चिंता मत करो! फिर भी भेद जाने बिना तुमको विश्वास ही नहीं होता है, तो लो! तुमको मैं, सच बता ही देता हूँ। मेरे ठीकेदार ने एक सौ आदमी को साथ में लेकर आने का आदेश दिया है। वह दस मंज़िला भवन का निर्माण एक साथ ही बारह भवन का काम हाथ में लिये हुये है जहाँ अनेक प्रकार के मिस्त्री और बहुत सारे लेबर की आवश्यकता है।''

''चंद्रप्रकाश मेरे साथ और एक समस्या है।''

''अब क्या समस्या आ गई? दादा!''

''मेरी शादी को एक वर्ष भी नहीं हुआ है। बीबी के बिना रह पाना बहुत कठिन होगा।''

''अच्छा! इस समस्या का भी मैं समाधान कर देता हूँ।''

''कैसे?''

''मैं, भी साथ में मुन्ना और बीबी को ले जा रहा हूँ। तुम भी साथ में लेकर चलो!''

''तुमने तो कमरा ले लिया होगा, लेकिन हम दोनों जाकर कहाँ रहेंगे?''

''अरे दादा! तुम केवल मेरे से दो माह ही बड़े हो, पर डरते मेरे से बहुत

ज़्यादा हो। जब साथ में भाभी को लेकर चलने को कह रहा हूँ, तो क्या? मैं बिना सोच–समझकर ही बोला। जब तक अच्छा रूम नहीं मिल जाता, तब तक मेरे रूम में रूक जाना। ऐसे भी दो कमरे हैं। तुमको अच्छा लगे तो एक कमरे में रह जाओगे! अब ख़ुश! या और भी कोई दिक्क़त है, तो बोल!''

''ठीक है! तुम दो टिकट बुक करा देना। मैं शाम को घर पैसा पहुँचा दूँगा।''

चंद्रप्रकाश मुन्ना–बीबी, प्रदीप, प्रदीप की बीबी और अन्य सत्तर लड़कों को साथ में लेकर चला जाता है। सत्तर नवयुवकों में से तीस किसान के पुत्र हैं, जिसमें बीस युवक के पिता के पास भगवान भरोसे खेती करने के अलावे अन्य कोई साधन नहीं। दस युवकों के पिता दिन–रात मेहनत करके खेती करते हैं, लेकिन मुनाफ़ा के नाम पर जीरो! जैसे–तैसे दो वक़्त की रोटी और तन ढकने का कपड़ा खरीद पाते। बाक़ी चालीस युवकों में से पन्द्रह युवक लोहार के पुत्र हैं। वे अब पिता के काम से परिवार चलाने में असमर्थ हैं। पहले किसान के अलावे सभी लोग लोहे का सामान लोहार से ही बनवाया करते थे। पर किसान भी अब फाल, कुदाल और कुल्हाड़ी आदि बाज़ार से ख़रीद लेते हैं। उन्हें लोहार के यहाँ बनवाने से कम दाम में अच्छा सामान मिल जाता है। पन्द्रह युवक मछुआरे के पुत्र हैं। जिनके पिता मछली पकड़ने और लकड़ी चिरने का काम करते हैं। नदी–नाले के नहीं भरने की वज़ह से मछली नहीं मिलती। तालाब में मछलियाँ पकड़कर परिवार चलाना संभव नहीं। तालाब मालिक प्रतिकिलो दो सौ रुपये में से डेढ़ सौ रुपये ले लेते हैं। यदि बिका तो प्रतिकिलो पचास रुपया इनकम होगा और यदि दो–चार किलो मछली बच गई तब मूलधन निकालना मुश्किल हो जाता है। लकड़ी चिरने में कुछ मुनाफ़ा कर लेते थे, पर टिम्बर में इनसे कम दाम और लकड़ी की बर्बादी किये बिना चिर देते हैं। अब उन्हें पूर्वज के काम से पेट चलाना नामुमकिन हो गया है। शेष दस लड़कों में से पाँच नाई और धोबी के लड़के हैं। और पाँच बड़े घर के लड़के हैं जो काम करने के बहाने घूमने जा रहे हैं।

बम्बई में सबको काम मिल गया। पहले सब लेबर का काम करने लगे। धीरे–धीरे लेबर से मिस्त्री बन गए। दो–पाँच साल के बाद गाँव आकर शादी करके साथ में बीबी को भी लेकर चले गए। सबकी बीबियाँ क्षमता के अनुरूप काम करने लगीं। कोई कपड़ा, कोई दवा और कोई सिंगार आदि दुकान में, तो कोई नौकरानी और कोई हॉस्पिटल में दाई का काम करने लगी। चंद्रप्रकाश और उनके साथी की ज़िंदगी की गाड़ी बिना रूकावट के चलने लगी। कम इनकम कर पाने वालों के बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते। ये बच्चे सुबह–शाम मकान मालिक के फूल बगान में पाइप से फूल की सिंचाई का काम करते। उन्हें महीने का कॉपी, क़लम और बिस्कुट–टॉफी ख़रीदने भर के पैसे मिल जाते।

देश में महामारी ने दस्तक दे दी। कोरोना वायरस नामक महामारी की चपेट से देशवासियों का जीवन सुरक्षित रखने के लिए, देश के प्रधानमंत्री राज्य सरकारों के सहयोग से लॉकडाउन की घोषणा कर देते हैं। लॉकडाउन में पूँजीपति, व्यापारी और ऑफिसर को छोड़ किसान, मज़दूर और प्रतिदिन कमाने–खाने वालों की ज़िंदगी बेहाल हो गई। इनमें से सबसे बेहाल प्रवासी मज़दूरों की हुई। लॉकडाउन से लेबर और मिस्त्री का काम बंद हो गया। साथ–ही नौकरानी के काम करने वालों को भी काम पर आने के लिए मना कर दिया गया। सब बीबी–बच्चों के साथ रूम में जैसे–तैसे करके महीना चलाते रहे। प्रवासी मज़दूरों को मकान मालिक ने रूम का किराया महीने के तीन तारीख़ तक अदा करने का आदेश दिया। ऐसे समय में लेबर और मिस्त्री ठीकेदार से बाक़ी पैसा और लॉकडाउन का कुछ पैसा माँगने का निर्णय लिया और लॉकडाउन समाप्त होते ही लॉकडाउन का पैसा कम–कम करके हर महीने अदा करते जायेंगे। यह प्रस्ताव चंद्रप्रकाश अपने ठीकेदार से रखा। ठीकेदार ने साफ कहा, ''मैं, बाक़ी पैसा भी लॉकडाउन के समाप्त होने के बाद ही दे पाऊँगा और ध्यान से सुनो! लॉकडाउन का पैसा तो मैं, तुम सबके वापस करने का लाख वादा कर लो! फिर भी नहीं दूँगा। मुझे क्या पता कि तुम सब पैसा लेने के बाद आगे काम करोगे भी या नहीं? आज के बाद दुबारा मुझे फोन मत करना। अन्यथा लॉकडाउन के बाद मैं, काम पर दोबारा बुलाऊँगा भी नहीं!''

ठीकेदार की बातें सुन, चंद्रप्रकाश की बीबी दुविधा में पड़ गई, ''साला! जब महीने में दस–बीस लाख का इनकम ठीकेदार को हुआ। तब किसी को अधिक वेतन नहीं दिया। आज हम सब मज़बूरी में फँसे हैं, तब भी उसे दया नहीं आ रही है। ठीकेदार को एक दिन पैसा ही मार डाले। उन्हें नरक में भी जगह न मिले।'' चंद्रप्रकाश की बीबी ने ठीकेदार को गाली देकर मन की सारी भड़ास निकाल ली। सभी औरत एकजुट होकर अपने–अपने साहब से पैसा उधार में लेने का निर्णय लिया। नौकरानी का काम करने वाली चंद्रप्रकाश की बीबी ने सबसे पहले फोन किया। ज़वाब निराशाजनक ही मिला। मालिक की मैडम ने पैसा देने से इंकार कर दिया। साथ ही साल भर तक काम में नहीं आने का आदेश भी। दुकान में काम करने वाली को भी पैसे नहीं मिले।

मकान मालिक के आदेशानुसार किसी ने किराया अदा नहीं किया। मकान मालिक चार तारीख़ को सुबह आकर रूम से सामान निकाल फेंकता है। चंद्रप्रकाश ने मालिक के पैर पकड़कर कहा, ''मालिक! मुझ जैसे ग़रीब पर दया कीजिए। बाल–बच्चे को लेकर ऐसे समय में मैं कहाँ जाऊँगा? लॉकडाउन के समाप्त होते ही मैं काम करके एक–एक रुपया चुका दूँगा। चाहे तो

आप सूद ही ले लेना, रूम से सामान मत निकालिए।'' मालिक पैर झाड़ते हुए सामान फेंकता है और आगे कहा, ''आज–के–आज रूम ख़ाली करके चले जाओ!'' सामने रह रहा प्रदीप का भी सामान रूम से फेंककर निकाल दिया। दोनों ने साइकिल में कुछ आवश्यक सामान को बाँध लिया और बच्चे–बीबी को बैठाकर मातृभूमि की ओर चल पड़े। अन्य साथी को रास्ते में फोन किया तो पता चला कि वे कल ही निकल गये हैं। सभी ने साइकिल में सामान बाँध लिये हैं और सामान के ऊपर बच्चों को बैठाकर पैदल ही मातृभूमि की ओर चल पड़े हैं।

वैशाख–जेठ की प्रचंड गर्मी में चौथे दिन चंद्रप्रकाश के छोटे लड़के को लू लग गई। उसने सड़क किनारे लगे पेड़ से कच्चा आम तोड़ा और शरबत बनाकर पिला लिया। चेकपोस्ट में मौजूद पुलिस से मदद की गुहार लगायी। पुलिस ने यह कहते हुए इंकार कर दिया कि ''चेकपोस्ट में केवल एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने वालों की हिस्ट्री रजिस्ट्रर में लिखकर रखना, मेरा काम है। प्रवासी मज़दूरों की मदद के लिए सरकार काम कर रही है। जिसके लिए अलग टीम है। तुम सब पहले अपने राज्य सरकार के प्रवासी मज़दूरों की लिस्ट में नाम दर्ज़ करा लो! आगे का काम यहाँ की सरकार की टीम करेगी।''

विवश चंद्रप्रकाश मौन धारण किये साइकिल चलाता रहा। बीबी बीमार पुत्र को गोदी में लिये साइकिल के पीछे बैठी ईश्वर का नाम लेती रही। साथ में प्रदीप भी भूखे–प्यासे साइकिल मंज़िल की ओर दौड़ाता रहा। चंद्रप्रकाश का छोटा लड़का सातवें दिन प्राण त्याग देता है। नदी किनारे खेत की सिंचाई कर रहे, किसान भाई से कुल्हाड़ी माँग कर दोनों ने पेड़ की डाली काट बालक का अंतिम संस्कार किया और पुनः मातृभूमि की ओर चल पड़े। साथ में ला रहे मुड़ी और चिवड़ा भी ख़त्म होने को है। सड़क किनारे लगे आम के पेड़ से अधपक्का आम तोड़कर पेट की क्षुधा को शांत किया। प्रदीप बीबी–बच्चे के साथ पेड़ से सड़क की तरफ़ और चंद्रप्रकाश बीबी–बच्चे के साथ पेड़ की दूसरी तरफ़ सो गये। प्रदीप रात के क़रीब दो बजे उठकर, सुबह के लिए आम तोड़ रहा। एक माल गाड़ी बवंडर की तरह आयी और बीबी–बच्चों को कुचलती हुई चली गयी। बच्चे के मुँह से आवाज़ तक नहीं निकली। पेड़ से उतरकर देखता है कि बीबी बेहोश पड़ी है। दोनों बच्चे का शरीर दो हिस्सों में बँट गया है। छाती और पेट का आधा से अधिक माँस–हड्डी ज़मीन में मिल गये हैं और कुछ गाड़ी के चक्के में फँसकर चले गये। बीबी के दोनों पैर टूटकर चूर–चूर। बीबी बेहोश पड़ी हुई है। प्रदीप रो–रोकर छाती पिटता। क्षणभर में बेहोश होकर ज़मीन में गिर जाता। होश में आते ही चंद्रप्रकाश से कहता ''देख भाई! मेरे बच्चों को क्या हो गया? कुछ बोलते ही नहीं।'' चंद्रप्रकाश पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़े होकर निहार रहा। प्रदीप की घायल बीबी और बच्चों की लाश देख, चंद्रप्रकाश हक्का–बक्का रह गया। मुँह से कुछ बोल ही नहीं पाता। दस मिनट के बाद चंद्रप्रकाश प्रदीप को सँभालने लगा।

सुबह क़रीब दस बजे प्रशासन की गाड़ी आई। मृतकों को ट्रक में लाद दिया गया। प्रशासन प्रदीप की घायल बीबी के पैर में पट्टी करा दी। प्रशासन लाश के ट्रक में ही प्रदीप, प्रदीप की घायल बीबी और साथ में चंद्रप्रकाश, चंद्रप्रकाश की बीबी–बच्चा को भी बैठाकर घर भेज देता है। मातृभूमि पहुँचने से पहले ही लाश से गंध आने लगी। ट्रक में बैठे चंद्रप्रकाश, उसकी बीबी–बच्चों ने मुँह में कपड़ा बाँध लिया। तीसरे दिन उल्टी करने लगे। प्रदीप और उनकी बीबी होश में आते ही लाश के सामने जाकर रोने लगते। दस मिनट के अंदर पुनः बेहोश हो जाते। चंद्रप्रकाश होश में लाने की कोशिश करता। होश में आते ही समझाने की कोशिश करता, पर चंद्रप्रकाश का सारा प्रयास बेक़ार हो जाता। गंध असहनीय होने पर ट्रक ड्राइवर ने दया दिखाकर आगे बैठा लिया। फिर भी लाश के बास से उल्टी रोक नहीं पाते। ट्रक ड्राइवर के मुँह से भी पानी आने लगा। वह किसी प्रकार ट्रक को मातृभूमि पहुँचा दिया।

गाँव पहले ही शोक में डूबा हुआ था। पैदल निकले प्रवासी मज़दूरों को रात के क़रीब बारह बजे पीछे से गाड़ी कुचलती हुई चली गयी थी। घटनास्थल पर ही सोलह मज़दूरों की मौत हो गई थी। बाक़ी साठ मज़दूरों में से लगभग सभी घायल। प्रशासन ने जैसे–तैसे घायल का इलाज कराके बस से घर भेज दिया और मृतकों को ट्रक में। चंद्रप्रकाश के छोटे लड़के की मौत होने के बाद से अपने साथी मज़दूर को फोन नहीं किया था। साथी के साथ हुए हादसे की ख़बर सुनकर क्षण भर के लिए बेहोश हो गये। ट्रक से सबको एक–एक करके उतारा गया। लाश को चारपाई में रख दिया। प्रदीप अपना होश खो चुका था। पागल की भाँति बड़बड़ा रहा। चंद्रप्रकाश मातृभूमि की मिट्टी हाथ में उठा लिया। लाश के सामने जाकर कहा ''मैं चंद्रप्रकाश आज इन दोनों बच्चों की लाश के सामने मातृभूमि की मिट्टी की सौगंध खाता हूँ। मैं न कभी मज़दूरी करने गाँव से शहर जाऊँगा और न किसी को जाने की सलाह दूँगा! क्यों न गाँव में दो वक़्त की जगह एक वक़्त ही सूखी रोटी खाकर रहना पड़े। फिर भी गाँव नहीं छोड़ूँगा!''

✍डॉ. मृत्युंजय कोईरी



द्वारा :– कृष्णा यादव,
करम टोली (अहीर टोली),
पो. :– मोराबादी,
थाना :– लालपुर, राँची,
झारखंड–834008
वार्तासूत्र :– 07903208238
07870757972
ई–मेल :– mritunjay03021992@gmail.com

हुसैनाबाद क्षेत्र वासियों को बहुत याद आयेंगे अनूप कुमार अग्रवाल



हुसैनाबाद :— विगत 21 नवंबर 2020 को रात्रि 8:30 बजे के लगभग मानसरोवर मेडिकल हॉल के प्रोपराइटर, हर दिल अज़ीज सह हुसैनाबाद के समाजसेवी अनूप कुमार अग्रवाल जी का उनके ही प्रतिष्ठान में हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, दो छोटे भाई एवं तीन पुत्रों को छोड़ गए हैं। उनमें दूसरे नंबर वाले सुपुत्र अंशु अग्रवाल उन्हीं के साथ मानसरोवर मेडिकल हॉल में उनका हाथ बँटाने के साथ—साथ उनकी सामाजिक गतिविधियों में भी बराबर की सहभागिता निभाने का सुकार्य करते आ रहे थे। अनूप कुमार अग्रवाल जी का अचानक दुनिया से चले जाना हुसैनाबाद क्षेत्र वासियों के लिए सामाजिक एवं व्यक्तिगत तौर पर अपूरणीय क्षति हुई है।

आपको बताते चलें कि 01 जनवरी 1953 में जन्मे अनूप कुमार अग्रवाल जी हुसैनाबाद के लगभग 50 वर्षों से भी पुराने मानसरोवर मेडिकल हॉल के प्रोपराइटर थे। साथ हीं, वे हमेशा ही हुसैनाबाद की हर छोटी—बड़ी सामाजिक गतिविधियों में अपनी सहभागिता दर्ज़ कराते रहते थे। जब 2020 में वैश्विक महामारी करोना ने पूरे विश्व के साथ—साथ भारत वर्ष में भी अपना पाँव पसारना शुरू किया तो उससे निपटने के लिए भारत सरकार ने तत्काल प्रभाव से लॉकडाउन का ऐलान किया। जिस कारण अचानक आम लोगों का जीवन एकदम से थम—सा गया जिससे रोज़ की मेहनत—मज़दूरी करने वाले लोगों को दो वक़्त की रोटी जुटा पाना भी बड़ा मुश्किल हो गया था। ऐसे समय में अनूप कुमार अग्रवाल जी आगे आये और उनके मार्गदर्शन में उनके सुपुत्र अंशु अग्रवाल अपने साथी सह हुसैनाबाद नगर पंचायत के वार्ड 09 के वार्ड पार्षद नज़ीर अहमद उर्फ़ मिथुन के साथ मिलकर 'सेवा ही हमारा लक्ष्य' के बैनर तले कभी लंबी गली तो कभी मानसरोवर मेडिकल हॉल के सामने स्टॉल लगाकर प्रतिदिन सैकड़ों लोगों के बीच कभी खिचड़ी का वितरण तो कभी राशन का वितरण करते रहे, जब तक कि सरकार द्वारा अनलॉक की घोषणा नहीं की गई। ऐसे नेक व दरियादिल इंसान थे हुसैनाबाद के अनूप कुमार अग्रवाल जी...अचानक उनके दुनिया को छोड़कर चले जाने से हुसैनाबाद क्षेत्र के लोग काफ़ी मर्माहत हुए हैं, वहीं उनके सुपुत्र अंशु अग्रवाल ने कहा कि हम अपने पूजनीय पिताजी की स्मृति को अमर करने के लिए हर वर्ष उनकी पुण्यतिथि के मौक़े पर अपने क्षेत्र के ग़रीब, असहाय एवं दलितों की सेवा करते रहेंगे, ताकि हमारे पिताजी की समाजसेवा का सुकार्य अविराम चलता रहे।





✍ **पवन कुमार सिंह**
संवाददाता : अरण्य वाणी, हुसैनाबाद।

ग़ज़ल

मेरे बचपन के सहारे, मुझे वापस कर दे।
वक़्त तू सारे नज़ारे, मुझे वापस कर दे।

खेल में गुड़िया की शादी में जो बाँटे थे कभी,
बस वो पत्थर के छुवारे, मुझे वापस कर दे।

बात—बे—बात पे बहते थे जो दरिया की तरह,
वो मेरे अश्क़ के धारे, मुझे वापस कर दे।

प्यार से माँ जिन्हें ले करके बुलाती थी मुझे,
मेरे वो इस्म दुलारे, मुझे वापस कर दे।

जिनमें रहकर मुझे आज़ादी से जीना आया,
वो ही वालिद के इज़ारे, मुझे वापस कर दे।

दो घड़ी तैर के देते थे खुशी जो हर पल,
तू वो काग़ज़ के शिकारे, मुझे वापस कर दे।

दादी —नानी न जिन्हें कहते हुए थकती थीं,
वो कहानी के पिटारे, मुझे वापस कर दे।

मेरी ज़िद पे वो जो पानी में उतर आये थे,
वो सभी चाँद—सितारे, मुझे वापस कर दे।

इल्म की जिसने ज़िया बख़्शी मेरे बचपन को,
ख़ास वो सारे इदारे, मुझे वापस कर दे।

ग़म के दरिया में भटकती रही हूँ मुद्दत से,
अब तो ख़ुशियों के किनारे, मुझे वापस कर दे।

'आरज़ू' तब भी बड़ी कोई नहीं थी दिल की,
ख़्वाब छोटे मेरे सारे, मुझे वापस कर दे।



✍ ***अंजुमन मंसूरी 'आरज़ू'***
जाम मार्ग, उमरानाला,
जिला :- छिंदवाड़ा,
मध्य प्रदेश–480107

केवल विवाह के लिए धर्म परिवर्तन करना बुद्धिमानी नहीं है

(हालाँकि, अंतरजातीय विवाह पर क़ानूनों का विचार सीधे तौर पर लोगों के स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन के अधिकार जैसे कई अधिकारों का उल्लंघन करता है। यदि कोई युगल अपने विश्वास के बावजूद शादी करना चाहता है तो यह राज्य का कर्तव्य है कि वह अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने के लिए उन्हें सक्षम और सुविधा प्रदान करे, न कि इसे प्रतिबंधित करे।)

उत्तर प्रदेश सरकार ने लव ज़िहाद को रोकने के लिए एक अध्यादेश से ग़ैर क़ानूनी धार्मिक रूपांतरण के लिए क़ानून बनाने का प्रस्ताव दिया है। सदियों से भारत में जातिवाद और धर्मवाद का प्रचलन रहा है। कई क़ानूनों के बावजूद, अंतरजातीय विवाह के लिए सामाजिक कलंक अभी भी भारतीय समाज में मौजूद है। हालाँकि, अंतरजातीय विवाह पर क़ानूनों का विचार सीधे तौर पर लोगों के स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन के अधिकार जैसे कई अधिकारों का उल्लंघन करता है।

उत्तर प्रदेश सरकार का प्रस्ताव पितृसत्ता और सांप्रदायिकता का एक शातिर मिश्रण है। यह एक ऐसे शब्द को वैधता प्रदान करता है जो अंतर–जातीय विवाह और उन रिश्तों के ख़िलाफ़ अपमान का कारण बनता है जिसमें पार्टियों में से एक मुस्लिम व्यक्ति है। इस तरह के क़ानून को लाने का कारण यह है कि हिंदू महिलाएँ मुस्लिम युवकों से शादी के नाम पर धर्म परिवर्तन के लिए कोशिश कर रही हैं। यह क़ानून, जिसे 'अवैध रूप से धर्मांतरण निषेध विधेयक 2020' कहा जाता है, का दावा है कि यह केवल धर्म परिवर्तन के लिए मज़बूर करता है। हालाँकि, राज्य के अंतर–विश्वास वाले जोड़ों के निजी निर्णयों को दर्ज़ करने की अनुमति देने का प्रभाव है कि वे कैसे शादी करना चाहते हैं।

यूपी क़ानून में अलग–अलग धर्मों के दो सहमति वाले वयस्कों के बीच दंडात्मक कार्रवाई से शादी को हतोत्साहित करने का प्रभाव हो सकता है, क्योंकि यह जिन शब्दों का उपयोग करता है वे अस्पष्ट हैं। ऐसा कोई भी क़ानून संविधान के मूल मूल्यों के विपरीत कई मायने रखता है। राजनीतिक शर्तों जैसे लव ज़िहाद 'को कोई क़ानूनी मंज़ूरी नहीं है। एक अतिरिक्त–क़ानूनी अवधारणा के आधार पर कोई क़ानून नहीं हो सकता है। किसी भी मामले में, सहमति देने वाले वयस्कों को शामिल करने वाले विवाहों में विधायी हस्तक्षेप स्पष्ट रूप से असंवैधानिक होगा।

माना जाता है कि अंतरजातीय विवाह पति या पत्नी (ज़्यादातर महिलाओं) में से एक का ज़बरन धर्म परिवर्तन होता है। मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार, ग़ैर–मुस्लिम से शादी करने के लिए, धर्म परिवर्तन ही एकमात्र तरीक़ा है। हिंदू धर्म केवल एकरसता की अनुमति देता है और जो दूसरी बार शादी करना चाहते हैं वे एक और कोर्स करते हैं। इस तरह के विवाहों से पैदा हुए बच्चों के जाति निर्धारण के बारे में कोई प्रावधान नहीं है। विशेष विवाह अधिनियम, 1954 समाज के पिछड़ेपन के अनुकूल नहीं है। उच्च न्यायालय द्वारा अंतरजातीय विवाह को रद्द करने के संदर्भ में अनुच्छेद 226 की वैधता पर बहस चल रही है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का निर्णय केवल विवाह के उद्देश्य के लिए धार्मिक रूपांतरण पर आधारित था। यह एक रिट याचिका पर हस्तक्षेप करने से इनक़ार कर दिया, जिसमें एक जोड़े के लिए पुलिस सुरक्षा की माँग की गई थी, यह देखते हुए कि दुल्हन शादी के उद्देश्य के लिए पूरी तरह से इस्लाम से हिंदू धर्म में परिवर्तित हो गई थी। इस तरह के एक त्वरित रूपांतरण को 2014 के फ़ैसले का हवाला देते हुए अस्वीकार्य पाया गया था। 2014 के फ़ैसले ने नए धर्म के सिद्धांतों में दिल के परिवर्तन या किसी भी सज़ा के बिना रूपांतरणों के संबंध में सवाल किया।

अंतर–विश्वास वाले जोड़े अपनी धार्मिक मान्यताओं को अलग रखते हैं और विशेष विवाह अधिनियम के तहत शादी का विकल्प चुनते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि विवाह एक अत्यंत व्यक्तिगत मामला है। एक व्यक्ति की पसंद के व्यक्ति से शादी करने या किसी का साथी चुनने का अधिकार संवैधानिक स्वतंत्रता के साथ–साथ गोपनीयता का एक पहलू है। 2018 में, सुप्रीम कोर्ट ने हादिया मामले में क़ानून की इस स्थिति को दोहराया, जहाँ इस आरोप को ख़ारिज़ कर दिया कि हादिया को ज़बरन शादी के उद्देश्य से दूसरे धर्म में परिवर्तित कर दिया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय ने इस आधार पर अलग–अलग स्वतंत्रताओं को प्रतिबंधित करने वाले क़ानूनों पर प्रहार किया है कि इस तरह का क़ानून 'न केवल ओवरबोर्ड और अस्पष्ट है, बल्कि किसी व्यक्ति की पसंद की स्वतंत्रता पर द्रुत प्रभाव भी है'। आगे के क़ानूनों को शामिल करने से बचने के लिए, मानसिक और सामाजिक स्तर पर विशेष विवाह अधिनियम, 1954 की स्वीकृति होनी चाहिए। अधिकारों का शोषण नहीं होना चाहिए, केवल विवाह के लिए धर्म परिवर्तन करना बिल्कुल भी बुद्धिमानी नहीं है।

भारत के विविध सामाजिक समूह इतने मिश्रित हैं कि एक को दूसरे से अलग करना आसान नहीं है। सामाजिक एंडोस्मोसिस केवल तभी हो सकता है जब हम जाति और धर्म, लिंग, कामुकता, वर्ग और भाषा की सीमाओं को पार करने वाले प्रेम और बंधुत्व की सामाजिक भावनाओं को उत्पन्न करते हैं। यदि कोई युगल अपने विश्वास के बावज़ूद शादी करना चाहता है, तो यह राज्य का कर्तव्य है कि वह अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने के लिए उन्हें सक्षम और सुविधा प्रदान करे, न कि इसे प्रतिबंधित करे। राज्य को लव ज़िहाद क़ानून लाने के बजाय, अंतर विवाह की सुविधा और बढ़ावा देने के लिए विशेष विवाह अधिनियम के तहत अस्पष्ट प्रक्रिया को शिथिल करना चाहिए।

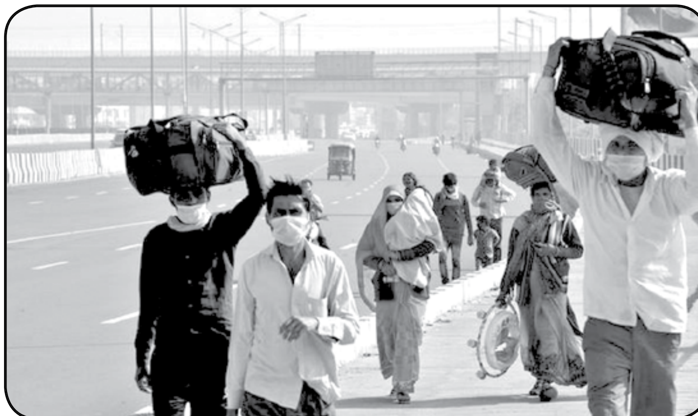


✍प्रियंका सौरभ
आर्य नगर, हिसार,
हरियाणा–125003

लॉकडाउन

रागिनी इलाहाबाद के नैनी में अपने पिता द्वारा दिये गये मकान में अपने परिवार के साथ रहती है। यह मकान क़रीब 1983 का बना है। यहाँ हालत यह है कि धीरे–धीरे सड़कें ऊपर और कमरे नीचे होने लगे हैं। क़रीब चार फुट नीचे। बहुत ही अज़ीबोग़रीब स्थिति में हैं ये कमरे। बहुत ही ज़रूरतमंद लोग इन कमरों को किराए पर लेते हैं।

क़रीब चार महीने पहले ई–रिक्शा पर कुछ सामान लादकर एक आदमी कमरा खोज रहा था। उसके साथ उसकी पत्नी और दो बच्चे भी थे जो बार बार रिक्शे से बाहर झाँक रहे थे। शायद उनमें उस घर को देखने की उत्सुकता हो रही होगी जहाँ उनको रहना था। उन चारों के कपड़ों से ही उनके ग़रीबी का अनुमान लगाया जा सकता था। किसी ने उन्हें बता दिया कि उस गली के चौथे मकान में कमरा ख़ाली है। बस वह आदमी पूछते–पूछते रागिनी के मकान के सामने जा खड़ा हुआ। रागिनी उस समय गाय को रोटी खिलाने के लिए बाहर निकली हुई थी। उसे देखकर वह आदमी आगे बढ़ा, ''मैडम जी नमस्ते।''



''नमस्ते...नमस्ते, कहो क्या बात है?'' रागिनी ने ज़वाब दिया।

''मैडम मेरा नाम प्रेम प्रकाश है। हम लोग बहुत परेशान हैं, सुना है आपके पास एक कमरा ख़ाली है।''

''हाँ है तो पर पहले देख लो।'' वह कमरा लोग कम ही पसन्द करते थे, इसलिए रागिनी ने पहले कमरा देख लेने की पेशकश की।

अब ई–रिक्शे में से उसकी पत्नी उतर कर नीचे आ गई। रागिनी ने दोनों को ले जाकर नीचे का कमरा दिखाया। प्रेम प्रकाश ने तुरंत हाँ कर दिया। उन्हें तो रहने के लिए एक ठिकाना चाहिए था।

''मैडम इसका किराया भी बता दीजिए।''

''भाई, इसका किराया दो हजार है।'' रागिनी ने कहा।

''नहीं मैडम, मैं अभी नया–नया आया हूँ। मैं इस कमरे का डेढ़ हजार किराया दूँगा।'' प्रेम प्रकाश ने कहा। रागिनी ने भी हाँ कर दिया। न के बजाय डेढ़ हजार काफ़ी था।

प्रेम प्रकाश ने तुरंत डेढ़ हजार निकाल कर रागिनी के हाथ में रख दिया। फिर ई–रिक्शे से सारा सामान निकाल कर दोनों ने कमरे में रखा। रागिनी ने आदतन पूड़ी–सब्जी बनाकर उन लोगों को दिया। दोनों बच्चे बहुत भूखे थे, तुरंत खाने पर टूट पड़े। बातों–ही–बातों में पता चला कि इनको लखनऊ से एक ठीकेदार लेकर आया है। वह उसे ट्रांसफॉर्मर का काम कराने के लिए लाया था। ठीकेदार ने दस दिन के लिए उसको दो हजार रुपए एडवांस भी दिये थे।

प्रेम प्रकाश की पत्नी का नाम मधु था। मधु बहुत ही मिलनसार नज़र आयी। उनके दोनों बच्चे भी बहुत चंचल और सुन्दर थे। उनका नाम था कान्हा और विनय। वे अभी बहुत छोटे–छोटे थे...बड़ा चार साल का और छोटा तीन साल का। दस दिन बाद होली का त्यौहार पड़ा और होली के बाद कुल चार दिन ही काम चला था कि तभी कोरोना महामारी फैलने के कारण लॉकडाउन हो गया। अब प्रेम प्रकाश बुरी तरह से फँस गया। उसके पास में जो थोड़े से पैसे थे वह भी ख़त्म होने लगा था। पराया शहर, पराये लोग...सभी अपरिचित। प्रेम प्रकाश जब ठीकेदार को फोन लगाता तो वह बिना काम के पैसे देने से साफ़ मना कर देता। फिर धीरे–धीरे उसने फोन उठाना भी बंद कर दिया। लॉकडाउन, हाथ में पैसा नहीं, अब वे करें तो क्या करें। सामने के दुकानदार के पास गया, ''भैया घर के लिए खाने–पीने का कुछ सामान चाहिए, जैसे ही लॉकडाउन खुलेगा मेरा काम चालू होगा...मैं तुम्हारे पैसे दे दूँगा।''

''अरे नहीं भैया, मुझे तो माफ़ करना। मैं कभी किरायेदारों को उधार नहीं देता हूँ।'' दुकानदार ने टके–सा ज़वाब दे दिया।

''मेरा विश्वास करो भैया, तुम्हारा पैसा कहीं नहीं जायेगा।'' प्रेम प्रकाश लगभग गिड़गिड़ाते हुए बोला।

''नहीं जी, कल तुम चले जाओगे तो मैं तुमको कहाँ–कहाँ तलाशूँगा।'' दुकान वाले ने झिड़कते हुए कहा। प्रेम प्रकाश सिर लटकाए वापस घर में चला गया।

रागिनी अपने कमरे की खिड़की से बैठी हुई गली में दुकानदार से हो रहे इस बातचीत को ध्यान से सुन रही थी। थोड़ी देर बाद वह नीचे आई तो देखा बच्चे भूख से रो रहे थे और मधु बच्चों को शांत करा रही थी। प्रेम प्रकाश अपने ठीकेदार से गिड़गिड़ा रहा था, मगर ठीकेदार बिना काम के एक धेला भी देने को तैयार नहीं था।

रागिनी चुपचाप ऊपर कमरे में गई और पाँच किलो दाल और चावल लाकर मधु को दे दिया, ''लो पहले तो बनाओ...खाओ...अपने बच्चों को खिलाओ फिर कुछ और करो।''

''अरे भाभीजी, बहुत बहुत आभार आपका, जल्दी ही मेरा पैसा आने वाला है। फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।'' मधु ने कहा।

वे लोग रागिनी के इस सहृदयता पर चकित थे। एक वह दुकान वाला जो उधार तक देने के लिए नहीं तैयार हुआ।

एक रागिनी जो इतना सारा अनाज लाकर दे गईं।

रागिनी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। रोज़ दो मुट्ठी चावल चिड़ियों के लिए छत पर डाला करती थी। उनके यहाँ खेती–बारी होती थी तो चावल, दाल, गेहूँ तथा अन्य अनाज गाँव से ही आ जाता था। चावल दाल साफ़ करने के बाद जो छोटे–छोटे टुकड़े निकलते, उनको एक बड़े बर्तन में करके सीढ़ियों के नीचे की जगह में रखवा देती थी। फिर कभी उनकी बहू और कभी वे स्वयं ही, उसी में से रोज़ दो मुट्ठी चावल निकाल कर चिड़ियों के लिए छत पर डाल देती थी। एक दिन मधु ने जब रागिनी से सीढ़ी के नीचे रखे हुए उन गैलनों के बारे में पूछा, तब रागिनी ने उसे सब कुछ बता दिया था।

इधर मधु के यहाँ रागिनी द्वारा दिया गया अनाज भी ख़त्म हो गया। बच्चे फिर रोने लगे। भूख की मज़बूरी और वह भी अपने बच्चों की भूख इंसान को ग़लत क़दम उठाने के लिए भी बाध्य कर सकती हैं। मधु ने भी आज वही किया। सीढ़ी के नीचे रखे हुए चावल दाल की किनकी में से थोड़ा–सा निकाल ले आई और उसी को पकाकर बच्चों के तथा अपने पेट पूजा की व्यवस्था की। किनकी चावल के बहुत छोटे टुकड़े होते हैं जिसे या तो पशु–पक्षियों को खिला दिया जाता है या उसे पिसवाकर आटा बनाकर कुछ खाने की चीज़ें जैसे फरा, इडली, डोसा आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है। किनकी को चावल के रूप में बनाना कठिन है और स्वाद भी नहीं आयेगा, परन्तु भूख तो बस भूख है वह स्वाद नहीं देखा करती।

दूसरे दिन रागिनी की बहू चिड़ियों को डालने के लिए किनकी निकालने चली तो उसे वह गैलन हल्का लगा। उसने तुरंत सास को यह जानकारी दी, ''मम्मी किनकी वाला गैलन आज ख़ाली लग रहा है। अभी तो उसे भरा था।''

''अरे बेटा, उसमें से निकाल कर मैंने थोड़ा–सा गाय को डाल दिया था।'' रागिनी ने बहू को आश्वस्त किया।

रागिनी जानती थी कि उस गैलन से किनकी मधु ले जाती है। रागिनी दो–चार दिन के बाद सबकी नज़र बचाकर गैलन भर देती थी। यही नहीं अब चिड़ियों को दाना डालने का काम उसने अपने हाथ में ले लिया। अब वह उस किनकी में आधे से ज़्यादा चावल मिला देती थी। दाल के टुकड़े में दाल मिलाकर रख देती थी। मधु जब दाल चावल के टुकड़े निकाल कर लाती तो पति से कहती, ''इन लोगों को किनकी निकालना भी नहीं आता, इसमें तो आधे से अधिक साबूत अनाज होता है।'' उसको यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि रोज़ वह गैलन से दाल और चावल के टुकड़े निकालती है पर गैलन ख़ाली क्यों नहीं हो रहा है? वह इसे ईश्वरीय लीला मानकर चल रही थी।

एक दिन रागिनी के बेटे को सीढ़ी के नीचे कुछ आवाज़ सुनाई दी। वह सीढ़ियों की ओर बढ़ा, मगर माँ रागिनी सामने आ गई, ''नहीं बेटा कोई ज़रूरत नहीं है वहाँ जाने की। मुझे सब पता है। सीढ़ियों के नीचे रखे गैलन की किनकी से ही चार लोगों को ज़िंदगी मिल रही है बेटा और वह भी पूरे स्वाभिमान के साथ।''

बेटे को सब समझ में आ गया उसे अपनी माँ पर गर्व महसूस हो रहा था, तभी लॉकडाउन खुलने का ऐलान हुआ। रागिनी ने उन लोगों के घर जाने की व्यवस्था भी की। एक हजार रुपए किराया तथा रास्ते में खाने के लिए पूड़ी–सब्जी दी और उनको हँसी–ख़ुशी उनके घर भेज दिया। अपने घर पहुँचकर दोनों ने रागिनी को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। वे लोग सच्चे मन से रागिनी को दुआ दे रहे थे। मधु भगवान को धन्यवाद दे रही थी।



डॉ. सरला सिंह
180–ए पॉकेट ए-3,
मुहल्ला :- मयूर विहार,
फेस-3, पोस्ट :- वसुंधरा एन्क्लेव,
थाना :- अशोक विहार,
जिला :- पूर्वी दिल्ली, दिल्ली-110096
वार्तासूत्र :- 09650407240

हलाहल का दंड

चीत्कारों का गुंजन होता
विध्वंस का वेग प्रचंड
जर्जर पड़ गयी मानवता
संवेदनाएँ हुईं हैं खंड–खंड।

जहाँ गया मृत्यु से खेला
आमोद समझा रक्तपात
नृशंसता का अंकुर बोया
फूटा नव रुधिर प्रपात।

पशुओं को भी पीछे छोड़ा
पर मानव को बड़ा घमंड।

हिंसा के अम्लघात इतने
रोम–रोम जैसे जल गया
झुलस कर मानव हृदय
मोम बनकर पिघल गया।
यह मोम लावा बनता
यह लावा है बड़ा उच्चंड।

सहलाने का भी प्रयास करें
तो निकलती शोणित धार
चंदन लेप नहीं घावों को
मिला भुजंगों से ही उपहार।

समय से विष को जीत लो
यह हलाहल भयानक दंड।



क्षितिज जैन 'अनघ'
सी 501-502,
मंगलम दी ग्रांड रेसीडेंसी,
सिरसी रोड,
पोस्ट :- बिंदायका,
थाना :- बिंदायका,
जिला :- जयपुर,
राजस्थान-302034
वार्तासूत्र :- 09636407465

कुमाऊँ का उत्तरायणी पर्व

भारत भूमि त्यौहारों की भूमि है। यहाँ अनेक धार्मिक और राष्ट्रीय त्यौहार मनाए जाते हैं। अंग्रेज़ी कैलेंडर के अनुसार यह नए साल का पहला महीना है। हमारा प्रमुख राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस भी इसी माह मनाया जाता है। जनवरी के मध्य में माघ के महीने में मकर संक्रांति का पावन पर्व समूचे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को अलग–अलग नामों से संबोधित किया जाता है, लेकिन भावना और उद्देश्य एक ही रहता है। उत्तराखंड की बात करें तो यहाँ पर इस पर्व की रौनक कुछ और ही होती है। यहाँ पर इसे उत्तरायणी कहते हैं, क्योंकि इस दिन सूर्य कर्क राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है और सूर्य की उत्तरायण गति प्रारंभ हो जाती है। यह त्योहार ऋतु परिवर्तन का द्योतक है। सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगता है, दिन बड़े होने लगते हैं और ठंड का एहसास कम होने लगता है।

इस त्यौहार को लेकर कई तरह की कथाएँ प्रचलित हैं। एक मान्यता यह भी है कि इस दिन भगवान विष्णु ने असुरों का अंत कर युद्ध समाप्ति की घोषणा की थी। अतः हम इसे बुराई और नकारात्मकता को समाप्त करने का दिन भी कह सकते हैं। कुमाऊँ में आटे, घी और गुड़ के खजूर, शक्करपारे और घुघुते बनाए जाते हैं, साथ ही इन्हें ढाल–तलवार, अनार, पूरी, डमरु आदि का अलग–अलग आकार भी दिया जाता है। इन्हें सुई–धागे में पिरो कर माला बनाई जाती है जिसके बीच में संतरा डाला जाता है। बच्चे सुबह–सुबह माला गले में डालकर 'काले कौवा काले, घुघूती माला खाले' गाकर कौवे को बुलाते हैं। पूरे साल भर नदारद रहने वाले कौवे भी इन दिनों आश्चर्यजनक रूप से प्रकट हो जाते हैं। शहरों और गाँवों में जगह–जगह मेले लगते हैं। बागेश्वर का उत्तरायणी मेला तो दुनिया भर में प्रसिद्ध है। सरयू गोमती नदी के तट पर बागनाथ मंदिर के पास यह मेला लगता है। लोग संगम में स्नान करते हैं। मान्यता है कि इस महापर्व के दिन संगम में स्नान करने से समस्त पाप धुल जाते हैं। इसे हम नदियों के संरक्षण का पर्व भी कह सकते हैं, क्योंकि भारत में नदियों को माँ का स्थान प्राप्त है। कई बार श्रद्धालु धर्मांध होकर नदियों में मूर्तियाँ, फूल, पैसे, प्लास्टिक की थैलियाँ आदि प्रवाहित कर इसे अशुद्ध करते हैं, जिस पर रोक लगाना आवश्यक हैं और जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।

मेले में होने वाले सांस्कृतिक आयोजन आकर्षण के केंद्र होते हैं। देश भर से व्यापारी यहाँ पर आते हैं और भारत के विभिन्न राज्यों की वस्तुएँ यहाँ पर प्राप्त हो जाती हैं। इन दिनों देशी–विदेशी पर्यटक भी बहुत अधिक मात्रा में यहाँ पर पहुँचते हैं। शुभ कार्य करने के लिए यह बहुत ही अच्छा मुहूर्त माना जाता है। श्रद्धालु संगम पर आकर जनेऊ एवं मुंडन आदि कर्मकांड संपन्न करवाते हैं। इस दिन तिल और गुड़ का सेवन किया जाता है और खिचड़ी का दान किया जाता है। उत्तरायण में सूर्य की किरणें औषधि का काम करती हैं। धूप स्नान से कई तरह की व्याधियाँ दूर होती हैं...हड्डियाँ मज़बूत होती हैं...रक्तचाप सामान्य रहता है...चर्म रोग और गठिया रोग में फ़ायदा मिलता है। वर्तमान समय में जब अधिकांश लोग विटामिन डी की कमी से ग्रसित हैं तो ऐसे में सूर्य स्नान का महत्व बढ़ जाता है। हमारे हर त्यौहार के पीछे कोई ना कोई वैज्ञानिक सोच अवश्य छुपी रहती है।

उत्तरायणी मेले का ऐतिहासिक महत्व भी है, क्योंकि क्रांतिकारियों ने बंधुआ मज़दूरी के उन्मूलन की हुँकार सर्वप्रथम यहीं से भरी थी। इस प्रकार, उत्तराखंड का यह लोक पर्व धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है।



अमृता पांडे
जे.के. पुरम, ई–21,
छोटी मुखानी, हल्द्वानी,
जिला :– नैनीताल, उत्तराखंड–263139

जीतने की ज़िद



यदि जीतने की ज़िद की हो हमारे मन में चाह,
पहाड़ों को भी हम यूँ काट कर बना लेंगे राह।
हिमालय की उत्तंग चोटी पर झंडा फहरा देंगे,
सागर की तलहटी से मोतियों की लेंगे थाह।

बस! हमें अपनी जीत की ज़िद पर अड़े रहना होगा,
असफलता मिलने पर भी, न हमें घबड़ाना होगा।
बार–बार गिरने पर भी, चढ़ने की फिर हिम्मत करें,
जीत के लिए हमें अपना पूरा धैर्य लगाना होगा।

ज़िंदगी से यूँ कभी कभी, हमें मिलती है निराशा,
पर हिम्मत न हारें, जीत की रखें हम पूर्ण आशा।
कभी लक्ष्य के नज़दीक पहुँच कर भी हार जाते,
फिर हम लड़ें–भिड़ें, अवश्य पूरी होगी अभिलाषा।

असंभव को जीवन की किताब में कभी न लाएँ,
आसमान के तारों को भी हम तोड़ कर दिखाएँ।
जीत की ज़िद से ही, सिकंदर विश्व विजेता बना,
मनुज ने कितने साहसिक कारनामे कर दिखाएँ।

हम अपने को कभी कमतर या कमज़ोर न माने,
अपनी ताक़त और सामर्थ्य को हम ख़ूब पहचाने।
जग में कोई ऐसा कार्य नहीं, जो हम न कर सके,
बस! लक्ष्य को भेदने को हम अपने मन में ठाने।



लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
ग्राम :– कैतहा, पोस्ट :– भवानीपुर,
जिला :– बस्ती, उत्तर प्रदेश–272124
वार्तासूत्र :– 07355309428

अविनाश देव को मिला कोरोना फाइटर्स सम्मान



मेदिनीनगर :– झारखंड की राजधानी राँची में झारखंड विधानसभा के सभागार में 'पुलिस–पब्लिक रिपोर्टर' के तत्वावधान में आयोजित सम्मान समारोह में संत मरियम स्कूल के चेयरमैन सह मेदिनीनगर नगर निगम के ब्राण्ड एंबेसडर अविनाश देव को वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के दौर में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 'राष्ट्रीय कोरोना फाइटर्स सम्मान' से नवाज़ा गया। मौक़े पर अविनाश देव ने कहा कि वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के दौर में अगर पलामू के भाइयों, बहनों व माताएँ सेवा करने का मौक़ा नहीं देते तो शायद यह राष्ट्रीय कोरोना फाइटर्स सम्मान नहीं मिलता। इसलिए यह सम्मान पलामू के तमाम सुदूर बसने वाले भाइयों, बहनों एवं माताओं को समर्पित करता हूँ। उम्मीद करता हूँ इसी तरह की सेवा करने का मौक़ा बारम्बार आप देते रहेंगे। कोरोना काल में जब पूरी दुनिया लॉकडाउन हुई तो चिलचिलाती धूप व तपती धरती पर हजारों मील नंगे पाँव पैदल चलकर दुनिया के सबसे ताक़तवर मानव जिसके बल पर दुनिया गढ़ी जाती है, अपने वतन, अपने परिवार के बीच गाँव लौटने लगे। देखने के बाद रूह काँप जाती थी। आम व ख़ास नागरिक भूमिगत हो गये। धरती वीरान–सी लगने लगी। सारी दुनिया में त्राहिमाम–त्राहिमाम मच गया। ज़िंदगी बचाने में ग़रीब, किसान, फुटकर विक्रेता, छोटे व्यवसायी, ठेला एवं खोमचा वाले सबसे ज़्यादा प्रभावित हुए। प्रशासनिक नियमों को पालन करने में पसीना छूट गया। ऐसी हालत में एक मात्र विकल्प था– घर–घर जाकर राहत व ज़रूरत के सामग्री पहुँचाना। एक ही संकल्प था– भूखजनित मौत से बचाना। अनलॉक होने तक प्रशासन का भी सहयोग लिया गया और हर संभव सहायता त्वरित रूप से पहुँचाया गया। पलामू की सकारात्मक आवाज़ राष्ट्रीय स्तर पर गूँजी, इसका परिणाम हुआ कि राष्ट्रीय कोरोना फाइटर्स सम्मान झारखंड विधानसभा के सभागार में मिला। शायद मानव सेवा ही राष्ट्र सेवा है। सबों को दिल से शुक्रिया।



आरती कुमारी
संवाददाता : अरण्य वाणी, मेदिनीनगर।

श्री यादे माता जयंती पर कुम्हारों ने दिया चट्टानी एकता का परिचय



मेदिनीनगर :– 13 फरवरी 2021 दिन शनिवार को प्रातः 11:00 बजे दिन से संयोजक डॉ. भोला प्रजापति की अध्यक्षता में दुर्गा मंडप, थाना रोड, मेदिनीनगर, पलामू में श्री यादे माता जयंती समारोह श्री यादे माता मंच पलामू प्रमंडल, झारखंड के तत्वावधान में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम श्री यादे माता की प्रतिमा के समक्ष दीप–प्रज्ज्वलित कर उनकी पूजा–अर्चना की गई। तत्पश्चात् प्रसाद का वितरण किया गया। मौक़े पर कार्यक्रम का मंच संचालन विनोद पंडित ने किया, वहीं बतौर मुख्य अतिथि श्री चंद प्रजापति (पूर्व अध्यक्ष : माटी कला बोर्ड, झारखंड सरकार) राँची एवं विशिष्ट अतिथि पूर्व अध्यक्ष सहदेव प्रजापति, बिहार खादी बोर्ड पटना के द्वारा दीप–प्रज्ज्वलित एवं पुष्पार्चण कर मंच का संचालन शुरू किया गया। स्वागताध्यक्ष सुखलाल प्रजापति द्वारा गणमान्य उपस्थित सदस्यों को फूलमाला पहनाकर एवं करतल ध्वनियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी का स्वागत किया गया। श्री यादे माता को नमन कर उनका गुणगान किया गया तथा पलामू में कुम्हार समाज की दशा एवं दिशा पर सभी वक्ताओं ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए।

मौक़े पर मुख्य अतिथि श्री चंद प्रजापति ने कहा कि वे श्री यादे माता को नमन करते हैं एवं कुम्हार समाज में एकता क़ायम करने के लिए जन–जन को माता के महात्म्य से अवगत कराया जाए, उनकी यही प्रबल कामना है। आगे उन्होंने कहा कि कुम्हारों के सर्वांगीण विकास के लिए जागरूकता अतिआवश्यक है, वहीं विशिष्ट अतिथि सहदेव प्रजापति ने कहा कि कुम्हारों की एकजुटता देख बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने हम कुम्हारों को अति पिछड़ा का दर्ज़ा दिया था, पर उनके बाद के सत्ताधारियों ने कुम्हारों को सिर्फ़ छलने का ही काम किया है। झारखंड सरकार के माटी कला बोर्ड के पूर्व सदस्य नीरज प्रजापति ने कहा कि सर्वप्रथम वे श्री यादे माँ को नमन करते हैं। आगे उन्होंने कहा कि कुम्हार समाज के संगठन में बिखराव नहीं, बल्कि एक सकारात्मक ठहराव की आवश्यकता है, वहीं झारखंड सरकार के माटी कला बोर्ड पूर्व सदस्य अविनाश देव ने नारी शक्ति की सफलता पर ज़ोर देते हुए माता को नमन किया। झारखंड प्रजापति (कुम्हार) महासंघ, राँची के पूर्व उपाध्यक्ष तुलसी प्रजापति ने श्री यादे माता को नमन कर कहा कि माँ जन्मदात्री है। माँ में ममता का संचार है। कुम्हारों की दशा और दिशा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एकजुटता से सफलता मिलती है। हमारे समाज के संगठन में बिखराव है, जिसे हम सबको एकता के सूत्र में बँधकर चट्टानी एकता का परिचय देना होगा। हमारे समाज के संगठनों में एकीकरण की सख़्त ज़रूरत है। समाज को तोड़ो नहीं जोड़ो की पहल पर ध्यान केंद्रित करना अतिआवश्यक है। जटाधारी प्रजापति ने फूलमाला को हाथ में लेकर जनसभा को संबोधित कर एकता में रहने पर ज़ोर दिया। विनोद पंडित ने कहा कि माँ का संदेशा जन–जन तक जाना चाहिए। हमें संगठनों को मिलाकर चलना चाहिए। डॉ. भोला प्रजापति ने श्री यादे माता पर विशेष चर्चाएँ कीं। मौक़े पर उन्होंने कहा कि भक्त शिरोमणि श्री यादे माता का जन्म तिथि माघ शुक्ल द्वितीया है। इस तिथि को श्री यादे माँ की जयंती देश के विभिन्न क्षेत्रों में मनायी जाती है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए हमने श्री यादे माता की जयंती 2017 से पलामू में मनाने की व्यवस्था की है। मौक़े पर उन्होंने कहा कि साल में 1 दिन माता का जन्मदिन मनाकर हम चट्टानी एकता का परिचय दें, वहीं मंच के द्वारा मेधावी छात्र–छात्राओं को श्री यादे माता ज्ञान पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार पाने वालों में स्वाति प्रजापति, धर्मेंद्र प्रजापति एवं रविंद्र प्रजापति का नाम शामिल है। भोजन के बाद सभा के अध्यक्ष द्वारा आशीर्वादोपरांत सभा की समाप्ति की घोषणा की गई। जयंती समारोह में राजमुनि प्रजापति, नंदकिशोर प्रजापति, विश्वनाथ प्रजापति, दिनेश प्रजापति, अजीत प्रजापति, शंभू प्रजापति, संतोष प्रजापति, ललित प्रजापति, मनीष प्रजापति, शोभा प्रजापति, सुनैना देवी, सुनीता देवी आदि उपस्थित होकर अपने–अपने विचार व्यक्त किए।



ललन प्रजापति
ब्यूरो चीफ : अरण्य वाणी, पलामू।

मौसम की 7वीं वर्षगाँठ पर पूर्व एवं वर्तमान की दो महिला वार्ड पार्षदों को दिया गया सावित्रीबाई फुले सम्मान-2021

समाज को सकारात्मक दिशा दिखाने में विनोद सागर की भूमिका अद्वितीय : छठन







हुसैनाबाद :– हुसैनाबाद के गणेशपुरी में स्थित ज्ञानोदय पब्लिक स्कूल के प्रांगण में साहित्यिक संस्था मौसम की 7वीं वर्षगाँठ बड़े ही धूमधाम के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर की गई। तत्पश्चात संस्था मौसम के तत्वावधान में साफ़ छवि वाली पूर्व एवं वर्तमान की दो महिला वार्ड पार्षदों को सावित्रीबाई फुले सम्मान–2021 से नवाज़ा गया। सम्मान पाने वालों में हुसैनाबाद नगर पंचायत के वार्ड नंबर 09 की पूर्व की वार्ड पार्षद महोदया माबिया ख़ातून एवं वार्ड नंबर 05 की वर्तमान वार्ड पार्षद महोदया सुषमा गुप्ता का नाम शामिल है। इन्हें यह सम्मान बतौर मुख्य अतिथि हुसैनाबाद नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष रामेश्वर राम उर्फ़ छठन, साहित्यिक संस्था मौसम के अध्यक्ष विनोद सागर एवं वरीय कथाकार विपिन बिहारी ने संयुक्त रूप से शॉल ओढ़ाकर, स्मृति चिह्न एवं सहयोग राशि प्रदान कर किया।

मौक़े पर मुख्य अतिथि रामेश्वर राम उर्फ़ छठन ने कहा कि हुसैनाबाद के साहित्यिक मंच पर उदय होने वाला तथा सांस्कृतिक कार्यों का आयोजन करने वाला, 'मौसम' संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से समाज में जागरूकता लाने वाला, 'अरण्य वाणी' नामक मासिक पत्रिका को सफलता पूर्वक संपादित करने वाला, 'अनुनाद' से समाज को आइना दिखाने वाला क्रांतिकारी एवं निर्भीकता के साथ समाचार चैनल चलाने वाला हुसैनाबाद की माटी का बेटा कवि विनोद सागर किसी परिचय का मोहताज़ नहीं है। दृढ़ मानसिकता का परिचय देते हुए, अनेक बाधाओं व आलोचनाओं का सामना करते हुए ये क्रांतिकारी कवि हैं। इतना ही नहीं, ये प्रकृति–प्रेमी, सरल, उदार, नम्र, सहृदय, स्वच्छंद तथा विनोदी भी हैं। इतने कम समय में स्थानीय लोगों के बीच अपनी पहचान बनाते हुए जिला और राज्यस्तर पर भी विनोद सागर जी की एक अलग छवि व पहचान है। बिना लाग–लपेट के सच्चाई को दृढ़ता से उजागर करने के कारण इस क्रांतिकारी लेखक को समय–समय पर विपत्तियों का सामना भी करना पड़ता है, लेकिन साँच को आँच क्या...? सभी समस्याओं का सामना करके भी लक्ष्य की प्राप्ति करने वाले योद्धा का नाम है– 'विनोद सागर'। मुझे पूर्ण विश्वास है और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी विनोद सागर जी निरंतर अपने प्रयासों से एक स्वछंद व स्वच्छ समाज के निर्माण में सहायक होंगे। न सिर्फ़ व्यक्तिगत रूप से मैं, बल्कि पूरे हुसैनाबाद वासी विनोद सागर जी के सकर्मों का ऋणी हैं। मैं विनोद सागर जी के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु होने की कामना करता हूँ और आने वाली पीढ़ी को इनसे प्रेरणा लेने की नसीहत देता हूँ, क्योंकि समाज को सकारात्मक दिशा दिखाने में विनोद सागर जी की भूमिका अद्वितीय है। सभा को संबोधित करते हुए वरीय कथाकार विपिन बिहारी ने कहा कि विगत 7 वर्षों से साहित्यिक संस्था मौसम अपने सकारात्मक कार्यक्रमों को लेकर काफ़ी सुर्ख़ियों में रहा है जो कि हुसैनाबाद के लिए गौरव की बात है। सम्मान पाकर पूर्व वार्ड पार्षद महोदया माबिया ख़ातून एवं वर्तमान वार्ड पार्षद महोदया सुषमा गुप्ता ने संस्था मौसम का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से लोगों के अंदर सकारात्मक कार्य करने की अभिरुचि जागृत होगी। कार्यक्रम के अंत में मेदिनीनगर के संत मरियम विद्यालय के निदेशक अविनाश देव मासिक पत्रिका 'अरण्य वाणी' के संरक्षक बनाया गया, वहीं समाजसेवी आलोक कुमार सिंह उर्फ़ टुटू सिंह एवं हुसैनाबाद के ग्राम खैरा में स्थित आर. सी. पब्लिक स्कूल के निदेशक रविन्द्र कुमार सिंह उर्फ़ बब्लू सिंह को साहित्यिक संस्था 'मौसम' का संरक्षक बनाया गया। मौक़े पर हुसैनाबाद के मधुशाला रोड में स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संचालक बी. के. नीरज राजयोगी को सद्भावना श्री सम्मान–2021 देने की भी घोषणा की गई। उनको यह सम्मान 'अरण्य वाणी' के अगले अंक के विमोचन समरोह में दिया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता विनोद सागर ने की, वहीं मंच–संचालन संस्था के सचिव मनोज कुमार प्रजापति ने किया, वहीं कार्यक्रम का धन्यवाद–ज्ञापन कवि शैख़ मुज़ाहिद हुसैनाबादी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संतोष ठाकुर, जितेंद्र रावत, नेहाल असगर, अजय प्रसाद गुप्ता, विकास कुमार, उत्तम कुमार, सिब्तैन मिर्ज़ा, पवन कुमार सिंह आदि ने महत्ती भूमिका अदा की।



✍ ***अशोक कुमार***
संवाददाता : अरण्य वाणी, हैदरनगर।

'अरण्य वाणी' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ...!

लोकतंत्र एवं संविधान की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित...

सोच को बदलो, सितारे बदल जायेंगे।
नज़र को बदलो, नज़ारे बदल जायेंगे।
कश्तियाँ बदलने की ज़रूरत नहीं,
दिशाओं को बदलो, किनारे बदल जायेंगे।



निवेदक :– सैयद ज़की हुसैन रिज़वी

(समाजसेवी, हुसैनाबाद)

'अरण्य वाणी' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ...!

लोकतंत्र एवं संविधान की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित...

क़िस्मत में लिखी हर मुश्किल टल ही जाती है।
यदि हो बुलंद हौसले तो मंज़िल मिल ही जाती है।
सिर उठा कर यदि आसमान को देखोगे बार-बार,
तो गगन को छूने की प्रेरणा मिल ही जाती है।



निवेदक

मुमताज ख़ान

(समाजसेवी, हुसैनाबाद)

'अरण्य वाणी' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ...!

हम सब मिलकर जनहित के लिए काम करेंगे।
फिर उसी से रौशन क्षेत्र का नाम करेंगे।।

निवेदक

शेर अली

(बसपा नेता : हुसैनाबाद-हरिहरगंज विधानसभा क्षेत्र)

‘अरण्य वाणी’ के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ...!

चाइनीज़-प्लास्टिक हटाओ।
मिट्टी के सामान अपनाओ।।



















निवेदक

अविनाश देव

सदस्य : माटी कला बोर्ड

(झारखंड सरकार)

'अरण्य वाणी' के 'परीक्ष्यमाण अंक' की ओर से समस्त

कोरोना योद्धाओं को सलाम...

जो लॉकडाउन को सफल बनाने एवं हमारी सुरक्षा के लिए तत्पर रहे हैं।


शशि रंजन
(उपायुक्त, पलामू)


कुंदन कुमार
(अवर सचिव:उच्च तकनीकी शिक्षा, झा.स.)


कमलेश्वर नारायण
(अनुमंडल पदाधिकारी, हुसैनाबाद)


पूज्य प्रकाश
(अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, हुसैनाबाद)


संजीव कुमार
(पुलिस अधीक्षक, पलामू)


जीतेंद्र कुमार
(पूर्व एसडीपीओ, हुसैनाबाद)


मनोज कुमार महतो
(पूर्व एसडीपीओ, रंका)


विजय कुमार
(एसडीपीओ, दुमका)


अजय कुमार
(थाना प्रभारी, हुसैनाबाद)


पवन कुमार
(थाना प्रभारी, पांकी)


रीडर सुहैल ख़ाँ
(डीएसपी कार्यालय, मेदिनीनगर)


रीडर अशोक कुमार
(डीएसपी कार्यालय, हुसैनाबाद)


नसीम ख़ान
(एएसआई : शहरी थाना, मेदिनीनगर)


संजीत कुमार यादव
(आरक्षी : डीएसपी कार्यालय, हुसैनाबाद)


डॉ. एस. के. रवि
(चिकित्सक:अनुमंडलीय अस्पताल, हुसैनाबाद)


रामेश्वर राम 'छठन'
(पूर्व अध्यक्ष : नगर पंचायत, हुसैनाबाद)


सैयद हसनैन ज़ैदी
(कांग्रेसी नेता, हुसैनाबाद)


कन्हाई कुमार
(अधिवक्ता, हुसैनाबाद)


राजेन्द्र पाल
(वार्ड पार्षद : वार्ड नं.–03, हुसैनाबाद)


डॉ. अखिलेश कुमार गुप्ता
(चिकित्सक : भगवान बिरसा नेत्रालय, हुसैनाबाद)


हेसाम आलम
(प्रो. :– झारखंड मेडिकेशी, हुसैनाबाद)


अमरेंद्र कु. अग्रवाल 'पप्पूजी'
(सांसद प्रतिनिधि, हुसैनाबाद)


बीके नीरज राजयोगी
(संचालक : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, हुसैनाबाद)


गौतम पटेल
(युवा समाजसेवी, हुसैनाबाद)


सैयद मुसवी रज़ा
(इस्लामिक स्कॉलर, हुसैनाबाद)


अजीत कुमार अग्रवाल
(समाजसेवी, हुसैनाबाद)


डॉ. एज़ाज आलम
(केंद्रीय सचिव : अल्पसंख्यक मोर्चा, झामुमो)


अखिलेश कुमार
(युवा समाजसेवी, हुसैनाबाद)


अजय कुमार भारती
(बसपा नेता, हुसैनाबाद)


रविरंजन कुमार सिंह
(भावी मुखिया प्रत्याशी : बेनी कलाँ पंचायत, हुसैनाबाद)


राजू कु. मेहता उर्फ़ एसपी मेहता
(युवा समाजसेवी, हुसैनाबाद)


प्रभात कुमार
(नगर प्रबंधक, हजारीबाग)


संजय कुमार
(लिपिकार, हुसैनाबाद)


आफ़ताब आलम
(युवा समाजसेवी, हुसैनाबाद)


रवि प्रकाश
(कवि सह समाजसेवी, हुसैनाबाद)


सूर्यनाथ राम
(जिला उपाध्यक्ष : लोजपा, पलामू)


मुकेश कुमार मेहता
(युवा समाजसेवी, हुसैनाबाद)


आलोक कुमार मेहता
(जेई : मनरेगा, हैदरनगर)


संजय सिंह
(रोज़गार सेवक : पूर्वी पंचायत, हैदरनगर)


स्वाति देवी
(उप मुखिया : पूर्वी पंचायत, हैदरनगर)